BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1- 31 जनवरी, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

खेती-बारी विशेषांक

भाग-4

संजीवनी बूटी ह मोटका अनाज

आबाद रहे हरदी-धान

भोजपुरी संगीत खातिर 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड'

103 वर्षीय लोक गायक जंग बहादुर सिंह के 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित करत सुप्रसिद्ध लोक गायक भरत शर्मा व्यास अउर मुन्ना सिंह व्यास

22 नवम्बर 2023 के भोजपुरी के धाम अमही मिश्र, भोरे, गोपालगंज, बिहार में जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया द्वारा आयोजित साहित्यिक-सांस्कृतिक महोत्सव-6 में 103 वर्षीय **लोक गायक जंग बहादुर सिंह** के भोजपुरी लोकगायिकी के क्षेत्र में अमूल्य योगदान खातिर 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित कइल गइल।

उहाँ के ई सम्मान प्रख्यात लोक गायक मुन्ना सिंह व्यास आ भरत शर्मा व्यास द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान कइल गइल। एह अवसर पर भोजपुरी के लोकप्रिय गायक मदन राय, गोपाल राय, विष्णु ओझा, उदय नारायण सिंह, राकेश श्रीवास्तव, कमलेश हरिपुरी, रामेश्वर गोप आ संजोली पांडेय समेत तीन दर्जन से अधिक कलाकार अउर हजारो के संख्या में श्रोतागण मौजूद रहलें।

1920 में बिहार के सिवान जिला के कौसड़ गाँव में पैदा भइल जंग बहादुर सिंह जंग-ए-आजादी में अपना क्रांतिकारी भोजपुरी गीतन से अंग्रेजन के ललकारत रहलें। भोजपुरी देशभक्ति गीत गवला के चलते अंग्रेज उहाँ के जेल में डाल देले रलऽसन। आसनसोल, झरिया, धनबाद आ पूरा बिहार-यूपी में तीन दशक तक जंग बहादुर सिंह के गायिकी के डंका बाजत रहे। भैरवी गायन में त उहाँ के सामने केहू टिकते ना रहे। जभो जभो भोजपुरी संगीत के एह कोहिनूर के सम्मानित करके कार्यक्रम के ऐतिहासिक बना देलस।

वर्ष :4, अंक : 9-10 | 1-31 जनवरी, 2024

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित। संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा।

खबर.....02

भोजपुरी संगीत खातिर 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड'

एह अंक में

सुनीं सभे

संजीवनी बूटी ह मोटका अनाज 6

आवरण कथा

रविनंदन सिंह / भारत कs किसान आ उनकर परिस्थिति.....8
डॉ. अमरेन्द्र कुमार आर्य / खेती आ खाद्य के भारतीय परंपरा.....11
दिव्येन्दु त्रिपाठी / भारत में खेती के शुरूआत आ प्रसार 17
डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद/भारत:'शिप टू माउथ' से एक प्रमुख खाद्यान्न निर्यातक देश तक.....24
हरेन्द्र कुमार पाण्डेय / भोजपुरी प्रदेश में कृषि उत्पाद-दशा आ दिशा.....30
डॉ० रंजन विकास / सारण प्रमण्डल के खेती-किसानी.....34

मॉडर्न खेती

शशि कांत मिश्र / स्ट्रॉबेरी के करीं खेती, दू महीना में बनीं लखपति !.....40
शशि कांत मिश्र / काला गेंहू के कमाल, तीन महीने में हो जाइब मालामाल !.....42

विविधा

डॉ० फतेहचंद बेचैन / गाय 46
उषा पाण्डेय 'कनक' / सजाव दही.....48
डॉ.पुष्पा सिंह विसेन / किसान के आय बढ़ावे के उपाय.....49
अमित दुबे/किसान के पीड़ा.....50

हलचल

मनोज भावुक के मिलल प्रतिष्ठित 'अंजन' सम्मान.....4
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वां राष्ट्रीय अधिवेशन 36
बीएचयू के 'भारत अध्ययन केंद्र' में व्याख्यान: "लोक कविता का देशरंग".....44
बीएचयू के 'भोजपुरी अध्ययन केंद्र' में व्याख्यान:"भोजपुरी साहित्य का नया स्वर"..45
पश्चिम चंपारण के राजकीय विद्यालय में कार्यक्रम.....51
उत्तर प्रदेश साहित्य सभा के गोष्ठी.....52
उत्तर-सत्य युग में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पुनरावलोकन.....58
रुट केअर फाउंडेशन के सफल आयोजन.....66
प्रवासी एकता मंच, गुरूग्राम के आयोजन 'डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती'.....67
बीएचयू छात्रावास में भइल एकल काव्य-पाठ.....68

राउर पाती...53

डाक्टर प्रभाकर पाठक, डॉ. हरिन्द्र हिमकर, गोपाल जी राय, निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव, प्रेमशीला शुक्ल, बिनय बबुरंग, डॉ. कादम्बिनी सिंह, एस डी ओझा, गायत्री कुमारी, गीता चौबे गूँज, प्रो. विनोद कुमार मिश्र, निर्मल सिंह, गोपाल ठाकुर, दिनेश पांडेय, डॉ नीलम श्रीवास्तव, डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह, रचना झा, इरशाद खान सिकंदर, मीरा श्रीवास्तव

मनोज भावुक के मिलल प्रतिष्ठित 'अंजन' सम्मान

भोजपुरी जंक्शन के संपादक आ कवि मनोज भावुक के भोजपुरी साहित्य के प्रतिष्ठित 'अंजन सम्मान' 2023 से सम्मानित कइल गइल।

भोजपुरी के महाकवि राधा मोहन चौबे 'अंजन' जी के स्मृति में दीहल जाये वाला ई प्रतिष्ठित सम्मान एकरा पहिले सर्वश्री कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक' (2018), डॉ. भालचंद त्रिपाठी (2019), डॉ. अनिल चौबे (2020), डॉ.अशोक द्विवेदी (2021) आ डॉ. कमलेश राय (2022) के दीहल गइल बा।

मनोज के ई सम्मान 22 नवम्बर 2023 के भोजपुरी के धाम अमही मिश्र, भोरे, गोपालगंज, बिहार में जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया द्वारा आयोजित साहित्यिक-सांस्कृतिक महोत्सव-6 में प्रदान कइल गइल।

संपादकीय

आबाद रहे हरदी-धान

धान कइसे रोपाई भा कइसे कटाई आ कइसे बिकाई ... ई खेती-किसानी ह। लल्लन भइया के साली के चुनरी धानी बा भा ऊ धान के बाली जइसन लहराली, ई साहित्य ह। ... हम खेती-बारी आ साहित्य के बीच लेव लगावत बानी। त अब एह लेव में धँसल कवन संपादकीय लिखीं ? कहाँ से शुरू करीं? केकरा से शुरू करीं? लीं, सुर पकड़ा गइल। लल्लन भइया के साली त बड़ले नू बाड़ी आ धानो बा। त बात हरदी-धान से शुरू कइल जाय। लगन चरचराते बा। खरवाँस बीते में कय दिन लागी?

ब्रह्मांड तरंग से चलेला। तरंगे से हृदय हृदय से मिलेला। सुख-दुख तरंगे ह। मिलन-बिछोह तरंगे ह। लगनवा में ई तरंग कुछ बेसिए चलेला। केतना लोग के उम्मीद जागेला कि असों हाड़े हरदी लागी। सरऊ लावा मेरइहें। लावा खातिर धान भुँजाई।

ई भोजपुरिया इलाका ह। इहाँ छेंका से विदाई ले नेह-नाता जोड़े में ना जाने केतना उपज-अनाज, फल-फूल, मर-मसाला आ तर-तरकारी के योगदान होला। कच्ची (भात) आ पक्की (पूड़ी) संबंध के **दर्शावेला**। माने अनाज भा अन्न खाली अन्न नइखे। अन्न से रिश्ता बा, अन्न से रिचुअल्स बा, अन्न से भाई-भवद्दी बा, अन्न से तन बा, अन्न से मन बा, अन्न ब्रह्म ह। अन्न के महिमा समझे के होई। खेती-किसानी समझे के होई। यकीन मानी अन्न ठीक रही त मन ठीक रही आ मन ठीक रही त तन ठीक रही। अन्न, मन आ तन तीनों ठीक रही त सब ठीके रही।

हमरा मालूम बा कि दुलहा भा दुलहिन मोट ना चाहीं बाकिर समय के मांग बा कि अनाज मोटे चाहीं। मोटा अनाज माने जौ, जनेरा (मकई), जोन्हरी (ज्वार), बाजरा, मडुआ (रागी), कोदो, चीना, साँवाँ, कुटकी आदि। एकनी के फायदा एतना बा कि साल 2023 के 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' (International Year of Millets) घोषित कर दिहल गइल। मोटा अनाज देहिये के ना बुद्धियो के मोटापा कम कर देला। देह आ बुद्धि के मोटा भइल ठीक ना ह, बाकिर मोट पइसा के कामना त सभे करेला आ मोट पइसा खातिर त श्रम करही के पड़ी, देहियो से आ बुद्धियो से। किसानियो में आजकल पइसा बा, बाकिर समय के साथे, तकनीकी के साथे कदमताल करे के पड़ी। घबड़ाये के नइखे।

अइसहूँ हमनी के किसान के बेटा हई जा। हमनी के संस्कृति किसान संस्कृति ह। हर साल डूबे के बा, हर साल दहाये के बा, हर साल सूखे के बा। सुखार-दहार हमनी के नियति ह। अब हमनी ले जीवट वाला आ कर्मठ के होई ? सुखला-दहइला-मुरझइला के बादो मन के महुआ फुलाये के उम्मीद कहाँ छोड़ीले जा। हर साल पलानी छवाला। हर साल माँड़ो गड़ाला आ धरती मइया हमनी के फाँड़ में जवन डाल देली ओही से बेटी के हाथ पीयर होला। हमनी के रोवेनी जा ना। रोवे खातिर हमनी के आँख में लोरे कहाँ बा ?

हमार एगो शेर बा-

ना रहित झाँझर मड़इया फूस के,
घर में आइत घाम कइसे पूस के?

ए सरकार, रउरा महल में पूस के घाम ना आई। हमनी के मड़ई आबाद रहो। हमनी के तेवर आबाद रहो। हमनी के खेत आबाद रहो। हमनी के देश आबाद रहो। सबका थरिया में रोटी-दाल आबाद रहो।

गाँव पिज्जा-बर्गर से डेराइल बा। कानफाड़ू संगीत से डेराइल बा। ऐशन-फैशन से डेराइल बा। डेराइल बा कि ओकरा हार्डवेयर में अइसन सॉफ्टवेयर फिट होता, अइसन प्रोग्रामिंग होता कि ऊ, ऊ रहिए ना जाई। गाँव के अस्तित्व पर खतरा माने हमनी के संस्कृति पर खतरा, खेती-किसानी प खतरा, देश प खतरा, जीवन प खतरा। एही खतरा से आगाह करत हमार एगो अउर शेर बा-

कहीं शहर ना बने गाँव अपनो ए भावुक,
अँजोर देख के मड़ई बहुत डेराइल बा।

मड़ई आबाद रहे। भउजी के गाँव के मधुवन आबाद रहे। लल्लन भइया के साली आबाद रहस। आबाद रहे हरदी-धान। आबाद रहे लोक, लोक के हर रंग। आबाद रहे आँगन, आबाद रहे आसमान। आबाद रहे आपन हिंदुस्तान।

मॉडर्न के अपनाई जा लेकिन ट्रेडिशन के साथे। किसिम-किसिम के फूल खिलाई जा, बाकिर अपना जड़ आ जमीन से जुड़ल रह के।

नया साल पर खेती-बारी विशेषांक के चउथा भाग रउरा सभे के सँउपत आत्मिक खुशी होता। आई, समवेत स्वर में गावे के-

अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल।

प्रणाम !
मनोज भावुक

सुनीं सभे

आर. के. सिन्हा

संजीवनी बूटी ह मोटका अनाज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी चाहऽतारें कि भारत मोट अनाज के वैश्विक केंद्र बने आ अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 के "जन आंदोलन" के रूप देहल जाए। बेशक, भारत दुनिया के मोटा अनाज के लाभ बतावे-समझावे में अहम भूमिका निभा रहल बा। अपना देश में एशिया के लगभग 80 प्रतिशत आ विश्व के 20 प्रतिशत मोटा अनाज पैदा होला। चूँकि, ई असिंचित भूमि पर आसानी से हो सकेला एसे यदि मांग बढ़ी त भारत में एकर पैदावार कई गुना बढ़ावल जा सकेला। अभी त गरीब किसान खुद के खाये भर ही मोट अनाज उगावेलें। जब उनकर मोट अनाज बाजार में बिके लागी त ऊ काहे ना आपन उत्पादन बढ़इहें !

मोट अनाज सिर्फ प्रोटीन आ फाइबर हीं ना देला बल्कि, खाये वाला के शरीर में उत्पन्न हो रहल रोगन के निदान भी करेला। यदि रउआ हाल-फिलहाल दिल्ली गइल होखेम त देखले होखेम कि राजधानी दिल्ली में भारत सरकार के बहुत बड़-बड़ दफ्तर निर्माण भवन, शास्त्री भवन, कृषि भवन वगैरह के भवनन से चलेलें। जाहिर बा, जहां पर हजारन मुलाजिम काम करिहें अउर रोज सैकड़न बाहरी लोग के भी आना-जाना लागल रही, उहाँ पर कैंटीन त रहबे करी। रउरा निर्माण भवन के कैंटीन पर ध्यान देब त पता चली कि उहाँ पर अब मोट अनाज से तइयार होखे वाला पकवान भी परोसल जा रहल बा। हालांकि पीछे के सात दशक से मात्र गेहूं अउर मैदा के डिशेज ही मिलत आवत रहे।

एक तरह से ई वर्त्तमान मोदी सरकार के संकल्प शक्ति अउर दृढ़ इच्छा के ठोस संकेत बा कि चालू वर्ष 2023 के चूँकि विश्व स्तर पर अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के रूप में मनावल जा रहल बा त ई साल खान-पान में एगो व्यावहारिक बदलाव ले आवे आ अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष नाम भर के ना रह जाये। एकर प्रस्ताव भारत देहले रहे अउर संयुक्त राष्ट्र महासभा एकर अनुमोदन कइले रहे। भारत के एह प्रस्ताव के संयुक्त राष्ट्र महासभा 5 मार्च 2021 के आपन स्वीकृति दे देले रहे। एकर उद्देश्य विश्व स्तर पर मोट अनाज के उत्पादन आ खपत के प्रति जागरूकता पैदा कइल बा।

दरअसल मोट अनाजन में पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होला। बीटा-कैरोटीन, नाइयासिन, विटामिन-बी 6, फोलिक एसिड, पोटेशियम, मैग्नीशियम, जस्ता आदि से भरपूर एह अनाजन के सुपरफूड भी कहल जाला। ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), मक्का, जौ, कोदो, सामा, सांवा, कंगनी, कुटकी चीना आदि जेके लघु धान्य चाहे श्री धान्य भी कहल जाला मोट अनाज के श्रेणी में आवेला। लघु धान्य चाहे कुटकी, कंगनी अउर चीना जइसन अनाज मिलेट्स यानी मोटा अनाज होला। एह सबके सेवन कइला से हड्डी के मजबूती मिलेला, कैल्शियम के कमी से बचाव होला, ज्यादा फाइबर भइला से पाचन दुरुस्त होला, वजन कंट्रोल होखे लागेला, दूबर-पातर के वजन कुछ बढ़ जाला त ज्यादा वजन वालन के घट जाला। एनीमिया के खतरा कम होला, डायबिटीज आ दिल के रोगी खातिर ई उत्तम मानल जाला। जब एह दूनू रोगन के चपेट में लगातार लोग आ रहल बा तब मोटका अनाज के सेवन संजीवनी बूटी के काम कर सकेला।

मोटा अनाज हमनी के पारम्परिक अन्न ह। एह अन्न के विशेषता ई ह कि ई शरीर में माइक्रोबियल इंबैलेंस, हार्मोनल इंबैलेंस, ग्लूकोज इंबैलेंस, तीनों के कण्ट्रोल करेला। एह में फाइबर प्रचुर मात्रा में होला। फाइबर आ कार्बोहाईड्रेट के एक-दूसरा में गूंथाइल-फेंटाइल जरुरी बा। एकरा से पाचन क्रिया धीमी गति से होला आ ग्लूकोज एकदम से रक्त में ना बढे। केहू शारीरिक रूप से अस्वस्थ बा त ई पाँच गो मोट अनाज-**कोदो, कंगनी, कुटुकी, सांवा** आ **हरा सांवा** खाये के चाहीं। एह मोटा अनाज के जदी रउरा

दू-दू दिन चाहे तीन-तीन दिन करके खाईं त राउर शरीर त स्वस्थ होखबे करी, रउरा पहिले से ज्यादा फिट महसूस करब काहेकि ई अनाज रउरा संतुलन के त ठीक करबे करेलें, रउरा सिस्टम के भी सफाई करेलें।

आजकल त शादी के सीजन चल रहल बा। हर रोज भारी संख्या में बिआह हो रहल बा। रउओ के त बिआह समारोहन में भाग लेवे के निमंत्रण मिलिए रहल होई। अगर बिआह के कार्यक्रम में भी मोट अनाज से तइयार कुछ व्यंजन अतिथि लोग के परोसल जाए त ई एगो शानदार पहल होई। आखिर हमनी के कब तकले उहे खायेम जा जवन खात आ रहल बानी जा आ बीमार पड़त चल जा रहल बानी जा। आज विश्व भर में सारा बेमारियन के जड़ गेहूं बा। हम सलाह देतानी कि पाठक लोग गूगल पर सर्च करके एगो पुस्तक **"वीट बेली"** यानि "गेहूं के तोंद" नामक पुस्तक के डाउनलोड कर लेव जवन पूरा अमेरिका आ यूरोप में तहलका मचवले बा। "वीट बेली" अमरीकी वैज्ञानिकन द्वारा शोध के उपरांत तइयार एगो अइसन पुस्तक बा जेमे ई सिद्ध कइल गइल बा कि गेहूं में पावल जाये वाला "ग्लूटेन" नाम के रसायन डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, ह्रदय रोग, मानसिक बेमारियन के साथ-साथ मोटापा के भी मुख्य वजह बा। गेहूँ छोड़ीं आ वजन घटाईं। अभी हमनी के जवना गेहूं से पकावल भोजन कर रहल बानीं, ओसे हमनी के सेहत बिगड़ रहल बा। देखीं, अब देशवासी लोग के अपना जीभ से ज्यादा अपना सेहत पर ध्यान देवे के होई। ऊ तबे संभव होई जब हमनी के मोटा अनाज के अपना भोजन के हिस्सा बनावे लागेम सन। अब एह लिहाज से देरी करे के समय नइखे रह गइल। देरी से नुकसाने होई। देरी छोड़ीं, आपन स्वास्थ्य सुधारीं !

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी चाहऽतारें कि भारत मोट अनाज के वैश्विक केंद्र बने आ अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 के 'जन आंदोलन' के रूप देहल जाए। बेशक, भारत दुनिया के मोटा अनाज के लाभ बतावे-समझावे में अहम भूमिका निभा रहल बा। अपना देश में एशिया के लगभग 80 प्रतिशत आ विश्व के 20 प्रतिशत मोटा अनाज पैदा होला। चूँकि, ई असिंचित भूमि पर आसानी से हो सकेला एसे यदि मांग बढ़ी त भारत में एकर पैदावार कई गुना बढ़ावल जा सकेला। अभी त गरीब किसान खुद के खाये भर ही मोट अनाज उगावेलें। जब उनकर मोट अनाज बाजार में बिके लागी त ऊ काहे ना आपन उत्पादन बढ़इहें! एक अनुमान के मुताबिक, 100 से अधिक देशन में मोट अनाज के खेती होला।

रउआ के बुजुर्ग लोग बता सकेलें कि मोटा अनाज-ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), जौ, कोदों आदि पहिले खूब खाइल जात रहे। हमनीं गेहूं के आटा के आदि हो चुक ल बानी जा त मिलेट्स अउर गेहूं के आटा मिला के भी खा सकींने। अगर हमनी के गेहूं के साथे कई तरह के अनाज या चना आदि के पिसवा लीं त मल्टिग्रेन आटा बन जाई।

रउआ के बुजुर्ग लोग बता सकेलें कि मोटा अनाज-ज्वार, बाजरा, रागी (मडुआ), जौ, कोदों आदि पहिले खूब खाइल जात रहे। हमनीं गेहूं के आटा के आदि हो चुक ल बानी जा त मिलेट्स अउर गेहूं के आटा मिला के भी खा सकींने। अगर हमनी के गेहूं के साथे कई तरह के अनाज या चना आदि के पिसवा लीं त मल्टिग्रेन आटा बन जाई। जइसे गेहूं में प्रोटीन कम होला लेकिन चना में ज्यादा। मिस्सी रोटी भी अइसहीं तैयार होला। पारंपरिक तौर पर दाल-चावल, दाल-रोटी के जोड़ी भी अइसनके बा जेमे अलग-अलग तरह के एमिनो एसिड होला जवन एक-दूसरे के कमी दूर करेलें। गेहूं के एलर्जी से बचे खातिर अनाज के बदल-बदल के खाये के चाहीं। मल्टीग्रेन आटा तैयार करे के पहिला तरीका ह कि पहिले महीना 10 किलो गेहूं के आटा में दोसर अनाज 10 फीसदी ही मिलायीं। तीन महीना बाद 25 फीसदी मिला लीं। फिर तीन महीना बाद आधा गेहूं आ आधा दोसर आटा कर दीं।

जइसे गेहूं में प्रोटीन कम होला लेकिन चना में ज्यादा। मिस्सी रोटी भी अइसहीं तैयार होला। पारंपरिक तौर पर दाल-चावल, दाल-रोटी के जोड़ी भी अइसनके बा जेमे अलग-अलग तरह के एमिनो एसिड होला जवन एक-दूसरे के कमी दूर करेलें। गेहूं के एलर्जी से बचे खातिर अनाज के बदल-बदल के खाये के चाहीं। मल्टीग्रेन आटा तैयार करे के पहिला तरीका ह कि पहिले महीना 10 किलो गेहूं के आटा में दोसर अनाज 10 फीसदी ही मिलायीं। तीन महीना बाद 25 फीसदी मिला लीं। फिर तीन महीना बाद आधा गेहूं आ आधा दोसर आटा कर दीं। ओइसे बाजार में मिले वाला पैकेट के आटा में सिर्फ 10 फीसदी ही मल्टिग्रेन होला। आटा 15 दिन से ज्यादा पुराना होते ओकर पौष्टिक क्षमता कम होत जाला।

अभी जाड़ के मौसम चल रहल बा। जाड़ में मोट अनाज खाइल बेहद मुफीद रहेला। ठंड के दिन में शरीर के गर्म राखे खातिर भोजन के अहम भूमिका होला। मोट अनाज खइला से जाड़ से बचाव होला। एही से मोट अनाज अवश्य खाये के चाहीं। जइसे कि हम जानतानी मोट अनाज में जौ, बाजरा, मक्का आदि शामिल होला। एह अनाजन के तासीर गर्म होला। ई शरीर में पहुंच के गर्माहट देलें। सर्दी में मोट अनाज खाये के सबसे बड वजह इहे बा। एमे कई तरह के पोषक तत्व होलें जे शरीर के फायदा पहुंचावेलें। उदाहरण के रूप में भारी मात्रा में फायबर। ई पेट खातिर सबसे बेहतर होला। मोट अनाज से रउआ दलिया, रोटी अउर डोसा बना सकेनी। बाजरा के रोटी आ भात (चावल) चाहे खिचड़ी भी खानपान में शामिल कइल जा सकेला।

ई जानल भी दिलचस्प होई कि मोटका अनाज के खेती में कम मेहनत लागेला अउर पानी के भी कम ही जरूरत होला। ई अइसन अन्न ह जवन बिना सिंचाई आ बिना खाद के पैदा कइल जा सकेला। भारत के कुल कृषि भूमि में मात्र 25-30 फीसद ही सिंचित या अर्ध सिंचित बा। एह से लगभग 70-80 फीसद कृषि भूमि अइसहूँ धान (चावल) चाहे गेहूं नइखे उगा सकत। चावल (धान) अउर गेहूं के उगावे खातिर महीना में एक बार पूरा खेत के पानी से भर के फ्लड इरीगेशन करे के पड़ेला। एतना पानी अब बचल ही ना कि पीये के पानी के बोरिंग क के पम्प से निकाल के खेतन के भरल जा सके। धान अउर गेहूं में भयंकर ढंग से रासायनिक उर्वरक अउर कीटनाशकन के प्रयोग करे के परेला, जेसे इंसान के स्वास्थ्य पर बुरा असर त पड़ते बा, जमीनो बंजर होत जा रहल बा।

एक बात समझे के होई कि जब मोटका अनाज के मांग बढ़ी त बाजार में एकर दामो बढ़ी, तब किसानन के आय भी बढ़ी। कृषि विशेषज्ञ लोग मानत बा कि पूरा विश्व के मोटा अनाज के बड़ा उत्पादक भारत बा, एह से भारत के पास ई अनुपम अवसर बा अपना मोटा अनाज के निर्यात तेजी से बढावे के। ओह स्थिति में भारत के विदेशी मुद्रा के भंडार भरे लागी आ गरीब किसानन के पेट भी।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।)

आवरण कथा

रविनंदन सिंह

भारत कऽ किसान आ उनकर परिस्थिति

अंगरेजन के पहिले जमीन के मालिकाना हक किसान के पास ना रहे। राजा भी जमीन के मालिक ना रहन। गांव समुदाय ही जमीन के असली मालिक रहे, उहे लगान खातिर जिम्मेदार रहे। जब अंग्रेजन क राज आइल त ऊ लोग पहिला बार गांव क लगान व्यवस्था में बदलाव करे शुरू कइलन। अब जमीन निजी मलकियत हो गइल। जमीन क मालिक किसान हो गइलन। अब जमीन भी खरीदे बेचे क चीज हो गइल। पहिले लगान उपज क एक हिस्सा लागत रहे, अब ऊ लगान जमीन क आधार पर लागे लागल। ई बहुत बड़ आघात रहे। अब फसल अच्छी होखे चाहे खराब होखे, लगान जमीन के आधार पर दिहल मजबूरी हो गइल। किसान के हर हाल में राजस्व चुकावल अब अनिवार्य हो गइल, ऊ चाहे जमीन रेहन पर रखके चुकावे चाहे बेचके।

अंगरेजन के अइला से पहिले भारत क अर्थव्यवस्था आदिम हल अउर बैल वाली रहे। पूरा देश साधारण औजार अउर दस्तकारी पर निरभर रहे। तब क हमार गांव अपने आप में आत्मनिर्भर रहल। गांव के उपयोग में आवे वाली हर चीज गांवे में बनत रहे अउर वस्तु विनिमय से ओकर आदान प्रदान होत रहे। खाली नमक अइसन चीज रहे जवन बाहर से आवत रहे। तब ई आत्मनिर्भर गांव आदिम समय से ही भारत के अर्थव्यवस्था क मूल इकाई बनल रहे। एगो अंगरेज अधिकारी चार्ल्स मेटकाफ लिखले बानऽ कि विदेशी आक्रमण होत रहल, राजवंश बदलत रहल, आपस क लड़ाई के बाद राजा लोगन में भूमि क बंटवारा होत रहल, लेकिन गांव समाज पहिले के जइसन ही बनल रहल।

अंगरेजन के अइला क पहिले गांव के जमीन क मालिक गांव क समाज होत रहे। जमीन न व्यक्ति क संपत्ति मानल जात रहे न राजा क, ऊ पूरा गांव समाज क संपत्ति मानल जात रहे। देशी राजा लोग खाली लगान क एगो हिस्सा भर लेत रहन। जमींदार या मध्यस्थ लोग जनता से लगान वसूलत रहे अउर ओकर एक छोट हिस्सा अपना पास रखके बड़का वाला हिस्सा राजा के खजाना में जमा करा देत रहे। जे मध्यस्थ लोग रहे, उनकर खेती क विकास से न कवनो लेबे के रहे न कवनो देबे के।

तब गांव क लोगन क कुल जरूरत उनकर खेती से पूरा हो जात रहल। एतने काफी रहे कि सबके मोटा महीन खाए-पिए के मिल जाय। सब लोग मिल-जुल के प्रकृति क करीब जीवन बितावत रहे आ बात बात पर नाचत-गावत, उत्सव मनावत खुशी खुशी दिन बितावत रहे। केहू क दुख सुख में सब केहू मिलजुल के समस्या क हल खोजत रहे। तब गांव में बाजार क प्रभाव ना रहे। गांव क चौपाल रोज गुलजार रहत रहे। हर चीज क उत्पादन आपन उपभोग खातिर होत रहे। जवन चीज क उत्पादन जादा हो जात रहे ओके लोग हफ्ता में लगे वाला हाट में भेज देत रहे। उहां समान क बदले समान मिल जात रहे। तब कतहूं आवे जाए क सबसे

बड़ साधन बैलगाड़ी रहे। जेकरे पास बैलगाड़ी रहे ऊ रईस मानल जात रहे। आदमी तबे गांव क बाहर जात रहे जब कवनों शादी-बियाह पड़े आ तीरथ पर जाएके होत रहे। एकरा अलावा गांव क कवनो वास्ता बाहर के दुनिया से ना रहे। कुल मिलाके गांव एगो द्वीप जइसन रहे। हर गांव एगो अलग संसार रहे। अपना चौहद्दी में कैद ऊ गांव कई तरह के अंधविश्वास आ कर्मकांड में धंसल रहे अउर धीरे धीरे आगे सरकत रहे।

अंगरेजन के पहिले जमीन के मालिकाना हक किसान के पास ना रहे। राजा भी जमीन के मालिक ना रहन। गांव समुदाय ही जमीन के असली मालिक रहे, उहे लगान खातिर जिम्मेदार रहे। जब अंग्रेजन क राज आइल त ऊ लोग

तब क हमार गांव अपने आपमें आत्मनिर्भर रहल। गांव के उपयोग में आवे वाली हर चीज गांवे में बनत रहे अउर वस्तु विनिमय से ओकर आदान प्रदान होत रहे। खाली नमक अइसन चीज रहे जवन बाहर से आवत रहे। तब ई आत्मनिर्भर गांव आदिम समय से ही भारत के अर्थव्यवस्था क मूल इकाई बनल रहे।

होखे चाहे खराब होखे, लगान जमीन के आधार

हो गइल। ओकर परिणाम ई भइल कि बाजार गांव के पास आ गइल। अब गांव क दर्जी, नाई, कुम्हार, धोबी जइसन लोगन के पेशा भी बाजार क जद में आ गइल आ ऊ लोग भी नकद कमाए खातिर बाजार में आ गइलन।

अंगरेज के नया लगान व्यवस्था के अच्छा अउर बुरा दूनो असर पड़ल। अच्छा प्रभाव ई पड़ल कि मशीन के प्रयोग बढ़ गइल। ओकरा से पैदावार बढ़ गइल। पैदावार बढ़ला से लोगन के जीवन शैली में बदलाव आइल। शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई, पानी, बिजली आ विकास क तरफ ध्यान जाए लागल। तकनीक में विकास से गांव में गति आवे लागल आ आवागमन बढ़ गइल। अब गांव क जड़ता समाप्त होखे लागल।

पहिला बार गांव क लगान व्यवस्था में बदलाव करे शुरू कइलन। अब जमीन निजी मलकियत हो गइल। जमीन क मालिक किसान हो गइलन। अब जमीन भी खरीदे बेचे क चीज हो गइल। पहिले लगान उपज क एक हिस्सा लागत रहे, अब ऊ लगान जमीन क अधार पर लगे लागल। ई बहुत बड़ आघात रहे। अब फसल अच्छी

पर दिहल मजबूरी हो गइल। किसान के हर हाल में राजस्व चुकावल अब अनिवार्य हो गइल, ऊ चाहे जमीन रेहन पर रखके चुकावे चाहे बेचके। अब उत्पादन बाजार में बेचे खातिर होखे लागल ताकि लगान जमा कइल जा सके। एकरे खातिर ऊ किसान अब खास किसिम क फसल उगावे पर जोर देवे लागल। कुल बात ई कि अंग्रेजन के अइला के बाद खेती-किसानी क वाणिज्यीकरण

लेकिन एकर मतलब ई नइखे कि किसान लोगन के हालत में सुधार हो गइल। अब उनकर स्थिति अउर खराब हो गइल। अब किसान लगान के भारी बोझ से दबे लगल। क्रमशः उनकर ऋण बढ़त चल गइल। जमीन अब खरीद बिक्री के चीज हो गइला क परिणाम ई भइल कि जोत के विभाजन होखे लागल आ सम्मिलित परिवार टूटे लागल। जमीन क बंटवारा क प्रवृत्ति बढ़त चल

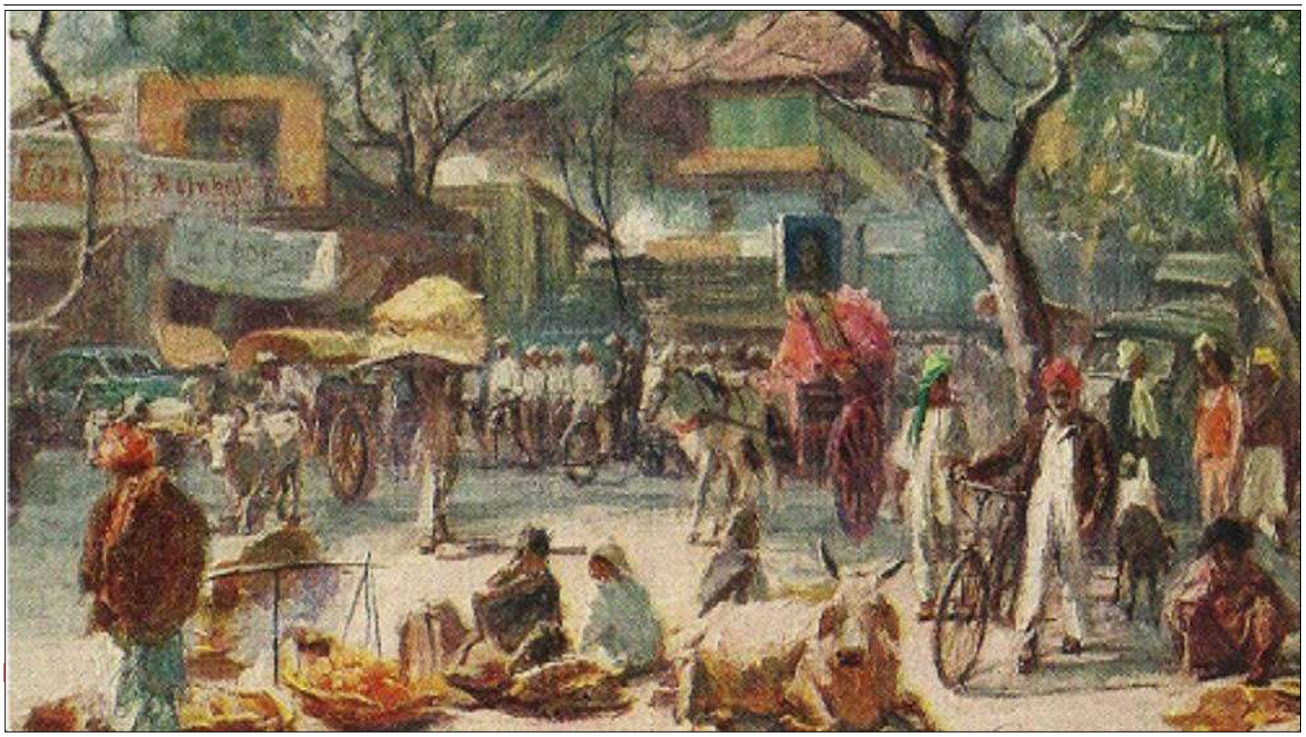

गइल। खेती क बाजारीकरण होखला से किसान मंडी पर अउर मध्यस्थ व्यापारियन पर निर्भर रहे लागल। व्यापारी अउर महाजन शिकारी बन गइलन अउर किसान उनकर असान शिकार बन गइल। भारतीय कृषि मानसून क जुआ पहिले से रहे, अब संकट अउर बढ़ गइल। ऋण के जाल में किसान क्रमशः फंसत गइलन, ओह कारण से अब बेदखली क घटना बहुत बढ़ गइल।

ऋणग्रस्तता आ बेदखली से किसान धीरे-धीरे कृषि दास बनके रहे खातिर मजबूर हो गइलन। उनपर साहूकार क पकड़ मजबूत होत गइल। एही कारण से छोट किसान खेतिहर मजदूर बनत चल गइलन। खेती में दास प्रथा बढ़त चल गइल। बिहार आ उड़ीसा में जवन कामिऔटी प्रथा रहे, ऊ एही कारण से पैदा भइल रहे। कामिया लोग ऊ मजदूर रहे जे ऋण चुका ना पउला से दास बन गइला खातिर मजबूर हो गइल। अब ऊ लोग जइसे ऋण लेले रहे ओकरा खेत में मूल धन क ब्याज के बदला में खेती करत रहे। ओके काम क बदला में कुछ ना मिले। मूल धन त ऊ चुकावे के सोच भी ना सकत रहे। ओकर मरला के बाद उहे काम ओकर संतान करत रहे। आज भी किसान क जवन भी समस्या बाटे ओकर बीज अंगरेज ही डाल के गइल हउवन।

ब्रिटिश काल में सरकार अउर किसान क बीच में कई मध्यस्थ रहत रहें। उनके जमींदार कहल जात रहे। देशी रियासतन में उनके जागीरदार कहल जात रहे। आजादी मिलला के बाद भारत सरकार कानून बनाके खेती-किसानी के समवर्ती सूची में रख दिहलस। एकर परिणाम भइल कि राज्य सरकार भी आपन अलग से कानून बना सकत बा। मध्यस्थ लोगन के कानून बनाके खतम कर दिहल गइल। लेकिन आजादी क 75 साल बितला क बाद भी कई इलाकन में खेतिहर मजदूरन क समस्या आजो बरकरार बा।

आजादी मिलला के बाद सब राज्य सरकार आपन आपन राज्य में भूमि सुधार क कई कार्यक्रम लागू करे शुरू कर दिहलन। भूमि सुधार कार्यक्रम क उद्देश्य ई रहे कि भूमि क उचित बंटवारा हो सके। बाद में विनोबा भावे एकरा खातिर भूदान आंदोलन भी शुरू कइलन। ऊ कहत रहलन कि भूमि त भगवान क देन ह। एपर सबकर समान अधिकार हउवे। एहीसे एकर जन जन में समान बंटवारा होखे के चाही। आजादी के बाद राज्यन क सरकार जवन भूमि कानून बनवलें ओकर मकसद ई रहे-

1. भूमि क फिर से बंटवारा हो जेसे कि समाजवादी व्यवस्था लागू हो सके आ गैर बराबरी खतम हो सके।
2. जमींदारी प्रथा खतम कइल जा सके।
3. भूमि के हदबंदी कइल जा सके।

कुल कानून बनल लेकिन ओकर मकसद पूरा ना हो सकल। भूमि सुधार के जवन कानून बनल, ओके पूरा लागू ना कइल जा सकल। ओकर परिणाम ई भइल कि भूमि के असमानता बढ़त चल गइल। केहू के पास घरो बनावे खातिर जमीन नइखे और केहू के पास पचासो एकड़ से जादा जमीन बा।

कुल के बावजूद आज किसान क हालत ठीक नइखे। भूदान आंदोलन भइल, हरित क्रांति भइल, पांच वर्षीय योजना भी लागू भइल, गरीबी हटाओ क कार्यक्रम आइल, अंत्योदय योजना भी लागू भइल लेकिन किसान क मूल समस्या वइसे क वइसे ही बा। आज भी भारत क किसान समस्या क ठोस उपाय क आशा में जीवन जी रहल बानS।

परिचय-भाषा-साहित्य खातिर अनेक प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित प्रयागराज के डॉ. रविनंदन सिंह 'सरस्वती' पत्रिका (इंडियन प्रेस, प्रयागराज) के सम्पादक, 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका (हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज) के पूर्व संपादक अउर हिंदी-भोजपुरी के दर्जनों पुस्तकन के प्रणेता हईं।

आवरण कथा

डॉ. अमरेन्द्र कुमार आर्य

खेती आ खाद्य के भारतीय परंपरा

सावन-भादो के महीना में दरियाव जल से भर जाला। एह समय जलीय जन्तु के गर्भ धारण करे के होला। कुआर-कातिक महीना तक प्रजनन भी हो जाला। सभे जानेला कि गर्भ के समय गर्भवती के प्रोटीन के आवश्यकता जादा होला। एकरा खातिर भारतीय समाज अपना परंपरा के तहत खेतिहर समाज के समझा के एगो व्यवस्था बनवलक। एह घरी मकई के होरहा होला। हमनी के खेतिहर समाज अपना खेत से कम से कम पाँच गो मकई के बाल तुड़ी के गंगाजी के चढ़ा देवेला। अब देखीं कि एह व्यवस्था से प्रोटीन से भरल होरहा, जलीय जन्तु जइसे कि सोस आ घड़ियार आ मछरी आदि के भोजन में शामिल हो जाला। अइसन व्यवस्था खाली हमनिये ओरी नइखे, पूरा देश भर में कवनों ना कवनों रूप में मौजूद बा। नदी आ नाला में पानी भर गइला के बाद धान, चाउर, फरुही, गेहूम आ चाहे दोसर अनाज डाले के परंपरा बा आ अबहियों सुचारू रूप से संचालित बा। साँच मानी त अइसन परंपरा खेती के संस्कृति के उच्चतम परिदृश्य प्रस्तुत करेला।

कवनो क्षेत्र के परंपरा के जाने आ समझे के होखे त ऊँहा के लोकजीवन के दर्शन कर लेवे के चाहीं। एह से की परंपरा राष्ट्र के उ निधि ह जवना से ओकर बौद्धिकता के परिचय होला। एकरा के लोकजीवन के प्रमुख आधार कहल गइल बा। साहित्यिक रूप में कहल जाव त परंपरा हिरदा के भीतरी पक्ष के बाद, बाहरी पक्ष के भी देखावे ला। एह में मानुष के मानवीय व्यवहार के साथे-साथे ओकर रहन-सहन आदि के अंतरंगी भूमिका भी प्रगट होला। इहाँ के भौगोलिक स्थिति, जंगल, जमीन आ ओहसे जुड़ल उत्पाद खेती आ किसानी परंपरा के मूलाधार बा। इहाँ के परंपरा में विविधता के भी एकर सांस्कृतिक संदर्भ देखल जा सकत बा। सभे जानत बा की भारत गांवन के देस बा, इहाँ के लोक-जीवन खेती पर निरभर बा। नीमन खेती उपज ही ओकर सौभाग्य बा आ फसल खराब भइल मतलब ओकर मरण के समान बा। एही से उ हरमेसा नीमन फसल के कामना करत रहेला। एकरा बारे में लोक के जवन अनुभव बा, उहे ओकर ज्ञान सम्पदा बा।

खेती-किसानी से जुड़ल वैज्ञानिक लोग सरकार के समझवलक कि किसान अपना खाली समय में अगर दोसर फसल बोई त ओह से किसानन के अधिक से अधिक लाभ खेती से हो सकत बा। सरकार वैज्ञानिक लोग के किसानन से बात कइला के बाद योजना बनाके प्रस्तुत करे के अनुमति देलक। सरकार के खेती-किसानी विभाग किसानन के साथ चौपाल लगावे के व्यवस्था कइलक। एक दिन तय कऽके चौपाल में गांव के किसान आ खेती वैज्ञानिक आपस में बात कइलें। खेती वैज्ञानिक लोग किसान लोग के समझवलक कि अगर ऊ लोग खाली समय के बेहतर उपयोग करी त उनकर खेती उपज दोगुनी हो जाई। एहसे उनकर जीवन खुशहाल हो जाई। किसान लोग वैज्ञानिक लोग के बात ध्यान से सुनलक। जब उनका लोगन के बोले के बात आइल त किसान लोग कहले की रउआ कइसे समझ लेनी हऽ की हमनी के धान के फसल हो गइला के बाद फालतू बइठल रही ले सऽ? सही बात त इ बा की फसल घरे अइला के बाद हमनी के अपना घर के सब छुटल काम करीले सऽ। खेती में लागल रहला के बाद जवन काम पेंडिंग रहऽला ओकरा के करी लाऽ सऽ। घर के मरम्मत व देख रेख, घर के लिपाई-पुताई करीले सऽ। हमनी के जवन तीज त्यौहार होला, ओकरा के खुशी-खुशी मनाई ला सऽ। एही दौरान हमनी के अपना बहिन-बेटी आ रिश्तेदार के घरे जाके, साथ मिली आ बैठी ला सऽ। जवन हमनी के रिश्ता-नाता बा ओकरा के जिआवे के काम करीले सऽ। केहू के गमी में खेती के समय ना जा सकनी त उनका पास जाके अपनापन देखाइले सऽ। ओही घरी रिश्तेदार लोग हमरा घरे आवे ला आ हमनी के भी ओह लोग के लगे जाइले सऽ। एही बीच में कई गो परब, उत्सव आ मेला होला, ओहू में रहीं ले सऽ।

किसान लोग एगो आउर बात ओह वैज्ञानिक लोग से कहलक की इ धरती माई हमनी के अन्न-धन से जीवन देली। का हमनी के हर समय धरती माई के आँचरा के रउदत रही सऽ, धरती माई के अगिला फसल तक आरामों ना करे दी सऽ? पइसा बड़ा बा की खुशी? किसान लोग के सब बात ध्यान देवे लाइक बा। ई सब बात भारतीय संस्कृति में व्याप्त "तेन त्यक्तेन भुंजीथा" के दृष्टिकोण के व्यक्त कर रहल बा। परंपरा वस भारत में खेती कार्य में सात्विकता बरतल जाला। आमतउर पर खेत में खेतरपाल (खेत के देवता) के पूजा हल जोते से पहले कइल जाला। हमरा गाँव सिंगही, छपरा में एकरा के 'मूठ लागल' कहल जाला। फसल कटाई पर भी खेत के देवता के आभार व्यक्त कइल जाला। परम्परा ईहो बा कि फसल कटला के बाद पौधा के चार अंगूरी ऊपर छोड़ के बीच के भाग पशु के चारा खातिर काटल जाला। निचिला हिस्सा जमीन के होला। फसल पकला के बाद नया फसल के पहिला भाग गाँव के देवता के चढ़ावल जाला। पहिलकी रोटी गाय के, ओकरा बाद बूढ़-पुरनिया के, आखिरी रोटी कुत्ता के दिहल जाला। अइसही जब हमनी ओर खेत में फसल पाक जाला आ कटनी शुरू होला त घर के धोबिन, हजाम, चमईन आ पुरोहित आपन-आपन हिस्सा आके खेते में से ले जाले। ऊ लोग भी खेती में आस लगइले रहेला। एगो खेती के सहारे समाज के सब लोग एक साथ जुडल बा। सामाजिक सद्भावना आ एक दूसरा के ऊपर निर्भरता के उदाहरण एकरा से बढ़ के कहाँ मिली? एकरा से बढ़ के सामाजिक समरसता का कहाई? एह तरीका से देखीं त हमनी के खेती में धरम, करम आ जीवन के मरम समाहित बा। बाजारीकरण आ पलायन के कारण इ कुल परम्परा अब संग्रहणीय हो रहल बा। अब खाली सुने में अधिका आवेला आ देखे में कम। अब अइसन परंपरा के अध्ययन कर के संरक्षित करे के आवश्यकता बा। श्रीमद्भगवद्गीता के चउथा अध्याय में एगो श्लोक बा-

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

मलतब- समाज के सबसे नीमन आदमी जवन-जवन आचरण करेला, सम्पर्क में आने वाला लोग भी अइसने आचरण करेला। ऊ जवन कुछ प्रमाण प्रस्तुत कर देला, लोग ओकरे के अनुकरण करे लागे ला। इहे बात भारतीय सांस्कृतिक लोक परंपरा में रहल बा। संस्कृति स्वस्थ समाज के ही संरक्षित करेला। स्वस्थ मानव के शरीर के पोषण खातिर संतुलित आहार आ पोषक तत्वन के आवश्यकता होला। एकरा खातिर 7 गो तत्व प्रमुख बतावल गइल बा- शर्करा (कार्बोहाइड्रेट), शक्तिवर्धक तत्व (प्रोटीन), वसा (चिकनाई), लवण (नीमक), खनिज, आ पौष्टिक तत्व। देह में एह तत्वन के पूर्ति अनाज से, कंदमूल से, हरिअर साग-सब्जी से, दाल से, फल से, तेल के पदार्थ से, खनिज आ दूध से बनल आहार से होला। एकर विवरण प्राचीन खाद्यग्रंथ-पाकदर्पण, भोजन कुतूहल, नल पाक दर्पण, आयुर्वेद आ चरक संहिता में भी मिलेला।

भारत, दुनिया में मोट अनाजन के सबसे बड़का उत्पादक बा। मार्च 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत की ओर से पेश एगो प्रस्ताव के सभके सहमति से मान लियाइल, जवना से वर्ष 2023 के 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' (International Year of Millets) घोषित कइल गइल बा। भारत सरकार के एह प्रस्ताव के 70 से अधिका देशन के समर्थन मिलल बा। आँकड़ा बतावत बा कि भारत दुनिया में मोट अनाज के 5वां सबसे बड़ा निर्यातक हऽ। साल 2021-22 में 64.28 मिलियन डालर मूल्य के मोटा अनाज के निर्यात कइल गइल। पूरे एशिया में मोट अनाज के उत्पादन में भारत के 80 फीसदी हिस्सा बा। साल 2022 में मोट अनाज के पैदावार के बात करीं त भारत 19 प्रतिशत वैश्विक हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़का उत्पादक रहे।

मोट अनाज शक्ति के स्रोत होला आ ई जगजाहिर बा। एकरा के वर्तमान समय में सरकार भी नया रूप में प्रोत्साहित कर रहल बा। हमनी के जानत बानी सऽ की भारत, दुनिया में मोट अनाजन के सबसे बड़का उत्पादक बा। मार्च 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत की ओर से पेश एगो प्रस्ताव के सभके सहमति से मान लियाइल, जवना से वर्ष 2023 के 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' (International Year of Millets) घोषित कइल गइल बा। भारत सरकार के एह प्रस्ताव के 70 से अधिका देशन के समर्थन मिलल बा। आँकड़ा बतावत बा कि भारत दुनिया में मोट अनाज के 5वां सबसे बड़ा निर्यातक हऽ। साल 2021-22 में 64.28 मिलियन डालर मूल्य के मोटा अनाज के निर्यात कइल गइल। पूरे एशिया में मोट अनाज के उत्पादन में भारत के 80 फीसदी हिस्सा बा। साल 2022 में मोट अनाज के पैदावार के बात करीं त भारत 19 प्रतिशत वैश्विक हिस्सेदारी के साथ सबसे बड़का उत्पादक रहे। ओह साल भारत कुल 17.60 मिलियन मेट्रिक टन के उत्पादन कइलक, जवना में 4.40 मिलियन मीट्रिक टन ज्वार आ बाकी 13.20 मिलियन टन दोसर मोट अनाज रहे। सउँसे विश्व में कुल मोट अनाज के उत्पादन के 66 फीसदी ज्वार आ बाकी 34 फीसदी में दोसर मोट अनाज आवेला। मोट अनाज के खेती ज्यादातर एशियाई आ अफ्रीकी देशन में होला जवना में भारत, चीन, नाइजीरिया, माली देश में सबसे अधिक उत्पादन होत बा। जबकि मोट अनाज के खपत साल 2022 में दुनिया में 90.43 मिलियन मीट्रिक टन रहे। जवना में सबसे अधिक खपत 17.75 मिलियन मीट्रिक टन भारत आ ओकरा बाद 13.70 मिलियन मेट्रिक टन चीन में भइल।

वर्तमान सरकार पोषण सुरक्षा हासिल करे खातिर मिशन स्तर पर रागी आ ज्वार जइसन मोट अनाजन के खेती के प्रोत्साहित कर रहल बा। बाजरा, जवना के पोषक अनाज कहल जाला, के बाजार समर्थन मूल्य पर खरीदल जा रहल बा आ एकरा के मध्यान्ह भोजन योजना आ सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के तहत शामिल कइल गइल बा। पोषण सुरक्षा प्राप्त करे खातिर बाजरा के खेती के बढ़ावा देने के प्रयास कइल जा रहल बा काहे की 2016-17 के फसल वर्ष में खेती के रकबा घट के 1 करोड़ 47.2 लाख हेक्टेयर रह गइल बा जवन वर्ष 1965- 66 में 3 करोड़ 69 लाख हेक्टेयर रहे। दाना के आकार के आधार पर मोट अनाज के दु गो भाग में बाँटल गइल बा। पहिला मोटा अनाज जवना में ज्वार और बाजरा आवेला। दूसरा, लघु अनाज जवना में बहुत छोट दाना वाली मोट अनाज जइसे रागी, कंगनी, कोदो, चीना, सांवा और कुटकी आदि आवेला। सल्हार, कांग, ज्वार, मक्का, मडिया, कुटकी, सांवा, कोदो आदि में अगर प्रोटीन, वसा, खनिज तत्त्व, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ऊर्जा कैलोरी, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, कैरोटीन, फोलिक ऐसिड, जिंक आ एमिनो एसिड के तुलना गेहूँ, चावल जइसन अनाजन के साथ कइल

जाये तऽ कवनों प्रकार से एह के कम नइखे आँकल जा सकत।

भारत में खाद्य के परंपरा सामाजिक संस्कार, रीति-रिवाज आ देसीपन के साथ जुड़ल बा। ऋतु के अनुसार आहार लेहल भी एगो परंपरा हऽ। सर्दी में तिल पापड़ी, उडद के दाल के लड्डू, गुड़, चना, गर्मी में सादा खाना, सतुई, सावन में नियंत्रित दुग्ध आहार, हरिअर सब्जी के उपयोग, बैसाख में सतुआ, भादो में घीव के अधिक उपयोग, कार्तिक पूर्णवासी के खीर, मकर संक्रांति या सकरात पर तिल के खिचड़ी, लाई-चिउरा, कसार, तिल पापड़ी, मूंगफली, तेल से बनल पदार्थ आहार में शामिल करे के परम्परा बा। बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आ उत्तराखंड के लोग के आहार में दिन में दाल-भात पक्का होला, मारवाड़ (राजस्थान) में चावल खास अवसर पर ही बनावल जाला। ऊँहा सोगरा (बाजरी के रोटी), कैर-कुम्मटी, सांगरी, कढ़ी सामान्य भोजन हऽ, बंगाल में माछ-भात प्रिय भोजन हऽ। दक्षिण भारत में इडली, डोसा, सांभर, उत्तपम, चावल, रसम केरा के पत्तई पर बड़ा स्वाद से खायेल जाला। गुजराती लोग दाल या सब्जी में मीठा सामान्यतः डालेला। इ सब खेती से उपजे वाला आनाज बा।

भारत में खाद्य के परंपरा सामाजिक संस्कार, रीति-रिवाज आ देसीपन के साथ जुड़ल बा। ऋतु के अनुसार आहार लेहल भी एगो परंपरा हऽ। सर्दी में तिल पापड़ी, उडद के दाल के लड्डू, गुड़, चना, गर्मी में सादा खाना, सतुई, सावन में नियंत्रित दुग्ध आहार, हरिअर सब्जी के उपयोग, बैसाख में सतुआ, भादो में घीव के अधिक उपयोग, कार्तिक पूर्णवासी के खीर, मकर संक्रांति या सकरात पर तिल के खिचड़ी, लाई-चिउरा, कसार, तिल पापड़ी, मूंगफली, तेल से बनल पदार्थ आहार में शामिल करे के परम्परा बा। बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आ उत्तराखंड के लोग के आहार में दिन में दाल-भात पक्का होला, मारवाड़ (राजस्थान) में चावल खास अवसर पर ही बनावल जाला। ऊँहा सोगरा (बाजरी के रोटी), कैर-कुम्मटी, सांगरी, कढ़ी सामान्य भोजन हऽ, बंगाल में माछ-भात प्रिय भोजन हऽ। दक्षिण भारत में इडली, डोसा, सांभर, उत्तपम, चावल, रसम केरा के पत्तई पर बड़ा स्वाद से खाइल जाला। गुजराती लोग दाल या सब्जी में मीठा सामान्यतः डालेला। इ सब खेती से उपजे वाला अनाज बा।

हमनी के समाज में बच्चा/लइका/लइकी जब अपना मतारी के गरभ में होला तबही से गर्भवती के आहार पर बहुत ध्यान दिहल जाला। बिहार में बतीसा, मसाला, हरियाणा आ राजस्थान में नव प्रसूता के दाल, सौंठ, गोंद आ घीव के लड्डू खिआवल जाला। अइसही नामकरण संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह संस्कार के अवसर पर तरह-तरह के व्यंजन सामुहिक भोज खातिर बनावल जाला। मृत्यु भोज, वार्षिक श्राद्ध आ पितृपक्ष में श्राद्ध भोज के भी अलग अलग परम्परा बा।

कहल जाला की द्वापर में इंद्र के अतिवृष्टी के रोके खातिर भगवान श्रीकृष्ण गोबर्धन पहाड़ के अपना अंगुरी से उठा के आदमी, पशु आ पक्षी सहित ब्रज के धरती पर मानव के रक्षा कइले रही, अतिवृष्टि/बरिखा रोकला के बाद ब्रज के लोग भगवान श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम आ श्रद्धा व्यक्त करे खातिर अन्नकूट के आयोजन कइले रहे। अन्नकूट शब्द के मतलब होला "अनाज का ढेर"। एही परंपरा में दीपावली के अगिला दिन गोबर्धन पूजा के दिन गाय के पकवान खिआवल जाला, गोधन कुटाला, बहिन रेंगनी के काँट से बिधी करेली आ भगवान श्री कृष्ण के 56 प्रकार के भोग लगावल जाला। सामान्यतः एहमें निम्नलिखित भोग शामिल होला -1.भात, 2. दाल, 3. चटनी, 4. कढ़ी, 5. दही शाक की कढ़ी, 6. सिखरिणी, 7.अवलेह, 8.बाटी, 9.मुरब्बा, 10.त्रिकोण, 11.बटक, 12.मठरी, 13.फेणिका,14.पूरी,15.शतपत्र (खजला),16. घेवर. 17. मालपुआ,18.चोला,19.जलेबी, 20.धृतपूर (मेसू), 21. रसगुल्ला, 22.चन्द्रकला, 23. रायता 24.थूली, 25. लौंगपूरी, 26. खुरमा, 27. दलिया, 28. परिखा, 29. सुफला सौंफ सहित, 30. बिलसारू, 31. मोदक 32. साग 33. अधानौ अचार, 34. मोठ, 35.खीर, 36. दही, 37. गोघृत, 38. मक्खन, 39. मलाई, 40. कूपिका 41. पापड़, 42.सीरा, 43.लस्सी, 44. सुवत, 45.मोहन, 46. सुपारी, 47. इलायची, 48. फल, 49. तांबूल, 50. मोहन भोग, 51. लवण, 52. कषाय, 53. मधुर, 54. तिक्त, 55. कटु, 56. अम्ल। इ जरूरी नइखे की इहे 56 भोग हऽ। गाँव-गाँव के हिसाब से स्थानीय पकवान के भी शामिल कइल जात रहेला। भक्ति/भजन के बाद भगवान के भोग लगावल जाला आ ओकरा बाद सब प्रसादी के रूप में अन्नकूट भक्तलोग में बांट दिहल जाला। भोजन के पवित्रता भारतीय संस्कृति के पहिलका पहचान हऽ। सभे जानत बा की भारतीय परंपरा के सबल आ सक्षम बनावे रखे में परब-त्योहार के प्रमुख स्थान बा। परब-त्योहार में इहाँ के संस्कृति झलकेला। एह परब, उत्सव आ परंपरा के सीधा संबंध हमनी के खेती आधारित व्यवस्था से बा। भारतीय समाज व्यवस्था में खेती-बाड़ी मात्र एगो व्यवसाय या काम नइखे। लोक के सहज स्वभाव में फसल आ हरिअरी व्याप्त बा। पेड़-पौधा दिनचर्या के हिस्सा बा। लोक के चिंतन में ही ना, बल्कि व्यवहार में प्रकृति आत्मार्पित बा।

लोगन के जीवनशैली से खाद्यान के संबंध जगजाहिर बा। एकर संबंध सीधे-सीधे हमनी के परम्परा से जुडल बा। वर्षा ऋतु के पदार्पण के साथही गाँव में त्योहार के धूम मच जाला। लोकजीवन में पेड़ आ प्रकृति के हरिअरी के आपन विशिष्ट भूमिका होला। बिहार के कर्मा-धर्मा, बहुरा, मध्यप्रदेश आ छत्तीसगढ़ में हरेली तिहार, उत्तराखण्ड में हरेला बसंती परम्परा के मौन प्रतीक आ साक्षी बा ओह सनातन सत्य के जेकर साक्षात्कार हमनी के पुरखा-पुरनिया, ऋषि-मुनि लोग कइले बा। आजु के दिन किसान अपना खेती वाला औजारन (हल/हर, बक्खर, कुदाल/कुदारी, रापा, चटवार आदि) के धो के घर में सम्मान के साथ रखेला आ ओकर पूजा करेला काहे की उ जब खेती करेला त एह सभ औजारन से सहयोग लेला। जेकरा सहयोग से हमनी के कवनों काम के संपादित करीले सऽ त ओकरा खातिर हमनी के मन में कृतज्ञता के भाव ना होखे, ई भोजपुरिया समाज में होइये नइखे सकत। लोक-मन के ई परंपरा कृतज्ञता के भाव के अभिव्यक्ति हऽ।

हमनी के ओरी बिहार, झारखंड में गायदाढ, महाराष्ट्र आ गोवा के साथे मध्य भारत के मध्यप्रदेश के गाँव में पोला के परब मानवीय संवेदना के जीवन्त उदाहरण बा। अब देखी की पश्चिम आ मध्य भारत के पोला परब के आवे तक धान के फसल गाभिया (गर्भ धारण) जाला जवना के ओने के आंचलिक भाषा में 'पोटरी आना' कहल जाला। एह दिन किसान बड़ा उल्लास के साथ अपने आ खेती किसानी से जुड़ल सब जीव-जंतु के साथ परब मनावेला। जइसे हमनी इहाँ खीर-पूड़ी, दलही पूड़ी बनेला ओइसही ओने ठेठरी, खुरमी, सोहारी, बड़ा जइसन अनेक सुंदर आ स्वादिष्ट पकवान बनेला। हमनी ओरी गुड़ही पापड़ा त ओने चावल के चीला बनावल जाला। हमनी ओरी हथिया नक्षत्र के बेरा खेतिहर समाज

आदरा मनावेला। आदरा बरखा के स्वागत आ खेती खातिर नीमन उमीद में मनावल जाला। एही घरी सभे अपने घर में अपना कुलदेवता के पूजा अर्चना कर थारिया में पूजा सामग्री आ पकवान ले के खेत की ओर जाला आ भंडार कोना पर चढ़ा के चल आवेला। ओह पकवान में घर के अनाज से बनल सामान अवश्य होला। ओह में बाजार के मिठाई आ खलिहर कर्मकांड के कवनों जरूरत ना होखे। इहाँ एकर भाव बा की जेकरा से जुड़ल बानी, जेकरा से हमार पेट-खेत चलत बा ओकरा प्रति सम्मान के भाव प्रकट कइल। साँच मानी त ईहे भारतीय परंपरा बा। भारत के दोसरी भाग ओरी देखम त लोग अपना खेत में जा के पूजा अर्चना कइला के बाद गाभाइल धान के फसल के भी अपना घरे बनावल व्यंजन से भोग लगावेला लोग। काहे से की कृषक धान के बेटी मान के ओकरा के नीमन भोजन के भोग करावेला। एही से एह परब के 'गर्भही तिहार' के नाम से भी जानल जाला।

अब देखी की हमनी ओरी (सिंगही, छपरा, बिहार) होखे वाला कर्मा-धर्मा में झुड़ के पतई के सहारे भाई आ बहिन के पूजा होला। बहिन दिन भर भूखले रह के भाई के कुशलता खातिर कामना करेली आ साँझ के भाई झुड़ के पौधा ले अईहे त बहिन ओही से जुड़इहे मतलब पूजा पूरा मानल जाई। अब देखी की झुर एगो अइसन पौधा बा जवना के अन्न उत्पादन से कवनों उपयोग नइखे बाकिर झुड़/ झुड़ खेत के डरेड़ पर अक्सर जामेला। डरेड़ कतना महत्वपूर्ण होला, ई कहे के बात नइखे। जे खेती करेला ऊ जानेला। डरेरी आ मेड़ी पर रह के झुड़ दूनों ओरी के खेती के फले-फुलावे के अवसर कायम करेला, ओकर भी सम्मान बा हमनी के परंपरा में।

सावन-भादों के महीना में दरियाव जल से भर जाला। एह समय जलीय जन्तु के गर्भ धारण करे के होला। कुआर-कार्तिक महीना तक प्रजनन भी हो जाला। सभे जानेला कि गर्भ के समय गर्भवती के प्रोटीन के आवश्यकता जादा होला। एकरा खातिर भारतीय समाज अपना परंपरा के तहत खेतिहर समाज के समझा के एगो व्यवस्था बनवलक। एह घरी मकई के होरहा होला। हमनी के खेतिहर समाज अपना खेत से कम से कम पाँच गो मकई के बाल तुड़ी के गंगाजी के चढ़ा देवेला। अब देखीं कि एह व्यवस्था से प्रोटीन से भरल होरहा, जलीय जन्तु जइसे कि घड़िआर आ मछरी आदि के भोजन में शामिल हो जाला। अइसन व्यवस्था खाली हमनिये ओरी नइखे, पूरा देश भर में कवनों ना कवनों रूप में मौजूद बा। नदी आ नाला में पानी भर गइला के बाद धान, चाउर, फरुही, गेहूम आ चाहे दोसर अनाज डाले के परंपरा बा आ अबहियों सुचारू रूप से संचालित बा। साँच मानी त अइसन परंपरा खेती के संस्कृति के उच्चतम परिदृश्य प्रस्तुत करेला।

दिवाली के बाद पूरा देश में गोवर्धन पूजन के त्यौहार धूम-धाम से मनावल जाला। गोवर्धन के सजावे खातिर मेमरी आ सीलिहारी के साथ धान के बाली के भी उपयोग कइल जाला। कुछ लोग गाय के गरदन में धान के पौधा के रसरी बनाके बांध देवेला। चाउर के आटा से चउक पूरल जाला। गौरा-गौरी सजावे खातिर भी धान के सुनहरी बाली के उपयोग कइल जाला। लक्ष्मी-पूजन के समय सुंदर पाकल धान के बाली के झालर बनाके ओकर पूजा कइल जाला। जवना के बाद में चिरई के खाये खातिर घर-आंगना में टांग दिहल जाला। ई हमनी के परंपरा औपचारिकता मात्र खातिर ही नइखे बल्कि एकरा में भाव के प्रधानता आ प्रकृति के पोषण भी बा, जीव-जन्तु के संरक्षण भी। उत्कृष्ट विचार से ओतप्रोत परंपरा के खेती आ वन के संस्कृति से भी गहरा संबंध बा।

ईश्वर की सृष्टि में जतना भी जीव जंतु आ प्राणी बा, वृहत विष्णुपुराण के अनुसार उनका के उत्पत्ति के आधार पर अंडज, स्वेदज, जरायुज आ उद्भिज श्रेणी में बांटल गइल बा। मनुष्य जरायुज श्रेणी के प्राणी हऽ। माँ के गरभ से पैदा होखे वाला सभ प्राणी जरायुज हऽ। सभ प्राणियन के ज़िंदा रहे खातिर अनुकूल आहार के आवश्यकता होला। सभ प्राणी प्रकृति प्रदत्त स्वभाव के अनुसार अपना-अपना भौगोलिक क्षेत्र में पैदा वनस्पती, खाद्यान्न, कन्दमूल आ जीव जंतु के आपन आहार बनावें ला। एहमें से मनुष्य एकमात्र अइसन प्राणी बा जवन अपना बुद्धि बल से अपना खातिर अलग-अलग प्रकार के आहार निश्चित कइले बा। एह खाद्यान्नन के उपजावे खातिर खेती के आधार बनावल गइल बा। मनुष्य के शारीरिक विकास खातिर प्रोटीन, काबोर्हाइड्रेट, वसा, तेल, विटामिन आ खनिज तत्वन के आवश्यकता त रहबे करेला। मनुष्य एही आवश्यकता के पूर्ति खातिर खेती के माध्यम बनवले बा। हमनी के देश के भौगोलिक संरचना विविधता से भरल बा। कहीं पर्वतीय क्षेत्र बा त कहीं तटीय क्षेत्र, कहीं मैदानी क्षेत्र बा त कहीं पठारी। बहुत बड़ा क्षेत्र रेगिस्तानी बा आ वनांचल भी। एही ले ना एह क्षेत्रन में लगभग 43 प्रतिशत भूभाग मैदानी, 18 प्रतिशत पहाड़ी, 28 प्रतिशत पठारी आ 5 प्रतिशत भूभाग रेगिस्तान बा। अइसन क्षेत्रन में वनस्पति भी भौगोलिक परिस्थितियन के अनुसार होला।

दीपावली के अगिला दिन गोबर्धन पूजा के दिन गाय के पकवान खिआवल जाला, गोधन कुटाला, बहिन रेंगनी के काँट से बिधी करेली आ भगवान श्री कृष्ण के 56 प्रकार के भोग लगावल जाला। सामान्यतः एहमें निम्नलिखित भोग शामिल होला -1.भात, 2. दाल, 3. चटनी), 4. कढ़ी, 5 दही शाक की कढ़ी, 6 सिखरिणी,7.अवलेह, 8.बाटी, 9. मुरब्बा,10 त्रिकोण,11.बटक,12. मठरी,13. फेणिका,14 पूरी,15 शतपत्र (खजला),16. घेवर. 17. मालपुआ,18.चोला,19. जलेबी, 20. धृतपूर (मेसू), 21) रसगुल्ला, 22.चन्द्रकला, 23 रायता 24.थूली, 25. लौंगपूरी, 26. खुरमा, 27. दलिया, 28. परिखा, 29. सुफला सौंफ सहित, 30. बिलसारू, 31. मोदक 32. साग 33. अधानौ अचार, 34. मोठ, 35.खीर, 36. दही, 37. गोघृत, 38. मक्खन, 39. मलाई, 40. कूपिका 41. पापड़, 42.सीरा, 43.लस्सी, 44. सुवत, 45.मोहन, 46. सुपारी, 47. इलायची, 48. फल, 49. तांबूल, 50. मोहन भोग, 51. लवण, 52. कषाय, 53. मधुर, 54. तिक्त, 55. कटु, 56. अम्ल। इ जरूरी नइखे की इहें 56 भोग हऽ। गाँव-गाँव के हिसाब से स्थानीय पकवान के भी शामिल कइल जात रहेला।

ऋग्वेद में खेती के महत्व बतावत एगो मंत्र बा- **अक्षैर्मा दीव्यः खेतीमित कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः।** (ऋग्वेद-34/13) अर्थात जुआ मत खेली, खेती करीं आ सम्मान के साथ खेती करीं। स्वामी दयानंद सरस्वती जी कहले रहीं कि खेती करीं चाहे ऋषि बनीं। ऋग्वेद आ अथर्व वेद से मालूम होला कि राजा वेन के पुत्र पृथ्वी पहला कृषक रहलें जे पहिला बेरी खेती विद्या के सिखले आ कृषक के रूप में काम कइलें। आठवीं ईस्वी पूर्व जन्मल पराशर ऋषि के खेती विज्ञानी कहल जाला। ऊँहा के खेती पर 3 ग्रंथ लिखनी। 1.खेती संग्रह, 2.खेती पराशर आ 3.खेती तंत्र। खेती पराशर ग्रंथ में खेती संबंधी 243 श्लोक बा। खेती में खेती बाड़ी, साग सब्जी, पशुपालन आदि ग्रामीण आजीविका आदि के काम शामिल बा।

भारत खेती प्रधान देश बा। खेती किसानी के काम में अनाज के खेती, सब्जी, फल, पशुपालन आदि शामिल बा। सरकारी स्तर पर भलही इनका के अलग-अलग बतावल गइल बा बाकिर एह सबके जरूरत मनुष्य के आजीविका, शारीरिक ऊर्जा आ स्वस्थ जीवन खातिर बा। ग्रामीण जीवन में किसान एह सब के उगावे आ परिणाम पावे खातिर काम करत रहेला। खेती गतिविधी में खेत के बोये लायक, फसल के अनुरूप बनावे खातिर तइयार कइल, खेत के सफाई, बीआ के चयन, जुताई, बुवाई, सिंचाई, खाद, निराई, गुड़ाई, कटाई, मंडाई, सूखल चारा के निस्तारण, अनाज भंडारण, एकरा अलावे तरकारी खातिर खेत के तइयार कइल, ओला से, पाला से, सूखार से, कीड़ा-मकोड़ा से बचाव के उपाय कइल, यदि नगदी फसल बा त ओकरा खातिर बाजार व्यवस्था तय कइल, जइसन महत्वपूर्ण काम खेती-किसानी काम में शामिल बा। पारंपरिक खेती में पशुपालन खेती के एक अभिन्न अंग बा। पशुपालन में गाय, बैल, सांड, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट, कुत्ता आदि किसान के सहायक हऽ। पशुअन के गोबर से खाद मिल जाला, जवन उत्तम फसल खातिर बहुत आवश्यक बा। छोट किसान खातिर बैल खेत जोते में सबसे अधिक सहायक हऽ। गाय के महत्ता धार्मिक आ आर्थिक दूनों ओरी से बा। भइंस गोबर के खाद आ दूध आ बकरी दूध खातिर उपयोगी होला, भेड़ से ऊन मिल जाला, ऊंट सामान ढोवे आ खेती के काम मे बहुत मददगार पशु हऽ। गाय भारत में हर अंचल में प्रायः हर गाँव-घर में पालल आ पोसल जाला। डेयरी पर निर्भरता के कारण अब कम हो रहल बा तबहूँ प्रायः हर अंचल में ऊँहा के जलवायु में पलल बढ़ल आ दूध देवे लायक गाय पावल जाला। जइसे हिमाचल आ उत्तराखंड में बदरी गाय बहुत उपयोगी मानल जाला। पंजाब आ हरियाणा में साहीवाल, लाल सिंधी, मेवाती, राजस्थान में थारपारकर, नागौरी, राठी, कांकरेज, महाराष्ट्र में देवनी, खिलारी, लाल कंधारी, गुजरात में कांकरेज, गीर, मध्यप्रदेश में निमाड़ी, बिहार-झारखंड में बाचौर, देसीला आ जर्सी आदि नस्ल के गाय बहुत प्रसिद्ध हऽ। इ सभ पशु दूध, खाद के अलावा किसान के अर्थव्यवस्था के सुदृढ करे में सावाँग लेखा आपन महत्वपूर्ण योगदान देला। गाय के वंशवृद्धि खातिर नीमन सांड के आवश्यकता पड़त रहेला। गाँव में ए-दु गो सांड अवश्य मिल जाला। परंपरा त ईहो बा की गाँव मे केहूँ सांड के डंडा ना मारे। लोग हाँक के भगा देला। हालाँकि अब नेटुआ जाति के लोग सांड पाले के काम करत बा लोग। एकरा अलावे गावें-गाँव अब भेटनरी डॉक्टर भी एह में आपन योगदान देत बा लोग।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी कहले रहीं कि खेती करीं चाहे ऋषि बनीं। ऋग्वेद आ अथर्व वेद से मालूम होला कि राजा वेन के पुत्र पृथ्वी पहला कृषक रहलें जे पहिला बेरी खेती विद्या के सिखलें आ कृषक के रूप में काम कइलें। आठवीं ईस्वी पूर्व जन्मल पराशर ऋषि के खेती विज्ञानी कहल जाला। ऊँहा के खेती पर 3 ग्रंथ लिखनी। 1.खेती संग्रह, 2.खेती पराशर आ 3.खेती तंत्र। खेती पराशर ग्रंथ में खेती संबंधी 243 श्लोक बा। खेती में खेती बाड़ी, साग सब्जी, पशुपालन आदि ग्रामीण आजीविका आदि के काम शामिल बा।

यजुर्वेद में खेती के बारे में विस्तार से बतावल गइल बा। जमीन के जोत के बीआ बोये खातिर तइयार करे के क्रिया के उल्लेख बा। बीआ बोये के क्रिया के 'वपन' कहल जाला। भूमिरावपतं महत। (यजुर्वेद 23/46)। ऋग्वेद में एगो जुआरी के निर्देश देत बतावल गइल बा की रवाँ अइसन खराब काम के छोड़ के खेती करी। तीर्थंकर ऋषभ देव जी भी कहले बानी की असि (युद्धविद्या) मसि (लेखन) खेती, शिक्षा, वाणिज्य आ शिल्प एह 6 गो काम से विकास करे के चाहीं। हमनी के देश में करीब 51 प्रतिशत लोग कवनों ना कवनों रूप में खेती-किसानी पर आश्रित बा। यजुर्वेद आ अथर्ववेद में खेती के बारे में कई गो ऋचा मिल जाला। अइसन मानल गइल बा की खेती के काम से मिलल अनुभव से किसान ओही काम के अपना रूटिंग में ले अइलक आ बार-बार ओही अनुभव के उपयोग कइलक। जहाँ सुधारे के परल सुधरलक आ फेर ओकरा के उपयोग कइलक। हमरा लागत बा की अइसही खेती-किसानी के परम्परा बन गइल होई। गाँव में आजों कवनों काम खातिर कुछ लेवे या देवे के प्रवृति बा। ले दे के काम होला। हालाकि बाजारवाद के दौर में एह में कमी आइल बा। एकरा के अंग्रेजी में 'बार्टर सिस्टम' कहल गइल बा। देश के अलग-अलग हिस्सा में एकरा खातिर अनेक शब्द बा। इ सब शब्द विनिमय से जुड़ल बा।

खेती के काम में कई बार सहायता खातिर दोसर लोग के भी जोड़ल जाला, अइसे में कई बार बटाई पर खेती भी कइल जाला जवना में खेती उपज में बंटवारा सुनिश्चित कर दिआला। एकरा अलावे मालगुजारी पर भी खेती कइल जाला। एह के तहत साल भर ला खेत बोवें खातिर लियाला आ खेतिहर के एगो तय मूल्य/पइसा दिया जाला। इ परंपरा गाँव में आज भी बा। इहें से सहकारिता के दरवाजा भी खुलेला। पहिले केहू के रोपनी, कटनी, पीटनी, दऊनी आदि पिछुआइल बा त गाँव के लोग मिल के पूरा करा देत रहे। खेती-किसानी खातिर गाँव के लोग हरमेसा एक दूसरा के सहयोग करे ला जुटत रहे। इहाँ तक की केहू के खरिहान में अनाज, भूसा, पुअरा परल रहे आ बरखा आवे त लोग कोसिस करे की सब सुरक्षित बाँच जाव। लोग मिलजुल के खोप में भूसा रखवा दिही। अनाज के तोपवा दिही। एकरा बादो अगर सब भींज गइल त लोग मिलजुल के सुखवावे में मदद करी। बताई त अइसन सहकार कहाँ मिली। मिली त गाँव-जवार में आ खेती-किसानी में।

अब देखी कि जहां ऊँख के खेती होला, उहाँ दशहरा या गोवर्धन पूजा के समय खेत में पूजा कइल जाला। पूजा के बाद ही ऊँख चूस के देखल जाला की ई पाक गइल बा की ना। ऊँख के पूजा कइल एक तरह से ऊँख आ धरती माई से अनुमति लेवे के भाव हऽ। पूजा के बाद ऊँख में मिठास के पता जाला तबे लोग आगे के परिक्रिया शुरू करेला। ओकरा पहिले किसान ऊँख काटे से बचेला। ऊँख के कटाई के बाद गुड़ खातिर पिराई कइल जाला। गाँव में अबहियों लोग घर में गुड़ बनावेला। कवनों आदमी ओह ओरी के केनहूँ जात होखे आ पियास लाग जाये त लोग पहले गुड़ खाये के देला आ पानी बाद में। पुरान समय में पशु के देखभाल भी आदमी परिवार के सदस्य के रूप में करत रहे। पशु अगर बेमार होखे त ओकर इलाज के पारंपरिक ज्ञान हर किसान के होत रहे। ऊ ग्रामीण लोक विज्ञान उत्कृष्टता रहे। लोग पशु के कान छू के, पेट पर हाथ रख के आ मुँह के देख के बता देत रहे कि जानवर के का भइल बा। अब त आधुनिक उपचार के व्यवस्था उपलब्ध हो गइल बा। किसान धरती के माई मान के जइसे देखभाल करेला ओइसही अपना खेत, बैल आ खेती औजार के भी देखभाल देव-भाव से करेला। अब बैल के जगह ट्रैक्टर्स ले ले बा ना त बैल खेती के राजा होत रहे। किसान ओकरा चारा पानी आ सेहत के ध्यान अपना से अधिक राखत रहे। बैल के गरदन में घंटी आ मोती के माला, सींग पर तेल लगा के चमकावल जात रहे। बैल के घीऊ पिआ के ओकरा

के छेड़ुआ बनावल भी देखे आ समझे के योग्य परम्परा रहे।

अनुभवी लोग खेती-किसानी के बारे में जवन कहत आइल बा, उहे 'कहावत' के रूप में सगरी मान्य बा। हमरा हिसाब से त कहावत खाली गाँव के कथन आ गाँव के साहित्य नइखे, बल्कि इ लोक जीवन के नीतिशास्त्र हऽ। हम त कहब की इ संसार के नीति साहित्य के विशिष्ट अध्याय हऽ। लोक मानस खेती अइसन काम के केतना महत्त्व देले बा, इ नीचे देखी त साफ लउकी-खेती-किसानी के कवि घाघ त खेती के महत्व के एह शब्द में व्यक्त कइले बानी-

उत्तम खेती, माध्यम बान / निकृष्ट चाकरी भीख निदान।
जो हाल जोते खेती वाकी/ और नही तो जाकी ताकी।

एगो आउर कहावत में कहल बा-

उत्तम खेती, मद्धम ब्यपार,
निखिद्ध चाकरी, करे गंवार।

खेती सबसे उत्तम अर्थात श्रेष्ठतम साधन हऽ जीविका के। व्यापार दूसरा दर्जा के हऽ, चाकरी साफे माना बा। नौकरी के गुलामी के बराबर कहल गइल बा। इ गंवार लोग द्वारा करे वाला काम बा। इ कहावत भारत के हर भाषा में कहल जाला।

खेती उत्तम काज है, इहि सम और न होय।
खाबे कों सबकों मिलै, खेती कीजे सोय।।

खेती उत्तम काम बा, एकरा बराबर आउर कवनों काम नइखे। इ सबके भोजन देवेला। एही से खेती करे के चाही।

आज सुख-सुविधा आ आधुनिक व्यवस्था खातिर महत्त्वाकांक्षी लोग व्यापार के क्षेत्र में आवत बा। ई लोग त सुविधा के साथ-साथ सुविधाजनक स्थिति में रह के इच्छुक नौकरी तलाश करत बा। इ मुहावरा खेती के विशेष ऊंचाई पर प्रतिष्ठित करत मूल्यवान वाक्य बा। कहावत में गेहूं, ऊँख, कपास आउर मकई के बीआ बोये के विधि, विशेषतया मिट्टी में बीआ डाले के मापदंड स्पष्ट बतवाल गइल बा-

'गेहूं गन्ना घना बीजिए, गज-गज दूर कपास।
मकई बीच से निकालिए, लेहाफ की बुक्कल मार।।

अर्थात गेहूं आ ऊँख के पौध निकट-निकट, बाकिर कपास के पौध में गज-डेढ़ गज के दूरी पौधा के फले-फूले आ फइले खातिर जरूरी बा। मकई के बीआ अइसे धारी में पर्याप्त दूरी रखले खेत में डाली कि मकई के फसल लमहर भइला पर ओकनी के बीच से लेहाफ ओढ़ के गुजरल जा सके। ई दूरी एही से जरूरी बा कि फसल के बीच में से खुनाई के समय बैलन के निकालल जा सके। एकरा साथे सोहनी आ घास के बाछल भी जा सके। पौधा के जड़ पर माटी चढ़ जाए, खाद रखा जाए आ बीच में पानी खातिर जगहा भी बन जाए। एह तरह देखीं त खेती से संबंधित हजारो कहावत आजो दादी, दादा के मुख से झरत उ फूल ह जवन सूख के मन के किताब के बरक में आ के बस गइल बा। हमनी के दायित्व बा कि पुरखन के लोक ज्ञान-प्रवाह के अविरलता प्रदान करीं ताकि कवनों भी सूना मन-आंगन के पाहुन प्राप्त हो जाए आ साथी होके साथ-साथ चल सकी सऽ।

खेती-किसानी पर आधारित गीत, खेतिहर समुदाय के लोग के सांस्कृतिक धरोहर आ उनकरा जीवन शैली के महत्वपूर्ण हिस्सा हऽ। रोपनी-सोहनी के गीत खेत में मजूरी करे वाली मजदूरन के गीत हऽ। एकरा के महिला खेत में रोपनी-सोहनी करत समय सामूहिक रूप में लय में गावेली। एह गीतन में पारिवारिक नोंक-झोंक के बड़ा सुरूचिपूर्ण चित्रण होला। एगो गीत में अपना पिया से वियोग के पीड़ा के देखी-

'ननदी झगरवा कइली, पिया परदेश गइले।
किया हो रामा, भउजी रोवेली छतिया फाटे हो राम।'

(ननद झगड़ा करत बारीं। पति परदेश चल गइल बारे अइसन स्थिति में उसकर भौजी रोवत बारी। नायिका अइसन प्रतिकूल स्थिति में बेचैन बारी।)

एगो आउर गीत में देखी-

"चला सखी रोपि आई खेतवन में धान,
बरसि जाई पानी रे हरी.."

मशीन से खेती होखे के कारण गीत खेतिहर लोग से बिसरत चल जात बा। हम अपना लड़िकाई मतलब 90 के दशक के बात करी त धान रोपाई के समय रोपनिहार अपना देवर, भसुर, ननद, पति, ससुर, सास, सऊतिन, लड़िकाई में बियाह, बउचट पति, खाये के दुख, रहे के दुख के आधार बना के लोकगीत गावत रही। हमार दादी संगमी कुँवर 97 बरिस के हो गइल बारी। अबहियों खेत में धान के रोपाई के चर्चा करत समय बरबस ओह गीतन के गुनगुनाये लागेली जवन ऊ बचपन में गवले बारी। दादी के गीतन से गुजरत हम देखले बानी की उनका गीत में श्रम के विभिन्न रूप के चित्रण के साथे-साथे खेतिहर जाति के प्रकृति से सहचर्य के भी रेखांकित कइल गइल बा। साँच कही त भोजपुरी क्षेत्र से भइल श्रम-प्रवसन के पीड़ा भी एह गीतन, विशेषकर महिला द्वारा गावे वाली गीतन में बड़ा मार्मिक ढ़ंग से अभिव्यक्त भइल बा। अगर देखम त खेती किसानी के गीत में मौसम के परिवर्तन, बीआ बोवे के तकनीक, खेत के सिंचाई, फसल के देखभाल, खेती संबंधी आउर काम के साथ कटनी, रोपनी, सोहनी व जांतसार के बेरी सबसे अधिका गीत गावल जात रहे। नाव खेवत मल्लाह के गीत, कोल्हू चलावत तेली के गीत, डोली ले जात कहांर के गीत चाहे कपड़ा धोवत धोबी के गीत, भेड़ चाहे बकरी चरावत चरवाहा के गीत, कांवर ले जात कांवड़िया के गीत, रूई धुनत धुनिया के गीत, हरवाही करत हरवाहा के गीत लोकगीत के अमूल थाती हऽ। दरअसल, एह गीतन के अगर सुनियोजित अध्ययन होखे त इ साफ होखत देरी ना होई कि श्रम आ उत्पादन हमनी के संस्कृति के जीवन मूल्य रहल बा। खेती-किसानी के विषय पर आधारित सैकड़न भोजपुरी लोकगीतन में किसान के ज़िंदगी के विभिन्न पहलु के छूये के प्रयास कइल गइल बा। इ गीत किसानन के मेहनत, उनकर समस्या, उनकर उल्लास आ दुःख के बयां करत रहेला। साथे-साथे सोहनी, रोपनी के गीत, भारतीय ग्रामीण जीवन आ खेती के याथार्थता के प्रस्तुत करेला, जवना में मेहनत, प्यार, संघर्ष, उत्साह, आ आशा के झलक मिलेला। इ गीत माटी के सुगंध, पसीना के महक आ हरिअरी के ताजगी के गीत में उत्कृष्टता के साथ बयान करेला।

परिचयः व्यवसाय से अध्यापक, स्वभाव से चिंतक, कर्म से पत्रकार आ सामाजिक-सांस्कृतिक विषयक अध्येता डॉ. अमरेन्द्र कुमार आर्य समाज में पारस्परिक संवाद के प्रोत्साहित करे खातिर शोध आधारित विचार के आगे बढ़ावे में लागल रहेले। सम्प्रतिः दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में सहायक आचार्य के रूप में कार्यरत।

दिव्येन्दु त्रिपाठी

भारत में खेती के शुरूआत आ प्रसार

आज अनेक प्रमाणन के आधार प ई साबित हो चुकल बा जे भारतीय उपमहाद्वीप में खेती के विकास स्वतंत्र रूप से भइल आ लगभग ओही समय भइल जवन समय ई तुर्की में शुरू भइल रहे। एह बात में कवनो शक नइखे जे अनातोलिया में खेती के परंपरा पुरातन काल से चलत रहे आ शक इहो बात में नइखे जे कुछ हदतक अनातोलियन किसान लोग प्रब्रजन करत-करत दोसरो जगहन में खेती के प्रसार कइल आ ओ लोग से कुछ दोसर मानव समूह के लोग खेती के तकनीक सीखल। बाकिर हड़प्पा सभ्यता समेत भारतीय उपमहाद्वीप के खेतिहर संस्कृति के विकास में अनातोलियन किसानन के कवनो योगदान रहे, ई बात में पूरा-पूरा संदेह बा।

लमहर समय से इहे मानल जात रहे जे खेती के शुरूआत पहिले पहिल अनातोलिया में शुरू भइल। अनातोलिया जवन आज के तुर्की ह पुरातन काल में मानव सभ्यता के परिष्कार में बड़ योगदान देत रहल। ई कवनो अटकलबाजी ना बलुक पुरातात्विक धरातल प सत्यापित भइल बाटे। आज

विज्ञान के दौर बा। आज उहे बात साँच मानल जाता जवना खातिर कि मानेजोग प्रमाण उपलब्ध रहे। तुर्की में 9000 ईसापूर्व के आसपास खेती शुरू भइल आ कुछे शताब्दियन के बाद ई आसपास के आबादियन में फइले लागल। सबसे पहले ई मेसोपोटामिया जवना में आज के इराक, सीरिया आ लेबनान के कुछ भाग परत रहे, में पसरल।

भारत में खेती के शुरूआती प्रमाण सिंध के मेहरगढ़ (पाकिस्तान) से मिलल बा। एने खेती के शुरूआत 8000 ईसा पूर्व जतना पुरान मानल जा रहल बा। एने जौ आ गेहूँ के खेती पहिले पहिल शुरू भइल आ भेड़-बकरी भी पलाये लागल। हरियाणा के एगो साइट भिराना के मेहरगढ से भी ढेर पुरान मानल गइल बा। ओनियो जौ आ गेहूँ के पुरान नमूना मिलल बाटे। ओकरा बाद उत्तर प्रदेश के बेलन नदी घाटी में आ मिर्जापुर के आसपास 6500 ईसापूर्व में धान के खेती शुरू भइल। जौ आ गेहूँ मेहरगढ, सिंध से आ धान बेलनघाटी के कोल्डिहवा से शुरू भइल आ धीरे-धीरे फैलत गइल। ई दूनो जगहन से जौ, गहुम आ धान के पुरान नमूना मिलल बा आ कार्बन-14 विधि से परीक्षण कइके समय के सत्यापित कइल गइल बा।

ओकरा बाद ऊ मिस्र आ ओकरा आसपास अपनावल गइल। तब जाके खेती के शुरूआत सप्तसिंधु भा हडप्पा सभ्यता के इलाका में भइल। खेती कइसे अनातोलिया से दोसर आबादियन भा सभ्यतन में फइलल एकरा से संबंधित दूगो अवधारणा भा मॉडल पुरातत्वविद लोग बतावल। पहिलका के डेमिक डिफ्यूजन मॉडल (Demic Diffusion Model) कहल जाला। ई मॉडल के अनुसार अनातोलिया के कृषक समुदाय धीरे-धीरे दोसर सभ्यतावाला जगहन प जाके बसत गइल आ खेतिहर संस्कृति के फइलाव होत गइल। एक प्रकार से हमनी का एकरा के उपनिवेशीकरण (Colonization) से मिलत-जुलत अवधारणा मान सकेनी जा। दोसर मॉडल बा सम्पर्क का माध्यम से सीखे के प्रक्रिया जेकरा में ई मान्यता दीहल गइल जे दोसर सभ्यता के लोग अनातोलियन कृषकन के सम्पर्क में आइल आ खेती के तकनीक सीखत गइल। भारतीय विद्यालयन आ महाविद्यालय में लमहर समय से विद्यार्थियन के ईहे बतावल आ पढावल गइल। एन सी ई आर टी के किताबन में भी इहे तथ्य पेश कइल गइल। लेकिन आज अनेक प्रमाणन के आधार प ई साबित हो चुकल बा जे भारतीय उपमहाद्वीप में खेती के विकास स्वतंत्र रूप से भइल आ लगभग ओही समय भइल जवन समय ई तुर्की में शुरू भइल रहे। एह बात में कवनो शक नइखे जे अनातोलिया में खेती के परंपरा पुरातन काल से चलत रहे आ शक इहो बात में नइखे जे कुछ हदतक अनातोलियन किसान लोग प्रब्रजन करत-करत दोसरो जगहन में खेती के प्रसार कइल आ ओ लोग से कुछ दोसर मानव समूह के लोग खेती के तकनीक सीखल। बाकिर हडप्पा सभ्यता समेत भारतीय उपमहाद्वीप के खेतिहर संस्कृति के विकास में अनातोलियन किसानन के कवनो योगदान रहे, ई बात में पूरा-पूरा संदेह बा।

नव पाषाण काल आ खेती

ई विषय के आगे बढवला से पहिले अपने सब के ई बतावल जरूरी बा जे खेती के साथे सभ्यता के शुरूआत मानल जाला। मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age) के अंत होखला के बाद नव पाषाण काल(Neolithic Age) में खेती के बिरवा बोवाइल। ईहे समय में घरेलू स्तर प पशुपालन शुरू भइल। गाय, भेड़, बकरी, घोडा जइसन अनेकन पशुवन के पालतू बनावल गइल। बाकिर पशुपालक संस्कृतियन में स्थिरता के कमी रहे। स्थानांतरण आ बंजारापन ओकर स्वाभाविक गुण रहे। पशुजीवन चारागाह प निर्भर करेला। चारागाह खतम त चल दोसरा ठहीं। पशुपालन सभ्यता के जनक ना बन सकल। सभ्यता खेती के साथे शुरू भइल। खेतिए के साथ-साथ स्थिर आवास में मानव रहे लागल। ग्रामीण संस्कृति के विकास भइल। सुप्रसिद्ध मानवशास्त्री हेनरी लेविस मॉर्गन आपन किताब 'एन्शिएन्ट सोसाइटीज' में अमरीकी जनजातीय समुदायन के सभ्यतागत विकासक्रम के अध्ययन करत विश्व के तमाम मानव समाजन के विकासक्रम के अनुविन्यस्त कइले बाड़े। ऊ बतवले बाड़े जे कइसे-कइसे अलग-अलग समाजन के सभ्यता संबंधी विकास भइल। भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाणकाल के शुरूआत अलग-अलग जगहन प अलग-अलग आँकल गइल बा। तबहूँ एकर शुरूआत मोटामोटी 9000 ईसापूर्व जतना मानल जा सकेला। लगभग ईहे कालखंड से खेती के प्रमाणो मिलेला। पूर्वांचल (उ प्र) के लहुरादेव आ चौपानीमांडो (इलाहाबाद) में मेसोलिथिक काल के माटी के बरतन मिलल बा। माटी के बरतन परोक्षतः कृषक समुदाय के उपस्थिति के संकेतक मानल जा सकेला। उत्तरप्रदेश के महादहा जइसन जगह से सबसे पुरान सिलबट मिलल बा। एकर संकेत एकदम साफ बा।

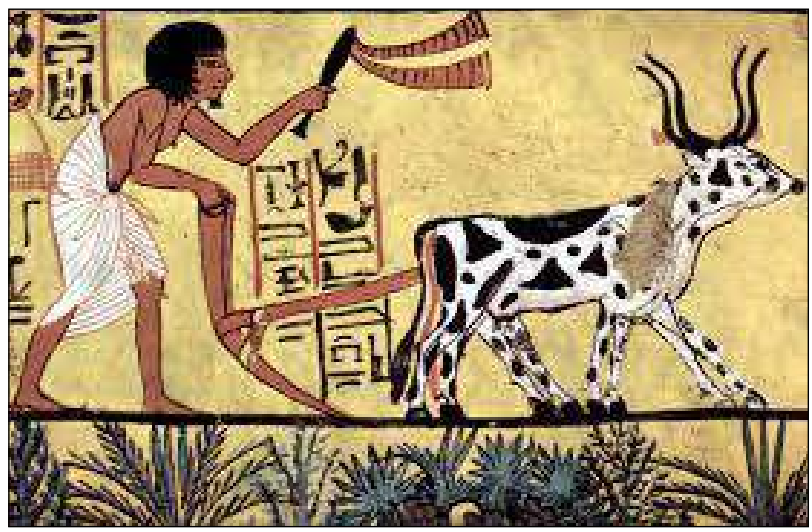

आज के अधिकांश विशेषज्ञ लोग ई मान रहल बा जे दुनिया के अलग-अलग जगहन प खेती के विकास स्वतंत्र रूप से भइल जवना में अनातोलियन कृषि के कवनो उल्लेखनीय योगदान ना रहे। बाकिर दुनिया भर के संस्कृतियन में विभिन्न क्रियाकलाप, तकनीक आ शिल्पन के आदान-प्रदान त होते रहल बा।

ई संभव बा जे बाद में भारतीय खेती प कवनो बाहरी तकनीक के आंशिक प्रभाव पड़ल होई। आ अइसन भइल स्वाभाविको बा।

भारत में खेती के शुरूआती प्रमाण सिंध के मेहरगढ़ (पाकिस्तान) से मिलल बा। एने खेती के शुरूआत 8000 ईसा पूर्व जतना पुरान मानल जा रहल बा। एने जौ आ गेहूँ के खेती पहिले पहिल शुरू भइल आ भेड़-बकरी भी पलाये लागल। हरियाणा के एगो साइट भिराना के मेहरगढ से भी ढेर पुरान मानल गइल बा। ओनियो जौ आ गेहूँ के पुरान नमूना मिलल बाटे। ओकरा बाद उत्तर प्रदेश के बेलन नदी घाटी में आ **मिर्जापुर** के आसपास 6500 ईसापूर्व में धान के खेती शुरू भइल। जौ आ गेहूँ मेहरगढ, सिंध से आ धान बेलनघाटी के कोल्डिहवा से शुरू भइल आ धीरे-धीरे फइलत गइल। ई दूनो जगहन से जौ, गहुम आ धान के पुरान नमूना मिलल बा आ कार्बन-14 विधि से परीक्षण कइके समय के सत्यापित कइल गइल बा। खाली कोल्डिहवे ना बलुक उत्तर प्रदेश के चौपानीमांडो आ महागरा जइसन दोसरो जगहन प तबे धान के खेती शुरू भइल। अइसन मानल जाला जे बिहार के कुछ भाग आ विन्ध्य के इलाकन में ओकरा बाद खेती शुरू भइल।

हड़प्पा सभ्यता आ खेती

हड़प्पा सभ्यता जेकरा के अब हमनीका सिंधु सरस्वती सभ्यता कहत बानी जा, बहुते समृद्ध नगरीय सभ्यता रहे जवन अपना समय विश्व के तमाम दोसर सभ्यतन के मुकाबले बहुत विस्तृत भौगोलिक परिक्षेत्र में फइलल रहे। ओकरा मुकाबले मिस्र, मेसोपोटामिया आ चीन के सभ्यतन के इलाका बहुते छोट-छोट रहे। हडप्पा सभ्यता के नगरीयता बिना समृद्ध खेती आ गाँवन के बिना संभव ना रहे। एगो शहर के पेट भरे के पीछे कइगो गाँवन के योगदान रहेला। शहर में अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्रन का मुकाबले द्वितीयक आ तृतीयक क्षेत्रन के आर्थिक गतिविधि ढेर होला। जब गाँवन के खेती से नीमन अधिशेष उपज (surplus cultivation) होला तबे समृद्ध शहर के विकास हो सकेला। हडप्पा सभ्यता के जेतना शहर तब विश्व के कवनो दोसर देश के सभ्यता में ना रहे। अपने के सोंच सकीले जे हडप्पा सभ्यता में केतना गाँव रहल होई आ कतना गझिन आ विस्तृत खेती होत होई। कतना अधिशेष उत्पादन होत होई।

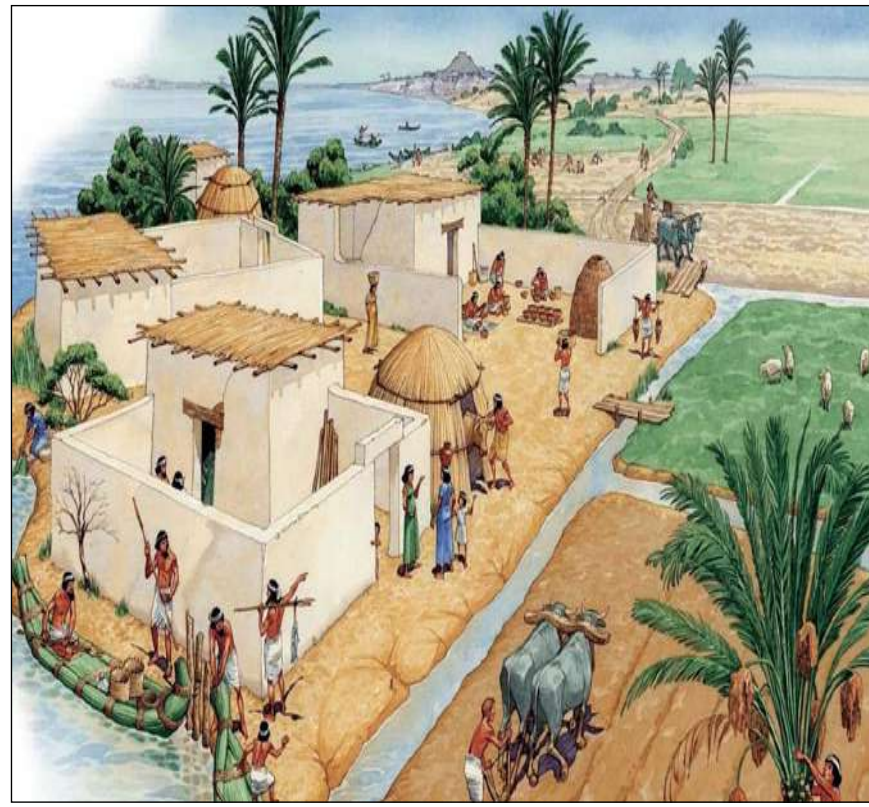

जब खेती के बात होला त आज से 5000 साल पुरान हडप्पा सभ्यता/सिंधु-सरस्वती सभ्यता के कइगो नगरन के चर्चा होला। राजस्थान के हडप्पाई साइट कालीबंगन अपने आप में खास बा। एने तब के जोतल खेत के प्रमाण मिलल बा। हरियाणा के बनावली से ओह समय के हल के फाल मिलल बा। पहले फाल लकडी के होत रहे। बाद में ताम्बा आ काँसा के व्यवहार होखे लागल। हडप्पाई शहर मोहनजोदडो से भी बड़ शहर रहे हरियाणा के राखीगढी। अभी कुछ साल पहले डेक्कन कालेज पुणे के डॉ. वसंत शिंदे के नेतृत्व में औने पुरातात्विक उत्खनन आ अध्ययन भइल। खेती संबंधी अनेक वस्तुअन आ अनाजन के नमूना मिलल बा। तब हडप्पाई लोग जौ, गहुम, मटर, तिल आ धान समेत अनेकन अनाजन के बेवहार करत रहे। दलहन आ मोटो अनाज उपजत रहे। सिंधु सभ्यता में ही पहिले पहिल कपास के खेती शुरू भइल आ पूरा दुनिया कपड़ा पहिने सिखल। ई सभ्यता लुप्तप्राय सरस्वती नदी आ तमाम सहायक नदियन समेत सिंधु नदी के इलाका में पनपल रहे। ई सब नदी-क्षेत्र बहुते ऊपजाऊ रहे। खेती का साथ-साथ लोग बागवानियो खूब करत रहे।

अनातोलियाइ अवधारणा के साथे एगो अवरू मिथक प्रचलित रहे। लोग मानत रहे जे भारत में खेती ईरान के किसान लोग ले आइल रहे। ईरानी किसान लोग पश्चिमोत्तर भारत के शिकारी आ संग्रहकर्ता लोगन (South Asian Hunters and Gatherers) से मिलल, रक्तसंबंध से मिश्रित भइल आ खेती शुरू भइल। अभी हाल के राखीगढी (हरियाणा) आ दोसर पुरात्विक प्रमाणन से ईहो मिथक एकदम झूठ साबित हो गइल बा। ईरान में खेती के शुरूआत से काफी पहिलही भारत में खेती शुरू हो चुकल रहे। एकर पुरातात्विक आधार आज एकदम स्पष्ट बा। तब ईरानी जीन भारत में ना आइल रहे। राखीगढी से मिलल मानव कंकाल के जीन से ईहो पता लागल बा जे तब भारत के लोगन में कवनो खास ईरानी जीन प्रवेश ना कइले रहे। सिंचाई के मानवीकृत उपाय सिंधु सरस्वती सभ्यता में 4500 ईसापूर्व में शुरू भइल। नहर आ नाली के उपयोग होखे लागल।

कुछ विशेषज्ञ लोग प्रमाण देला जे भारत से खेती के कुछ तकनीक दक्षिणपूर्वी एशियाई देशन में गइल। डेनिस जे मरफी महोदय 2007 के आपने अनुसंधान में ई बतवले बाड़े जे धान के खेती गांगेय क्षेत्रन से शुरू होके बंगाल-आसाम होत दक्षिणीपूर्वी एशियाई देशन में पहुँचल।

वैदिक साहित्य में कृषि संस्कृति

ऋग्वेद के प्राचीनता निर्विवाद बा। बाकिर एकर रचनाकाल के लेके प्रचलित अवधारणा सही नइखे। कवनो हाल में ई 1500 ईसापूर्व से 1000 ईसापूर्व के रचना ना ह। एकर अधिकांश भाग सरस्वती नदी के पूर्ण प्रवाह काल में लिखल गइल रहे आ सरस्वती 1900 ईसापूर्व में पूरा तरह से सूखि गइली। एहसे एकर काल बहुत पुरातन बा। नक्षत्रीय प्रमाण हजारो बरिसन के संदर्भ देत बा। खैर, विषयांतर ना कके ई बतावल जरूरी बा जे ऋग्वेद सप्तसिंधु क्षेत्र (सिंधु सरस्वती,,झेलम,चेनाब ,रावी, व्यास आ सतलज) आ आसपास समृद्ध खेतिहर जीवन रहे। सरस्वती आ सिंधु नदियन के प्रवाह क्षेत्र में ढेरिए हडप्पाकालीन साइट मिलल बा जहवाँ खूबे खेती होत रहे। ऋग्वेद में बार-बार यव शब्द के प्रयोग ई संकेत देत बा जे ऊ समय जौ के खूब बेवहार होत रहे। यव शब्द के इस्तेमाल जौ के अलावे दोसरो अनाज खातिर होत रहे। लोग जौ, गेहूँ, धान आ बाकी अनाजन से परिचित रहे। अनाजन खातिर यव, वाज,धाना जइसन शब्दन के उपयोग भइल बा। जनसमूहन खातिर 'कृष्टयः'(पंचकृष्टयः) जइसन शब्द से ई पता चलत बा जे ओह समय के महत्वपूर्ण जनसमुदायन के पहचान खेतिए से होत रहे। यज्ञ में यव जइसन अनाजन के महत्वपूर्ण इस्तेमाल रहे। ऋग्वेद के चउथा मंडल के कृषिसुक्त सुप्रसिद्ध बा जवन भाषाशास्त्रीय दृष्टि से ऋग्वेदिक काल के अंतिम भाग के मानल जाला। ई सूक्त बहुत महत्वपूर्ण बा जवना में कुल एगारह गो ऋचा बाडी स। एकरा में खेती संबंधी उपकरणन हल आदि के उल्लेख बा-

रामायण, महाभारत आ पुराणन में उत्तर भारत के विशेष चर्चा मिलेला। राजा जनक के हर चलावल आ बलराम जी कान्हा प विराजमान हल अपने आप में खेतिहर जीवन के महत्व का ओर संकेत करेला। उत्तर भारत के खेती सीधे-सीधे नवपाषाणकाल से चलल आवत बा। नवपाषाणकालीन खेती के सबूत काश्मीर के बुर्जहोम (श्रीनगर), बागौर (राजस्थान), आदमगढ (होशंगाबाद मध्यप्रदेश) से भी मिल जाला।

'इंद्रम सीता नि गृह्णातु तां पूषान यच्छतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तराम समाम ।।'
(ऋग्वेद/ 4/57/7)

''इन्द्र हल की मूठ सम्हारसु। पूषादेव ओकर रक्षा करसु। तब हमनी खातिर पृथ्वी (पयस्वती)

पानी आदि से पूर्ण होके अनाजन के दोहन करस।

'शुनं नि फाला वि कृषन्तु भूमिम ,
शुनम कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।
शुनम पर्जन्यो मधुना पयोभिः
शुनासीर मस्मासु धत्तम ।।'

(ऋग्वेद/ 4/57/8)

हल में लागल फाल खेत के नीके से जोते, किसान बैलन के पाछे-पाछे आराम से जाए। हे वायु! हे सूरज! रउवा लोग हविष्य से प्रसन्न होके आ धरती के पानी से सींचिके औषधियन के फल से युक्त क दीं।''

ऋग्वैदिक संदर्भन में अफगानिस्तान के काबुल(कुंभा) आ कुर्रम (क्रुमु) से लेके सरयू आ गंगा तक के चर्चा बा। ई सब खेती खातिर सदियन से वरदान रहल बाडी लोग। पाश्चात्य इतिहासकार लोग ऋग्वैदिक काल के पशुपालक संस्कृति बतवले बा जवन सटीक नइखे। ऋग्वेद में भेड़ आ बकरी के बजाए गौ के ढेर चर्चा बा आ खेती में गोवंश के महत्ता विश्वविदित बा। अधिकांश पशुपालक संस्कृतियन में भेड़ आ बकरियन के ढेर उपयोग होला बजाए कि गोवंश के।

उत्तर वैदिक काल में खेती के खूब विकास आ विस्तार भइल। यजुर्वेद, ब्राम्हण ग्रंथन आ आरण्यकन में एकर साफ साफ संकेत मिलेला। जंगलन के काटके खेती के लायक बनावल गइल। रामायण, महाभारत आ पुराणन में उत्तर भारत के विशेष चर्चा मिलेला। राजा जनक के हर चलावल आ बलराम जी कान्हा प विराजमान हल अपने आप में खेतिहर जीवन के महत्व का ओर संकेत करेला। उत्तर भारत के खेती सीधे-सीधे नवपाषाणकाल से चलल आवत बा। नवपाषाणकालीन खेती के सबूत काश्मीर के बुर्जहोम(श्रीनगर), बागौर (राजस्थान), आदमगढ (होशंगाबाद मध्यप्रदेश) से भी मिल जाला।

लौहयुग में खेती के उन्नति

नवपाषाणकाल के बाद आइल हडप्पा सभ्यता के कास्ययुगीन आ ओकरे काल के लगभग आ कुछ बाद के समय उत्तर आ मध्य भारत के कुछ सभ्यतन के ताम्रयुगीन मानल जाला। बाकिर खेती में जबरदस्त क्रांति भइल लौहयुग के आगमन प। अभी भारतीय लौहयुग के समय

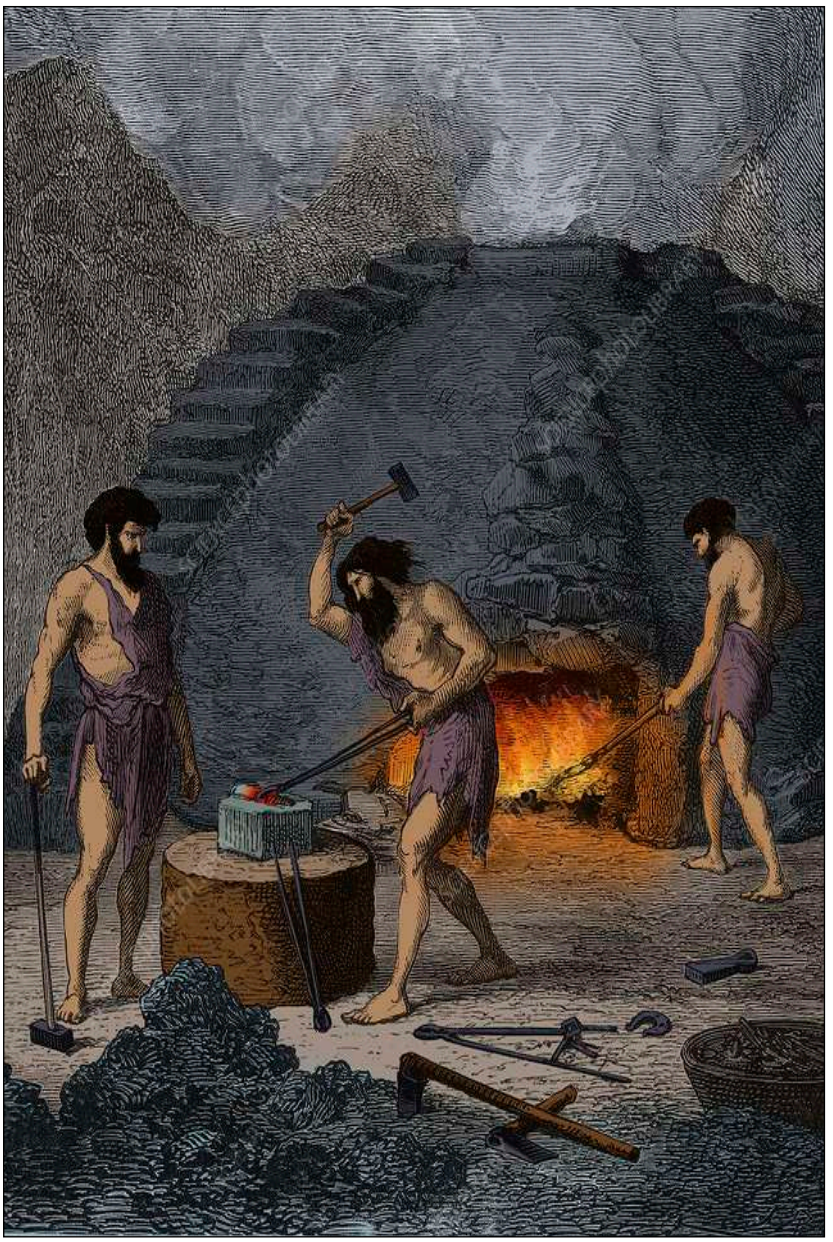

जवन मानल जात रहे ऊ बहुते दोषपूर्ण रहे। पुरान विज्ञलोग एकर समय 1000 ईसापूर्व से मानत रहे। ऊ लोग इहो मानत रहे कि भारत में लौह तकनीक अफगानिस्तान से आइल। बाकिर अब ई सिद्ध हो चुकल बा जे लौहकर्म के शुरूआत भारते में भइल आ 1800 से 1600 ईसापूर्व में एकर तकनीक लोकप्रिय होखे लागल। डॉ दिलीप चक्रवर्ती एह दिशा में बहुते उल्लेखनीय काम कइले बाड़े। ऊ मालवा से लौहकारी के शुरूआत मानत बाड़े। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिला में राजा नल के टीला, चंदौली के मलहर,लखनऊ के दाउदपुर में उपरोक्त नया कालखंड में लौह-उत्पादन होत रहे। लोहा के व्यवहार से जबरदस्त कृषि क्रांति पूरा गांगेय क्षेत्र में पड़ल। ईहे समय आज के भोजपुरी आ अवधी भाषी इलाकन में खेती जोर पकडे लागल। सारण जिला के चिरांद में 3000 ईसापूर्व आ कैमूरजिला में 2000 ईसापूर्व के आसपास खेती शुरू भइल रहे। बाद में लोहा के धारदार हथियारन से गांगेय क्षेत्र के जंगलन के काट-काट के खेतिहर इलाका बढावल गइल, नया गाँवो बसत गइल। ईहे बसावट जनपद के आधार बनल आ बाद में जाके महाजनपदन में तब्दील भ गइल। अब लकडी भा तामा

के हल के जगह प लोहा के ढेर मजबूत आ धारदार हल आ गइल। धीरे-धीरे ऊपर बतावल लौह उत्पादक जगहन के अलावे झारखंड के सिंहभूम में भी लोहा के उत्पादन होखे लागल। उड़ीसा के मयूरभंज आ बंगालो में लौह तकनीक आ साथे-साथे खेती भी फले-फुले लागल।

गांगेय क्षेत्र में खेती के विकास आ प्रसार के लेके कइगो भ्रम प्रचारित कइल गइल। औपनिवेशिक इतिहासकार आ बाद के दोसरो विद्वान लोग ई मानत रहे (बा) जे उत्तर वैदिक काल में आर्य लोग जब गांगेय इलाकन में बढल तब आपन प्रसार करत खेती के फइलावल। उहे लोग खेती के प्रवर्तन कइल आ जनपदन के कायम कइल। एह विचार से हम एकदम असहमत बानी। जइसे कि पहलही बतावल गइल बा जे उत्तर प्रदेश में धान के खेती आज से 8000 साल पहिले से होत रहल बा। बाद में इहवाँ स्थानीय रूप से लोहो मिले लागल त केहू के पश्चिम से आके खेती फइलवला के सवाले नइखे पैदा होत। ओकरा में एगो अनवरतता बाटे जवन कि आठ हजार साल पहिले से चलत आ रहल बाटे। उपरोक्त भ्रामक मत आर्य आक्रमण भा आर्य विस्थापन के सिद्धांत के वजह से फैलावल गइल। बाकिर ई सिद्धांत आज झूठ साबित हो चुकल बा। आर्य कवनो जाति भा नस्ल ना ह अरु नाहीं एह ढंग के कवनो समुदाय मध्य भा पश्चिम एशिया से भारत आइल रहे।

एगो बात धेयान देबे लायक ई बा जे 1900 ईसापूर्व के आसपास सरस्वती नदी सूख गइली आ हडप्पा सभ्यता के समृद्ध नगरन के विघटन आ पतन शुरू भ गइल। सोभाविक बा जे पलायन शुरू हो गइल। उहाँ के लोग दक्षिण भारत आ उत्तर भारत के इलाकन में फइलल आ कुछ लोग पश्चिम एशिया देने चल भइल। जे पलायन कइके आइल ऊ निश्चित रूप से आपन शिल्पगत विशेषता ले आइल जवना में खेती से संबंधित कौशल भी शामिल रहल होई। वैदिक संस्कृति भारते में जनमल आ फइलल। वैदिक ग्रंथन आ महाकाव्यन में समृद्ध खेती के खूबे चर्चा बा। पूषा आ क्षेत्रपति जइसन देवता खेती से संबंधित रहन।

दक्षिण भारत में खेती के प्रसार

दक्षिण भारत में नवपाषाणकाल के शुरूआत 3000 ईसापूर्व भा ओकरो से कुछ पुरान मानल जा सकेला। तेलंगाना के उत्तनूर आ कर्णाटक के हल्लूर में ईहे समय से धान वगैरह के खेती शुरू भइल। धीरे-धीरे तमिलनाडु आ केरल का इलाकन में ई फैले लागल। धान के साथे-साथ दोसरो अनाज आ सागसब्जी उपराजे लागल लोग। महाराष्ट्र में त गोदावरी आ प्रवरा नदी का इलाकन में हडप्पा आ चाल्कोलिथिक काले समृद्ध खेती होत रहे। केरल का इलाका में पांड्य राजा लोग के संरक्षण में खेती-किसानी पल्लवित आ पुष्पित भइल।। तमिल भाषा के संगम साहित्य में दक्षिण भारत के खेती आ बागवानी प बहुत बढिया प्रकाश पडल बा। बाद के चोल, चेर आ पल्लव वंशी राजा लोग किसानन हित में काफी ध्यान देत रहे। दक्षिण में कृषकन के सम्मानजनक स्थान दिहल जात रहे।

दक्षिण भारत में नवपाषाणकाल के शुरूआत 3000 ईसापूर्व भा ओकरो से कुछ पुरान मानल जा सकेला। तेलंगाना के उत्तनूर आ कर्णाटक के हल्लूर में ईहे समय से धान वगैरह के खेती शुरू भइल। धीरे-धीरे तमिलनाडु आ केरल का इलाकन में ई फइले लागल। धान के साथे-साथ दोसरो अनाज आ सागसब्जी उपराजे लागल लोग। महाराष्ट्र में त गोदावरी आ प्रवरा नदी का इलाकन में हडप्पा आ चाल्कोलिथिक काले समृद्ध खेती होत रहे। पांड्य राजा लोग के संरक्षण में पल्लवित आ पुष्पित भइल।

पूर्वोत्तर में खेती के विकास

असम आ आसपास के इलाकन में खेती के शुरूआत लगभग 3000 ईसापूर्व जतना पुरान मानल जाला। ईहे समय उहाँ नवपाषाणकाल के शुरूआत भइल। आसाम आ त्रिपुरा समेत पूर्वी बंगाल में खेतिहर जीवन आ बसाव लगभग एके समय शुरू भइल। ब्रम्हपुत्र नदी घाटी बहुत उपजाऊ परिक्षेत्र ह। हलाँकि बाढ़ के जानलेवा भयावहता आजुओ मनई के प्राण कँपा देला बाकिर एकर ऊपजाऊपन आ इहाँ के निवासियन के जीवटता बाकी दुनिया खातिर एगो मिसाल बा। पूर्वोत्तर के कृषि तकनीक उहाँ के भौगोलिक परिवेश आ तमाम जरूरतन के परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्र रूप से विकसित भइल। हमनी सबके पता बा जे पूर्वोत्तर में सीढीदार खेती आ झूम खेती उहाँ के खास विशेषता मानल जाला। उहाँ के कृषि तकनीक आ म्यांमार के कृषि तकनीक में बड़ी समानता बा। पूर्वोत्तर के जनसंख्या बहुत हदतक पूर्वी एशियाई जनसंख्या के जेनेटिक अभिलक्षणन के धारण करेला। उहाँ के जनजातीय समाज भी सदियन से खेती, पशुपालन, बागवानी के काम में आपन मौलिक कलाकुशलता रखेला। कुछ विशेषज्ञ लोग के ई कहनाम बा जे इंडोनेशिया जइसन दक्षिणपूर्वी एशियाई देशन में खेती असम आ म्यांमार होके चहुँपल।

बाद के समय में

बाद के समय में खेती के प्रसार होत गइल। महाजनपद काल से लेके मौर्य आ मौर्योत्तर काल में एकर प्रसार बढते गइल। शासकवर्ग कई प्रकार से कृषिकर्म में मदद देबे के कोशिश करत रहे। सहगौरा आ महास्थान अभिलेखन से ई पता चलत बा जे अकाल के समय शासक लोग किसान आ आम जनता के राहत सामग्री पहुँचावत रहे। चंद्रगुप्त मौर्य के बनावल जूनागढ के सुदर्शन झील सिंचाइ के ध्यान रखके बनावल गइल रहे जेकर जीर्णोद्धार शताब्दियन के बाद शक राजा रुद्र दमन आ गुप्तवंशी राजा स्कंदगुप्त कइले कौटिल्य के अर्थशास्त्र, पालि ग्रंथ त्रिपिटक आ दोसर प्राकृत पुस्तकन में खेती बाढ़ी के काफी चर्चा भइल बा। बाणभट्ट के कादंबरी में सिंचाई खातिर घाटीयंत्र के चर्चा बा जेकरा के रहँट भा रेहँट कहल जाला।

लोग राजा हर्षवर्धन के समय तक रहँट उपयोग से परिचित भ गइल रहे। खेती का साथे-साथ बागवानी भी प्राचीने काल से भारतीय जीवन के अंग रहल बाटे। ई विषय काफी विस्तृत बा। बाकिर ई आलेख में काफी कुछ विषयन के चर्चा विषयांतर के भय से हम नइखी कर

सकत। किसान के समस्या आ लोग के जीवन में आवेवाला चुनौतियन प चर्चा कबो दोसर आलेख में होई। भारतीय किसानो में समृद्ध आ विपन्न वर्ग रहल बा। समृद्ध किसान प्रायः दोसर गरीब किसान के कतना मददगार रहल बा, ई विचारणीय विषय बा। लेकिन भेद-भाव त रहले बा। मुगलकालीन दस्तावेजन में किसानन के तीन गो वर्ग बतावल गइल बा- खुदकाश्त, पाहीकाश्त आ मुजरियान। एकरा में तीसरा वर्ग शाइत खेतिहर मजदूरन के रहे। ब्रिटिशकाल में वारेन हेस्टींग्स के चलावल जमींदारी प्रथा देश के छोट किसानन खातिर माहुर बन गइल। महलवाडी आ रैयतवाडी लगभग ओकरे अलग-अलग संस्करण रहे। आजादी बाद जमींदारी प्रथा खतम कइल गइल आ दोसरो कई गो सुधार भइल।

निष्कर्ष

ई आलेख के लक्ष्य बा भारत में खेती के आरंभ आ विस्तार से जुड़ल नवका पुरातात्त्विक आ ऐतिहासिक तथ्यन के सामने रखल आ पुरान भ्रांतियन के दूर कइल। कुल मिलाके निष्कर्ष ईहे निकलत बा जे भारतीय उपमहाद्वीप में खेती के विकास कवनो पश्चिम एशियाई हरकत के चलते ना बलुक स्थानीय प्रयास के चलते भइल। पहिले पहिल खेती सिंधु आ सरस्वती नदियन के इलाका आ साथे गंगा आ सहायक नदियन के इलाकन में मौलिक रूप से विकसित भइल। धीरे-धीरे एकर भौगोलिक प्रसार होत गइल। खेती के विकास आ विस्तार साहचर्य के साथ भइल।

सहायक ग्रंथ आ शोधपत्रः

1)History of Agriculture in the Indian Subcontinent

2)Agricultural origins on the Anatolian Plateau-Douglas Baird et.al

3)History of Ancient India-R S Sharma

4) ऋग्वेद -सायण भाष्य

5) वाल्मीकि रामायण- प्रथम खंड (गीताप्रेस गोरखपुर)

6) आरंभिक भारतीय समाज और अर्थ व्यवस्था - रामशरण शर्मा

7) Medieval India- Irfan Habib

8) The Vedic Age - R C Majumdar

9) डी एन ए, पुरातत्व और वैदिक संस्कृति - दिव्येन्दु त्रिपाठी

10) The origin of Iron working in India-Rakesh Tiwari

11) The Formation of Human Population in South and Central Asia - Vaghish Narsimhan

12) Origin of Early Harappan Culture in Saraswati Valley - K N Dikshit.

13) महाभारत (आदि पर्व और सभापर्व) खंड-1 (गीताप्रेस गोरखपुर)

14) छांदोग्य उपनिषद (गीताप्रेस गोरखपुर)

परिचय- स्वतंत्र अन्वेषक, साहित्यकार आ वास्तुविद्।

आवरण कथा

डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद

भारत: 'शिप टू माउथ' से एक प्रमुख खाद्यान्न निर्यातक देश तक

भारत आज कृषि क्षेत्र में बहुत सुदृढ हो गइल बा। एकर प्रमाण ई बा कि अपना नागरिकन के सुविधा खातिर कोरोना महामारी के समय लॉकडाउन जइसन प्रतिबंध के बीच भारत सरकार द्वारा 'गरीब कल्याण अन्न योजना' के अन्तर्गत देश के 80 करोड़ गरीब आ जरूरतमंद नागरिकन के दु बरिस ले मुफ्त में खाद्यान्न उपलब्ध करावल गइल। भारत खातिर एगो नया मुहावरा गढ़ल गइल 'शिप टू माउथ'। (जहाज से खाद्य सामान सीधे उपभोक्ता के मुँह तक) एकर कारण ई रहे कि 1960 के दशक में स्वतंत्र भारत में भयंकर सूखा पड़ल रहे। भारत में अन्न के जेतना उत्पादन होत रहे ऊ देश के नागरिकन के भूख शान्त करे खातिर पर्याप्त ना रहे। एहसे खाद्य सामग्री के अन्य देशन से (विशेष रूप से अमेरिका से) भारत के आयात करे के पड़त रहे। बाकिर आज के परिस्थिति बिल्कुल ही उलट गइल बा। अब भारत के ही 'शिप' कई देशन के 'माउथ्स' के अनाज मुहैया करवा रहल बा। एतने भर ना एगो रिपोर्ट से पता चलल ह कि सन 2025 ले भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में विश्व के शीर्ष पाँच निर्यातक देश में शामिल हो जाई।

भारत संरचनात्मक दृष्टि से गाँवन के देश ह। चूँकि गाँव के हर समुदाय के अधिकांश लोग कृषि या कृषि-संबन्धी कार्य से ही जुड़ल रहेला, एह से भारत के कृषि प्रधान देश कहल जाला। राष्ट्रीय कृषि आ ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के एगो रिपोर्ट के मुताबिक भारत में आजो 10.07 करोड़ परिवार कृषि पर ही निर्भर बा। परिवार के ई अनुपात देश के कुल परिवार के अनुपात के 48 प्रतिशत बा। जबकि देश के एतना विकास आ शहरीकरण भइला के बावजूद जनसंख्या के दृष्टि से भारत के कुल आबादी के लगभग 68% हिस्सा गाँव में ही निवास करेले।

भारत करीब-करीब दू सौ साल (1757 से 1947 तक) ले अंगरेजन के गुलाम रहे। गुलाम देश भइला के कारण भारत के लोगन से अंगरेजन के कवनों भावनात्मक जुड़ाव त रहे ना। एह से अपना स्वार्थ खातिर अंगरेजन द्वारा भारत में लूट-खसोट आ शोषण भी बहुत भइल।

जइसन कि हमनी के जानतानी कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सन 1943 में बंगाल में, इतिहास प्रसिद्ध अकाल पड़ल रहे। जवना में ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री विन्सटन चर्चिल के गलत नीति के ही कारण बंगाल के लगभग 30 लाख लोग के भूख से तड़प-तड़प के आपन प्राण त्यागे

के पड़ल। एकरा बाद सन 1947 में देश के विभाजन के दंश भी भारत के सहे के पड़ल आ बँटवारा के समय वैधानिक रूप से जम्मू-कश्मीर के भारत में विलय भइला के बावजूद 1947 में क्षेत्रफल के दृष्टि से वर्तमान कश्मीर से तीन गुना बड़ा हिस्सा पर पाकिस्तान द्वारा आपन कब्जा जमा लेहल गइल। जवना के आज पाक अधिकृत कश्मीर कहल जाला।

देश अभी अपना के पूरा तरह से संभाल भी ना पवले रहे कि 1962 के युद्ध में चीन द्वारा भारत के बुरी तरह से पराजित कइल गइल। जवना के परिणाम स्वरुप भारत के 37,244 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर चीन द्वारा कब्जा जमा लेहल गइल। जवना के आज अक्सईचिन कहल जाला आ जमीन के ऊ हिस्सा चीन के अधिकार में आजो बा।

भारत एह तरह के अपना विपरीत परिस्थितियन से जूझला के बावजूद आजादी के बाद ही से अपना नागरिकन के क्षुधा-तृप्ति खातिर अपना के आत्मनिर्भर बनावे के कोशिश करत रहल बा। बाकिर हर काम में समय लागेला। एहसे जवना घड़ी भारत अपना परेशानी के दौर से ही अभी गुजरत रहे। ओह घड़ी भारतीय कृषि के दुनिया भर के लोगन द्वारा शोषित आ बंधनयुक्त खेती के संज्ञा देहल गइल।

समय परिवर्तनशील ह। एहसे केहू के समय एक जइसन हमेशा ना रहे। भारत के भी समय आपन करवट लेहलस। इहाँ कृषि के क्षेत्र में नया-नया अनुसंधान होखे लागल। एकर नतीजा ई भइल कि आज अपना देश में कृषि कार्य, बेरोजगार भारतीय खातिर अंतिम ठौर के रूप में ना देखल जाला। काहे कि कृषि क्षेत्र में कुछ कर दिखावे के जज्बा के साथे ना जाने केतना युवा एह क्षेत्र में आगे आइल बा।

भारत सरकार द्वारा भी कृषि क्षेत्र में कृषि आ कृषक के उत्थान खातिर सहयोग दिहल जा रहल बा। जवना के फल भी अब सुखद मिल रहल बा। आज देश में ही ना बल्कि विदेश में भी भारतीय कृषि के डंका बाजता। काहे कि भारत वैश्विक स्तर पर खाद्य निर्यातक के रूप में धीरे-धीरे आपन पहचान बना रहल बा।

अइसे त जवना घड़ी भारत में अपना नागरिकन खातिर खाद्यान्न आपूर्ति एगो समस्या रहे, ओह घड़ी भी "भारत एक कृषि प्रधान देश ह" इहे

बिहार में परम्परागत रूप से मुख्यतः धान आ गेहूँ के ही उत्पादन होत रहल ह। बाकिर आज बिहार में मशरूम से लेके चाय, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी के भी खेती के बढ़ावा देहल जा रहल बा। कृषि क्षेत्र में एह बदलाव से कृषक के स्थिति में स्पष्ट सुधार झलकता। काहेकि एह सब के कारण कृषक के अधिक मुनाफा हो रहल बा। एकरा के देखत जहाँ एक ओर बागवानी के रकबा यानी क्षेत्रफल बढ़ावल जाता उहईं सरकार का ओर से सब्सिडी आ तरह-तरह के प्रोत्साहन भी किसान के देहल जा रहल बा।

भारत के बारे में कहल जात रहे। बाकिर ओह घड़ी के भारत के स्थिति में आ आज के भारत के स्थिति में एक तरह से जमीन-आसमान के फर्क आ गइल बा। एह से पहिले के एह वक्तव्य से विश्व पटल पर भारत के जे छवि बनत रहे ओकरा प्रति लोगन के हृदय में श्रद्धा के भाव ना बल्कि अवहेलना के ही भाव उठत रहे। एह से ओह समय अन्तरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा "भारत एक कृषि प्रधान देश ह" कहला के पीछे भारत के प्रति विश्व-पटल पर विशेष रूप से दुइये तरह के भाव उठत रहे-

1. भारत एगो उद्योग विहीन देश ह।
2. भारत के लोग सिर्फ अपना पेट के आग बुझावे खातिर ही कृषि पर निर्भर बा। यानी भारत अपना नागरिकन के पेट के आग बुझवला के अलावा ओकरा जीवन के अन्य जरूरतन के पूरा करे में अभी भी असमर्थ बा।

हालाँकि एह बात में सत्यता अवश्य बा कि ओह समय भारत के आर्थिक आ कृषि उत्पादन के स्थिति आज के तुलना में काफी दयनीय रहे। फिर भी विश्व मंच पर भारत के स्थिति के जइसन पेंट कइल जात रहे, ओइसन दुर्दशा त भारत के ओह समय कतई ना रहे। बाकिर भारत से ईर्ष्या करे वाला देशन द्वारा भारत के बदनाम करे खातिर ई प्राक्कथन एक तरह से भारत पर जबरदस्ती थोप देहल गइल रहे। काहेकि ओह समय भारत लगातार अपना खाद्य संकट से जूझत रहे। हमरा अपना एह कथन के सत्यापित करे खातिर कहीं दूर नइखे जायेके सिर्फ इतिहास के कुछ पन्ना ही पलटे के बा आ 'पी एल-480', सप्ताह में एक दिन के उपवास आ 'हरित क्रांति' जइसन घटना पर चिन्तन-मनन कइला से ही स्थिति स्पष्ट हो जाई।

2023 तक पहुँचत-पहुँचत भारतीय कृषि-यात्रा में अत्यधिक बदलाव आ गइल बा। आज कृषि क्षेत्र में एतना अधिक तरक्की हो गइल बा कि एह पीढ़ी के लोगन खातिर इतिहास के ओइसन सचाई पर विश्वास कइल भी मुश्किल बा। काहेकि आज भारत का ओर दोसर-दोसर देश उम्मीद के नजर से देख रहल बा। एकर कारण ई बा कि आज भारत वैश्विक बाजार में खाद्य उत्पाद के एगो प्रमुख निर्यातक बन गइल बा।

भारत आज कृषि क्षेत्र में बहुत सुदृढ हो गइल बा। एकर प्रमाण ई बा कि अपना नागरिकन के सुविधा खातिर कोरोना महामारी के समय लॉकडाउन जइसन प्रतिबंध के बीच भारत सरकार द्वारा 'गरीब कल्याण अन्न योजना' के अन्तर्गत 80 करोड़ देश के गरीब आ जरूरतमंद नागरिकन के दु बरिस ले मुफ्त में खाद्यान्न उपलब्ध करावल गइल।

भारत खातिर कबो एगो नया मुहावरा गढ़ल गइल रहे 'शिप टू माउथ'। (जहाज से खाद्य सामान सीधे उपभोक्ता के मुँह तक) एकर कारण ई रहे कि 1960 के दशक में स्वतंत्र भारत में भयंकर सूखा पड़ल रहे। भारत में अन्न के जेतना उत्पादन होत रहे ऊ देश के नागरिकन के भूख शान्त करे खातिर पर्याप्त ना रहे। एहसे खाद्य सामग्री के अन्य देशन से (विशेष रूप से अमेरिका से) भारत के आयात करे के पड़त रहे।

समय के ओह दौर में भारत के स्थिति ओह समय अइसन हो गइल रहे कि विदेशन से आयातित खाद्य पदार्थ के स्टोर करे के समय भी देश के लगे ना रहे।

एकर एगो अर्थ इहो लगावल जा सकेला कि

भारत में खाद्य पदार्थ आयात होई तबे अपना देश के नागरिकन के भोजन नसीब होई। अन्यथा उपासे ही रहे के पड़ी। बाकिर आज के परिस्थिति बिलकुल ही उलट गइल बा। अब भारत के ही 'शिप' कई देशन के 'माउथ्स' के अनाज मुहैया करवा रहल बा। एतने भर ना एगो रिपोर्ट से पता चलल ह कि सन 2025 ले भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में विश्व के शीर्ष पाँच निर्यातक देश में शामिल हो जाई। आज भारत के कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन अइला के कारण आलम ई हो गइल बा कि जीडीपी में देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र के हिस्सेदारी अधिक बा। बाकिर कृषि के एह मुकाम तक पहुँचावे में भारत द्वारा कवनों चमत्कारिक शक्ति के उपयोग नइखे कइल गइल। ई सम्भव भइल बा सरकार के नीति आ किसानन के सहयोग से।

क्षेत्रफल के दृष्टि से भारत विश्व में सातवाँ स्थान पर बा। जबकि जनसंख्या के दृष्टि से चीन के पीछे छोड़त आज भारत पहिला स्थान पर पहुँच गइल बा। बाकिर एकर अर्थ ई ना भइल कि जनसंख्या के ई विस्फोट सिर्फ भारत में ही भइल बा। वास्तविकता त ई बा कि जनसंख्या में आइल एह विस्फोट के कमोबेश कई देशन में देखल जा सकेला। एह से आज सिर्फ भारत में ही ना बल्कि विश्व पटल पर भी जनसंख्या विस्फोट एगो गंभीर समस्या बन गइल बा। एगो समय रहे जब पानी पर पसरत तेल से भी तेज रफ्तार से बढ़त विश्व जनसंख्या के भोजन आपूर्ति खातिर विश्व में खाद्य उत्पादन के होड़ में तरह-तरह के रासायनिक खाद आ जहरीला कीटनाशकन के उपयोग धड़ल्ले से होखे लागल रहे। एह रासायनिक खाद आ जहरीला कीटनाशकन के उपयोग के चलते प्रकृति के जैविक आ अजैविक पदार्थन के बीच आदान-प्रदान-चक्र यानी इकोलॉजी सिस्टम प्रभावित भइल। जवना के परिणाम स्वरुप भूमि के उर्वरा शक्ति क्रमशः क्षीण पड़े लागल। साथ ही वातावरण भी प्रदूषित होखे लागल। जवना के सीधा असर आदमी के स्वास्थ्य पर पड़ल आ ओकरा स्वास्थ्य में गिरावट देखल गइल।

हालाँकि भारत में प्राचीन काल से कवनों किसान के परिकल्पना ओकरा गाय-बैल के बिना कइले ना जा सकत रहे। पहिले कवनों किसान के रुतबा एह बात से भी बढ़ जात रहे कि ओकरा बथान में कई जोड़ी बैल बा? एह बैलन के महत्त्व खाली हल जोते खातिर ही ना रहे बल्कि ओकरा गोबर से जवन खाद बनत रहे ऊ भी उत्तम किस्म के होत रहे। काहेकि ई खाद मनुष्य के स्वास्थ्य पर अनुकूल असर डालत रहे। साथ ही प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती भी होत रहे। जवना के चलते इकोलॉजीकल सिस्टम निरन्तर चलत रहे। एकर नतीजा ई होत रहे कि वायु, जल, भूमि आ वातावरण कभी भी प्रदूषित ना होखे पावे। हमरा अपना एह बात के प्रमाण देबे खातिर बस रउआ एतने भर समझे के बा कि भारतीय संस्कृति में काहे गाय के अत्यधिक महत्त्व देहल गइल बा? आ काहे अपना देश में कृषि के साथ गौ पालन के भी प्रचलन बा?

बाकिर हरित क्रान्ति के समय एह परम्परा में तनिक व्यवधान पड़ल। काहेकि अपना देश वासियन के क्षुधा के तृप्त करे खातिर अब भारत दोसरा देश के शिप के इंतजार करे के मूड में ना रहे। एह से भारत के बढ़त जनसंख्या के हिसाब से देश में अनाज पैदा कइल जरूरी हो गइल। इहे कारण रहे, जवना के चलते अधिक उत्पादन के लोभ में खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरक आ कीट नाशक के उपयोग करे के पड़ल। एकरा चलते किसानी में भी अधिक लागत आवे लागल। जवना के परिणाम स्वरुप सीमान्त आ छोट किसान के कम जोत में भी अधिक लागत आवत रहे। एकरा साथ ही अत्यधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरक आ कीट नाशक से सिर्फ वायु, जल, भूमि आ वातावरण ही प्रदूषित ना होत रहे बल्कि जहरीला कीट नाशकन के उपयोग से खाद्य पदार्थ भी स्वाभाविक रूप से शरीर खातिर हानिकारक हो जात रहे। एह सब समस्या से निजात पावे खातिर एने कई बरिसन से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिद्धांत पर अमल करे के सिफारिश होत रहल ह। जवना में कृषि विभाग द्वारा एह विशेष प्रकार

के खेती के अपनावे के सुझाव देहल जात रहल बा। एह विशेष प्रकार के खेती के आज 'जैविक खेती', या 'आर्गेनिक फार्मिंग' कहल जाला।

हालाँकि भारत में पारम्परिक खेती एही तरीका से होत रहल बा। बाकिर आधुनिक काल में एकर श्रेय ब्रिटिश वनस्पति शास्त्री सर अल्बर्ट हॉवर्ड के जाता। काहेकि ई एगो कृषि-शोधकर्ता रहलें आ सन 1905-1924 तक अपना पत्नी गैब्रियल हॉवर्ड के साथे मिलके शोध कइले। अपना सिद्धांत के ऊ अपना पुस्तक 'An Agriculture Testament' में स्थान देहलें। ई पुस्तक 1940 में प्रकाशित भइल। जवना के एह कृषि-शोध से विद्वान लोग बहुत प्रभावित भइल। काहेकि ऊ अपना ओह शोध में पारम्परिक आ टिकाऊ कृषि-पद्धति से प्रेरणा लेहले रहलें। एह से पश्चिम में एह पद्धति के अपनावे के वकालत कइल गइल आ सर अल्बर्ट हॉवर्ड के जैविक खेती के जनक मानल गइल। हालाँकि भारत में जैविक खेती के जनक के रूप में डॉक्टर जयपाल के नाम आवेला। काहेकि डॉक्टर जयपाल के भाई के देहान्त कैंसर से हो गइल। अपना भाई के मृत्यु से उनका बहुत दुःख भइल आ ऊ ओकरा बाद अपना के पूरा तरह से जैविक खेती के शोध, विकास में झोंक देहलें।

जइसन कि हमनी जानतानी कि भारत के प्रत्येक नागरिक के दो जून के भोजन मुहैया करवावे खातिर खेती के उत्पादन बढ़ावल जरूरी रहे। एह से अधिक उत्पादन खातिर खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरक आ कीट नाशक के उपयोग करे के पड़त रहे। जवना के चलते सीमान्त आ छोट किसानन के कम जोत में भी अधिक लागत आवे लागल। एकरा साथ ही एकरा चलते अपना इहाँ के भूमि, जल, वायु आ वातावरण भी क्रमशः प्रदुषित होखे लागल। एह सबके साथ ही पैदावार भी स्तरीय ना होत रहे। काहेकि ऊ स्वास्थ्य खातिर बहुत हानिकारक होत रहे।

जैविक खेती

एह सब समस्या से निपटे खातिर कुछ बरिसन से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिद्धांत पर खेती के सिफारिश कइल जा रहल बा। सरकार के कृषि विभाग के ओर से भी एह विशेष प्रकार के खेती यानी 'जैविक खेती' के अपनावे के सिर्फ सलाह ही नइखे देहल जात बल्कि भारत सरकार के ओर से एकर प्रचार-प्रसार भी कइल जा रहल बा। मई 2002 में राष्ट्रीय स्तर पर कृषि विभाग के तत्त्वावधान में भोपाल में एगो जैविक सेमिनार के आयोजन भइल। जवना में राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञन आ कृषि के अनुभवी किसानन द्वारा भाग लेहल गइल। एह सेमिनार में 'जैविक खेती' के प्रचार-प्रसार खातिर चलित झाँकी, पोस्टर, वैनर, जैविक हाट, कठपुतली प्रदर्शन, साहित्य, एकल नाटक के साथ ही एह क्षेत्र के विशेषज्ञन द्वारा उद्बोधन आदि के माध्यम से किसान भाईयन में जन-जाग्रति फइलावल गइल आ आजो सरकार 'जैविक खेती' के प्रति गंभीर बिया।

किसानन के आमदनी बढ़ावे खातिर आ कृषि कार्य में लागत के कम करे खातिर कृषि में नया-नया तकनीकि अपनावल जा रहल बा आ कृषि कार्य में मदद खातिर तरह-तरह के मशीन के उत्पादन हो रहल बा। एकरा चलते 16-17 साल में फसल के उत्पादन आ उत्पादकता लगभग दूना हो गइल बा। उम्मीद बा कि भारतीय कृषक के आय भी क्रमशः देश के औसत आय के बराबर हो जाई।

मध्य प्रदेश सरकार सबसे पहिले 2001-2002 में 'जैविक खेती' के आन्दोलन चलाके प्रत्येक ज़िला के प्रत्येक ब्लॉक से एक गाँव में 'जैविक खेती' के प्रारम्भ करवइलस।

'जैविक खेती' से बहुत लाभ होला। एह लाभ के हम एह तरह से देख सकेनीं-

1. एकरा से भूमि के उर्वरा शक्ति में वृद्धि होला।
2. सिंचाई अन्तराल में वृद्धि होला।
3. एकरा से कृषक के रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होखे के कारण लागत में कमी आवेला जबकि उत्पादन में वृद्धि होला।
4. एकरा में भूमि से वाष्पीकरण अपेक्षाकृत कम होला।
5. जवना के परिणाम स्वरुप भूमि के जल-स्तर में वृद्धि होला। एह से माटी, खाद्य पदार्थ आ पानी के माध्यम से प्रदूषण में भी कमी आवेला।
6. कृषि के एह विधि में कचरा के उपयोग होला।
7. एह विधि से खेती करे में किसान के लागत में कमी आवेला।
8. अन्तरराष्ट्रीय बाजार के स्पर्धा में भी जैविक उत्पाद अपना गुणवत्ता के कारण स्पर्धा के कसौटी पर भी खड़ा उतरेला।
9. अगर रासायनिक कृषि आ जैविक कृषि पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार कइल जाव त जैविक कृषि रासायनिक कृषि के बराबर चाहे ओकरा से अधिक उत्पादन देला।

अब हम बात करतानी जैविक या कार्बनिक खाद-वर्ग के। एकरा अन्तर्गत पशु-पक्षियन के मल-मूत्र आ शरीर के अवशेष, चाहे पेड़-पौधा से प्राप्त होखे वाला पदार्थ आवेला। एह से अइसन खादन के व्यवहार से माटी के भौतिक अवस्था में सुधार होला। मृदा में ह्यूमन के निर्माण होला। साथ ही अणुजीवियन के विकास खातिर उपयुक्त वातावरण भी बनेला।

किसान भाई के आमदनी बढ़ावे खातिर खेती के जे पारम्परिक तरीका बा ओकरा में संशोधन भी कइल गइल बा। जवना के चलते आधुनिक खेती के तरीका से कृषक लोगन के कम लागत में अधिक आमदनी हो रहल बा। इहे कारण बा कि आज छोट चाहे सीमान्त किसान भाई कम संसाधन में भी अधिक लाभ ले रहल बाड़ें। ई चमत्कार हो रहल बा भारतीय कृषक लोगन द्वारा अपना किसानी में दू तरह के विधि के शामिल कइला से। ई दुनु विधि-मिश्रित कृषि आ सह-फसल कृषि के नाम से जानल जाला।

जवना किसानन के लगे जमीन कम बा आ आर्थिक संसाधन के भी ओकरा कमी बा, ऊ लोग एह दुनु विधियन के भरपूर लाभ उठा सकेला। आधुनिक कृषि के ई दुनु तरीका कृषक लोगन के बहुत कम जमीन में भी ओह लोगन के बढ़िया उत्पादन दिलावे में मदद करेला। एहमें पहिला ह मिश्रित कृषि आ दूसरा ह सह-फसल कृषि।

मिश्रित कृषि- जइसन कि एकरा नाम से ही स्पष्ट बा कि ई खालिस ना ह बल्कि एमे कुछ मिलावल बा। कहे के अर्थ ई कि जब किसान अपना कृषि कार्य के साथ ही पशुपालन, मछली पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी फार्मिंग जइसन कार्य करेला जवना से ओकरा कृषि कार्य के अतिरिक्त उत्पादन होला त एह विधि के मिश्रित कृषि या खेती कहल जाला। एह विधि से कृषक लोगन के आमदनी दुगुना हो जाला। एह विधि में किसान अपना खेत में ज्यादा फसल भी उगावेलें। जवना में पारम्परिक आ दलहनी फसलन के मुख्य रूप में लेहल जाला।

मिश्रित कृषि या खेती से लाभ- मिश्रित खेती करे वाला किसान लोगन के कई तरह से लाभ पहुँचेला। पहिला त ई कि कृषि के एह विधि से कृषक लोगन के आमदनी दुगुना हो जाला। दोसर ई कि कृषक लोगन के अपना कृषि के साथ ही दोसर रोजगार के साधन भी रहेला। एह से अगर ओह रोजगार में कवनों तरह के ऊँच-नीच भइल त ओह लोगन के कृषि के मदद रहेला आ कृषि में कवनों तरह के आफत आइल त कृषक लोगन के रोजगार के सहारा रहेला।

हमरा दृष्टि से मिश्रित खेती के जे सबसे बड़ा लाभ बा ऊ ई बा कि कवनों कारण से पहिले जब कृषक लोगन के फसल खराब हो जाई त एक ओर ओह लोग खातिर भुखमरी के स्थिति उत्पन्न हो जाई त दोसरा ओर कर्जा लेके किसानी कइला पर फसल बर्बाद भइला पर आत्महत्या करे के भी स्थिति उत्पन्न हो जाई। बाकिर अब कृषक के ओह स्थिति में ऊबारे में मिश्रित खेती से मदद मिलेला।

सह-फसल कृषि- सह-फसल कृषि के विधि हमनी किहाँ के किसानन में बहुत लोकप्रिय बा। काहेकि खेती के एह विधि में कम जमीन वाला किसान भी अपना जमीन के एके टुकड़ा में एक से अधिक फसल उगा सकेला। जवना में कम से कम दू चाहे दू से अधिक फसल भी ऊ उगा के आपन अच्छा कमाई कर सकेला। खेती के एह विधि में परम्परागत अनाजन आ दलहन फसलन के साथे खेत के मेड़न पर किसान तरह-तरह के सब्जी, औषधीय फसल आदि के खेती भी करेला। एह खेती के अन्तर्गत बाग-बगीचा में पेड़न के छाँव में, जहाँ धूप बराबर ना पड़े ओइजा भी अइसन फरहरी बोअल जाला जवना में सीधे चाहे अधिक धूप के जरूरत नइखे। अइसन स्थान पर कुछ फरहरी उगावल जाला, चाहे हर्बल खेती भी कइल जाला।

सह-फसल कृषि से लाभ-

1. एह तरह के खेती में ज्यादा समय लागे वाला फसलन का संगे कम समय लागे वाला फसल लगवला पर किसान भाई के बीच-बीच में आमदनी के साधन रहेला।
2. सह-फसल कृषि कइला से माटी के उर्वरा शक्ति बढ़ेला। जवना के परिणाम स्वरूप कृषक लोगन के पोषक प्रबंधन पर होखे वाला खर्च में बचत होला।
3. एह विधि से खेती कइला पर फसल आपस में ही पोषण के काम करेले। जवना के चलते स्तरीय उत्पादन होखे में मदद मिलेला।
4. खेती के एह विधि में नुकसान के संभावना बहुत कम रहेला। एकरा साथ ही किसान एक ही जमीन में अलग-अलग फसल के उत्पादन कर सकेला।
5. सह-फसल कृषि कइला पर किसान के भूमि, श्रम आ पूँजी के सही इस्तेमाल करे में मदद मिलेला।
6. सह-फसल कृषि कइला से किसान मौसम के अनुसार फरहरी अपना खेत में उगा के बीच-बीच में आपन आमदनी कर सकेला।

विनिर्माण

कृषक वर्ग के आर्थिक सुधार करे में विनिर्माण के भी महत्त्वपूर्ण स्थान बा। विनिर्माण के शाब्दिक अर्थ होला 'हाथ से बनावल'। बाकिर अब समय के साथ हाथ के स्थान मशीन ले लेहले बा। अब बड़ा पैमाना पर मशीन द्वारा माल के उत्पादन कइल जा रहल बा। एह से वर्तमान संदर्भ में विनिर्माण के अर्थ हो गइल बा मशीन के मदद से कच्चा माल से ज्यादा मात्रा में अंतिम माल बनावे के प्रक्रिया।

जब कच्चा माल से अपेक्षाकृत अधिक अनुपात में मूल्यवान उत्पाद (उपयोग के वस्तु) कइल जाला तब एह प्रक्रिया के विनिर्माण चाहे वस्तु निर्माण कहल जाला। एकरा के एह तरह भी समझल जा सकेला कि कच्चा माल से जीवन उपयोगी वस्तु के निर्माण जे उपभोक्ता द्वारा उपयोग में ले आवल जाला ऊ विनिर्माण ह। जइसे- कपास से कपड़ा तइयार कइल, गन्ना से गुड़ बनावल, सरसों से तेल पेरल आदि। जइसन कि हमनी सभे जानतानी कि जुलाहा आ बुनकर लोग ना जाने केतना सौ साल से कपड़ा बुने के काम करत आ रहल बा। किसान लोगन द्वारा भी बड़का-बड़का कड़ाह में ईख के रस से गुड़ बनावे के काम भी ना जाने कई सौ साल से अपना इहाँ हो रहल बा। अइसही कोल्हू के बैल से तेल पेरे के रोजगार भी बहुत पुराना ह। इहाँ तक कि एह रोजगार से जुड़ल लोगन के 'तेली' नाम से एगो अलग जाति ही हो गइल बा। ई सब विनिर्माण में ही आवेला। फर्क बस एतना बा कि ई काम आदमी स्वयं करत रहल ह। बाकिर अब ई मशीन के मदद से होता।

भारत में घरेलू उद्योग से शुरू भइल एह विनिर्माण खातिर असंख्य उद्योग आज पूरा देश में स्थापित हो चुकल बा। बाकिर एह संदर्भ में कृषि आ उद्योग के एक-दूसरा से पृथक समझला के जरूरत नइखे बल्कि ई त एक-दूसरा के पूरक है। काहेकि कृषि पर आधारित उद्योग से कृषि पैदावार के बढ़ोत्तरी के प्रोत्साहन मिलेला। एकर कारण ई बा कि ई उद्योग कच्चा माल खातिर कृषि पर निर्भर करेला त दोसरा ओर किसान अपना किसानी के उपयुक्त कृषि उपकरण, खाद, कीटनाशक, दवाई, पाइप आदि खातिर उद्योग पर निर्भर करेला। ई दुनु जब साधे मिल जाला त कृषि उत्पादन में बढोतरी होला।

भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्रीमंडल द्वारा 25 अक्तूबर सन 2011 के राष्ट्रीय विनिर्माण नीति (National Manufactoring Policy) के मंजूरी देहल गइल। एह नीति के लक्ष्य रहे कि दस साल में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में विनिर्माण क्षेत्र के हिस्सेदारी एतना बढ़ावल जाव जवना से करोड़ों आदमी के रोजगार सृजित करे के लक्ष्य प्राप्त कइल जा सके।

भारतीय अर्थव्यवस्था के शीर्ष के उप-क्षेत्रन में विनिर्माण क्षेत्र के बड़का भागीदारी बा। एह क्षेत्र में भी सबसे महत्त्वपूर्ण आ बड़ा हिस्सा बा खाद्य उत्पाद, बुनियादी धातु, रबर, पेट्रोकेमिकल रसायन आ विद्युत मशीनरी आदि के।

विनिर्माण से लाभ- विनिर्माण से कृषक लोगन के आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनावे में आ बेरोजगार लोगन के रोजगार मुहैया करावे में बहुत मदद मिलल बा। विनिर्माण से लाभ के हम एह तरह से समझ सकेनी-

1. एकरा से कृषि के आधुनिक बनावे में मदद मिलेला।
2. एकरा से रोजगार प्रदान करे में मदद मिलेला।
3. एकरा से कृषक लोगन के सिर्फ. कृषि उत्पादन पर ही उनकर निर्भरता कम कइल जाला।
4. एकरा से बेरोजगारी आ गरीबी उन्मूलन में मदद भी मिलेला।
5. विनिर्माण से क्षेत्रीय असमानता के भी कम कइल जा सकेला।

नवाचार

कृषक लोगन के आमदनी बढ़ावे खातिर कृषि क्षेत्र में नवाचार के भी अब बढ़ावा देहल जा रहल बा। आज दुनिया भर में खाद्यान्न आपूर्ति खातिर प्रसिद्ध भारत अब फल, सब्जी, औषधीय मसाला के भी नया रिकॉर्ड बना रहल बा। बाकिर एकर अर्थ ई ना भइल कि देश में धान, गेहूँ, मकई आ गन्ना आदि के उत्पादन में कमी आइल बा। कृषक लोगन के आमदनी बढ़ावे खातिर सरकार के ओर से अनाज के साथ ही बागवानी आ फल के उत्पादन पर भी बल देहल जा रहल बा। भारत के हर क्षेत्र में उहाँ के माटी के अनुरूप फल आ सब्जी के उपज बढ़ावे खातिर प्रोत्साहित कइल जा रहल बा। सब्जी आ फल के बागवानी के प्रचलन उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश से लेके पहाड़ी इलाकन में भी बढ़ल बा।

बिहार भी एह प्रचलन से अछूता नइखे। बिहार में परम्परागत रूप से मुख्यतः धान आ गेहूँ के ही उत्पादन होत रहल ह। बाकिर आज बिहार में मशरूम से लेके चाय, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी के भी खेती के बढ़ावा देहल जा रहल बा। कृषि क्षेत्र में एह बदलाव से कृषक के स्थिति में स्पष्ट सुधार झलकता। काहेकि एह सब के कारण कृषक के अधिक मुनाफा हो रहल बा। एकरा के देखत जहाँ एक ओर बागवानी के रकबा यानी क्षेत्रफल बढ़ावल जाता उहईं सरकार का ओर से सब्सिडी आ तरह-तरह के प्रोत्साहन भी किसान के देहल जा रहल बा।

बिहार में बागवानी खातिर जगह-जगह फसलन के रकबा बढ़ावल जा रहल बा। एगो रिपोर्ट के मुताबिक औरंगाबाद के 35 एकड़ से अधिक के रकबा में स्ट्रॉबेरी के खेती शुरू कइल गइल बा। उहईं दोसरा ओर किशनगंज में चाय के रकबा बढ़के 10,000 एकड़ ले पहुँच गइल बा।

ड्रैगन फ्रुट के बिहार में प्रोत्साहित करे खातिर सरकार के ओर से अनुदान मिल रहल बा। बिहार के किशनगंज में साल 1995 में चाय के खेती शुरू कइल गइल। साल 2012-13 के दौरान स्ट्रॉबेरी आ ड्रैगन फ्रूट के रकबा बढ़ावे पर भी बल देहल गइल।

हाल ही के एगो रिपोर्ट से ई बात सामने आइल बा कि बिहार में देश के कुल कृषि क्षेत्रफल के सिर्फ. 3.8 प्रतिशत हिस्सा ही बा। जबकि एही हिस्सा पर देश के 8.6% आबादी निर्भर बा। राज्य में कुल कृषि क्षेत्रफल के 97% पर लघु आ सीमान्त किसान के अधिकार बा। कहे के अर्थ ई कि राज्य के ज्यादातर उत्पाद छोट-छोट जोत पर ही निर्भर बा। बावजूद एकरा इहाँ के किसान लोग अपना छोट-छोट जमीन के टुकड़ा पर भी सब्जी-फल के अधिकाधिक उत्पादन हासिल करेके हुनर सीख लेहले बा। एकर नतीजा सुखद भइल बा। आज सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में बिहार देश के चउथा पायदान पर खडा बा। फल के क्षेत्र में सातवाँ स्थान पर बा। एकरा साथ ही शहद के उत्पादन पर अगर हम नेशनल रिकॉर्ड पर नजर डालेब त पायेब कि बिहार में 20,000 टन शहद के उत्पादन भी हो रहल बा। जवना के परिणाम स्वरुप एह क्षेत्र में भी बिहार चउथा स्थान पर बा।

चाय खातिर मशहूर किशनगंज में ड्रैगन फ्रूट के खेती खातिर सरकार का ओर से बढ़ावा देहल जा रहल बा। एह फ्रूट के उगावे खातिर 40,000 रुपया के अनुदान मिल रहल बा। हालाँकि ड्रैगन फ्रूट के लगावे में शुरूआती लागत अधिक आवेला। बाकिर कुछे बरीस में एकर मुनाफा डबल हो जाला। एकरा में तीन से चार बरीस के अंदर ही शुरूआती लागत के साथे मुनाफा भी आवे लागेला।

कृषक लोगन के सेब के खेती खातिर भी सरकार के ओर से सब्सिडी मिल रहल बा। बिहार आज देश के सबसे बड़ा मशरुम उत्पादक बन गइल बा। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रन में रोजगार के अवसर प्रदान करे खातिर सरकार के ओर से मशरुम उत्पादन के क्षेत्र में अनुदान भी देहल जा रहल बा।

एही तरह से टिंडा, ब्रोकली, ब्रैसिका ओलेरेशिया जइसन अनेक देशी-विदेशी सब्जियन के उत्पादन पर भी ध्यान देहल जा रहल बा आ आज ई देश के कोना-कोना में मिल रहल बा। अगर रउआ पास पइसा बा त बाजार में सब्जी के कमी नइखे। पहिले आलू, प्याज के छोड़ के हर सब्जी अपना सीजने में मिलत रहल ह। एह से घर-घर में फूलगोबी, कुनरी, त्रिकोल, मुरई के पत्ता जइसन कई तरह के सब्जी के सुखाके रखे के परम्परा रहल ह। बाकिर आज कम चाहे बेसी हर सब्जी सालो भर मिल रहल बा। ई सब संभव भइल बा आधुनिक तकनीक के उपयोग आ कृषक के कठिन मेहनत से।

किसान के आमदनी बढ़ावे खातिर सरकार द्वारा तकनीकी आ मशीनीकरण दुनु के बढ़ावा देहल जा रहल बा। एकरा खातिर सब्सिडी योजना भी चलावल जा रहल बा। सरकार के एह पहल से कृषक भी प्रभावित बाड़ें आ कृषि उपकरण आ यंत्रन में भी रुचि भी ले रहल बाड़न।

चूँकि कोई भी मशीन होई त समय-समय पर ओकरा में खराबी भी आ सकेला। ओह मशीनन के मरम्मत खातिर किसान लोगन के शहर का ओर भागे के ना पड़े, एहसे अब गाँव में ही ओह मशीनन खातिर टेक्नीशियन तइयार कइल जा रहल बा।

भारत गाँव में बसेला। एह से अगर भारत के समृद्ध करे के बा त भारतीय किसान के समृद्ध करहीं के पड़ी। सरकारी नीति आ किसान के मेहनत से पहिले के अपेक्षाकृत कृषक लोगन के स्थिति में भी बहुत सुधार आइल बा।

जइसन की हमनी जानतानी कि जीडीपी में देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र के हिस्सेदारी 14 फीसदी से भी अधिक हो गइल बा। बाकिर एतना कइला के बावजूद भारतीय किसान के आय राष्ट्रीय औसत आय के बराबर नइखे हो सकल। एहसे किसानन के आमदनी बढ़ावे खातिर आ कृषि कार्य में लागत के कम करे खातिर कृषि में नया-नया तकनीकि अपनावल जा रहल बा आ कृषि कार्य में मदद खातिर तरह-तरह-तरह के मशीन के उत्पादन हो रहल बा। एकरा चलते 16-17 साल में फसल के उत्पादन आ उत्पादकता लगभग दूना हो गइल बा। उम्मीद बा कि भारतीय कृषक के आय भी क्रमशः देश के औसत आय के बराबर हो जाई। एही आशा आ विश्वास के साथ अब हम आपन बात समाप्त कर तानी।

परिचयःडॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद के हिन्दी आ भोजपुरी में कविता, कहानी, उपन्यास आ निबन्ध प्रकाशित। प्रसिद्ध यमनी उपन्यास 'अल रहीना' (अरबी) के हिन्दी अनुवाद 'बन्धक' नाम से प्रकाशित। अमेरिका, चीन, जार्डन यमन आ भारत में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय समारोहन में शामिल, शोधपत्र प्रस्तुति आ काव्यपाठ। कविता अंग्रेजी, चीनी आ अरबी भाषा में अनूदित। संप्रति स्वतंत्र लेखन व पूर्व शिक्षिका।

आवरण कथा

हरेन्द्र कुमार पाण्डेय

भोजपुरी प्रदेश में कृषि उत्पाद-दशा आ दिशा

आजो प्रत्येक भोजपुरिआ के आपन गांव के जानकारी अनिवार्य बा भले ऊ तीन पीढ़ी पहिले गांव छोड़ देले होखे। उनके खातिर गांव-जवार परिचय-पत्र ह जवना के महत्व आधार कार्ड से ज्यादा बा। कृषि पर आधारित सभ्यता के उत्स वैदिक काल बा। भारतीय सभ्यता पूर्ण रूप से कृषि आधारित बा जवना के प्रमाण के जरूरत नइखे। पश्चिमी सभ्यता जेकर पीछा आज संसार कर रहल बा, उहां के लोग दसवीं सताब्दी तक रसोई में खाना पकावे के ना जानत रहे। सब कुछ आग में सेंक के खाइल जात रहे, जइसे आज बार बी किउ (BAR-B-Q) वाला फैशन भइल बा।

आजो प्रत्येक भोजपुरिआ के आपन गांव के जानकारी अनिवार्य बा भले ऊ तीन पीढ़ी पहिले गांव छोड़ देले होखे। उनके खातिर गांव-जवार परिचय-पत्र ह जवना के महत्व आधार कार्ड से ज्यादा बा।

कृषि पर आधारित सभ्यता के उत्स वैदिक काल बा। भारतीय सभ्यता पूर्ण रूप से कृषि आधारित बा जवना के प्रमाण के जरूरत नइखे। पश्चिमी सभ्यता जेकर पीछा आज संसार कर रहल बा, उहां के लोग दसवीं सताब्दी तक रसोई में खाना पकावे के ना जानत रहे। सब कुछ आग में सेंक के खाइल जात रहे, जइसे आज बार बी किउ (BAR-B-Q) वाला फैशन भइल बा।

लेकिन बात इ नइखे जे भारत मे सब कुछ कृषि आधारित बा, बात इ बा जे आज के तारीख में जब की सारा जगत एगो गाँव जइसन हो गइल बा, आपन अस्तित्व कइसे बचावल जाव। दोसरा क्षेत्र के तरह कृषि क्षेत्र में भी आधुनिक जुग, जवन पूरा तरह से पाश्चात्य धारना पर केन्द्रित बा, के प्रभाव स्पस्ट दीखता। सबसे मुस्किल बा जे जवना चीज पर केन्द्रित करे के चाहीं, वोकर उपयोग सब लोग अपना-अपना स्वार्थ में कर रहल बारे। खास कर के भोजपुरिया क्षेत्र जहाँ कृषि भूमि जनसंख्या के तुलना में बहुत ही कम बा, उहाँ खातिर सबकुछ अलग से सोचे के आवश्यकता बा। इ क्षेत्र में कृषि के औद्योगिक इकाई के तरह समझला से केवल सामाजिक समरसता के नुकसान पहुंची।

कृषि क्रान्ति आ औद्योगिक क्रान्ति में संबंध-

कृषि क्रान्ति आ औद्योगिक क्रान्ति के संबंध के बारे में ध्यान दीहल जाव। पाश्चात्य विचार के अनुसार जब कम आदमी कृषि से ज्यादा उत्पादन लेबे में सफल होखे लागल तब अधिक आदमी उद्योग खातिर उपलब्ध होखे लगलन। फलस्वरूप इंग्लैंड के कोना-कोना से बढ़ के ओकरा उपनिवेश में भी उद्योग स्थापित होखे लागल। उद्योग जगत के अधिक उत्पादन खातिर खरीददार चाही त रेल, रास्ता बनावे में और ज्यादा लोग के जरूरत होखे लागल। एसे आउर ज्यादा लोग गाँव से शहर जाये लगलन। हलाकि गाँव से शहर पलायन के कारण कम से कम भारत में कुछ अलग बा। दीर्घ उपनिवेशवाद के अभिशाप स्वरुप इहाँ के स्वपोषित कृषि प्रणाली बुरा तरह प्रभावित भइल रहे जइसन इतिहास बतावता। अंग्रेजी सरकार के खिलाफ आन्दोलन के आरम्भ नील के खेती से ही भइल रहे। संछेप में कहल जाव त भारत में ब्रिटिश औद्योगीकरण के कारण लोग खेती से पलायन कइलस

आजादी के बाद भारत में खाद्य पदार्थ के चरम अभाव दीखल रहे। खासकर चीन के युद्ध के समय भारत दाना-दाना के मुहताज रहे। तत्कालीन प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के आह्वान "जय जवान जय किसान" से भारत में कृषि क्रान्ति के आरम्भ मानल जा सकेला। ओकरा बाद के सब सरकार कृषि पर ध्यान दिहलस जवना से आज भारत ना केवल खाद्य सामग्री खातिर स्वनिर्भर बा बल्कि निर्यात भी कर रहल बा (दाल आ तेल छोड़के)।

जवन आज भी जारी बा। जे होखे ज्यादा पीछे गइला से प्रसंग भटक जाई, एसे सीधे-साधे वर्तमान में आवतानी।

भारत में कृषि क्रान्ति

आजादी के बाद भारत में खाद्य पदार्थ के चरम अभाव दीखल रहे। खासकर चीन के युद्ध के समय भारत दाना-दाना के मुहताज रहे। तत्कालीन प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के आह्वान "जय जवान जय किसान" से भारत में कृषि क्रान्ति के आरम्भ मानल जा सकेला। ओकरा बाद के सब सरकार कृषि पर ध्यान दिहलस जवना से आज भारत न केवल खाद्य सामग्री खातिर स्वनिर्भर बा बल्कि निर्यात भी कर रहल बा (दाल आ तेल छोड़के)। कृषि के बाद दूध क्रान्ति आइल। नीचे चार्ट देखल जाव जवना में कृषि क्रान्ति के एकत्र कइल बा-

सम्बंधित उत्पाद	सन्दर्भ	समय	क्रन्तिजनक
राउंड क्रान्ति	आलू	१९६५-२००५	
हरित क्रान्ति	चावल व गेहूं	१९६६-१९६७	एम. एस. स्वामीनाथन
स्लेटी (Grey) क्रान्ति	खाद व ऊन	१९६०-१९७०	
गुलाबी क्रान्ति	झींगा व प्याज	१९७०	दुर्गेश पटेल
सफेद क्रान्ति	दूध	१९७०-१९९६	वर्घेस कुरिएन
नीली क्रान्ति	मछली	१९८६-१९९०	डा. अरुण कृष्णन
लाल क्रान्ति	मांस व टमाटर	१९८०	विशाल तिवारी
पीला क्रान्ति	तेलबीज	१९८६-९०	सैम पित्रोदा
भूरी क्रान्ति	चमड़ा व कोको		हीरालाल चौधरी
स्वर्णिम धागा	जूट	१९९०	
स्वर्ण क्रान्ति	फल शहद	१९९१-२००३	निरपख तुताज
सिल्वर क्रान्ति	अंडा	२०००	राजीव गाँधी
प्रोटीन क्रान्ति	कृषि	२०१४-२०२०	नरेन्द्र मोदी

ऊपर के चार्ट से स्पष्ट दीखता कि कृषि से जुडल प्रत्येक क्षेत्र पर एक-एक समय सरकार विशेस ध्यान दिहलस जवना के परिणाम भी सामने बा। खाद्य सामग्री के अलावा सफेद क्रान्ति से भारत के हर नागरिक परिचित बारन। गुजरात में को-ऑपरेटिव से शुरू भइल रहे दूध के काम। आज सारा देश आ देश के बहार भी मदर डेरी के नाम बा। एकरे चलते आज दूध दही हर घर पहुँच रहल बा। एकर इतिहास बतावता जे गुजरात में दूध उत्पादक के एगो को-ऑपरेटिव सोसाइटी से इ आन्दोलन के आरम्भ भइल रहे जवना के हालत भोजपुरिया प्रदेश के तत्कालीन को-ऑपरेटिव सोसाइटी वाला ही रहे- गंवई राजनीति से जर्जरित। लेकिन कुरिअन साहब सब चीज के बदल दिहलन। मदर डेरी के नाम से ऊ मार्केटिंग पर ध्यान केन्द्रित कइलन। माने दूध हर हालत हर मौसम में बाजार में पहुँच जाये के चाहीं। इ ना कि खरीददार खड़ा बा आ दूध के गाड़ी ना पहुँचल। दूसरा तरफ दूध के आमद पर भी ध्यान दीहल गइल जेसे हर मौसम में दूध के बांछित परिणाम उपलब्ध होखे। एकरा खातिर पाउडर दूध के आयात भी कइल जाव। दूसरा चरण में अधिक दूध से दोसर दूध जनित सामान जइसे मखन,चीज,दही,चकलेट आदि चीज के उत्पादन शुरू भइल। हमरा समझ में मदरडेरी के पदचिन्ह पर ही भोजपुरी प्रदेश में आर्थिक उन्नयन ले आवल जा सकता।

जइसन कि आपसब के मालूम बा आर्थिक गतिविधि के नियंत्रण बाजार से होला। बाजार अपने आप में एगो बड़हन विषय बा। बाजार माने इ नइखे जे खेतिहर अपना खेत से आवश्यकता से अधिक जवन सामान होखे वोके लेके बाजार का दिन आ जइहें आ जरूरत वाला उनका से मोल भाव कर के खरीद लीहें। यानी सबकुछ दू व्यक्ति के मोल तोल से हो जाई। आज भी अइसन तर्क करे वाला के कमी नइखे कि अरे भाई आलू खेत में चार रुपये किलो

मिलता आ इहाँ 14 रुपये। आ एकर दोषी निकम्मा सरकार बा। अब असल कारण देखल जाव। आलू खेत से निकलला के बाद कतना प्रक्रिया से गुजरता। लोडिंग से शुरू होता-मजदूरी लागी, पैकेजिंग-बस्ता आ मजदूरी, उहाँ से कोल्ड स्टोरेज- गाड़ी भाडा आ मजदूरी। कोल्ड स्टोरेज से निकलला के बाद के प्रक्रिया- शायद कम लोग के मालूम होखे- मिट्टी आ हीट ट्रीटमेंट- जवना से आलू अपना मूल रूप में दिखेला, चुपसे ना। वोकरा बाद होल सेलर से लेके खुदरा बिक्रेता तक के आपन-आपन मजदूरी बा। एही तरह हर सामान अलग-अलग प्रक्रिया से गुजर के ग्राहक तक पहुँचता।

अब सोचल जाव भोजपुरिया प्रदेश में कृषि कइसे बाँची। ना त इहाँ भूमि के प्रचुरता बा, ना त बाजार बा। खेत आ बाजार के बीच वाला चीज त पूरा तरह गायब बा। हाँ, बा त खाली उपभोक्ता। दूध के पैकेट-खरीददार बा, अंडा-खरीददार बा, मछली-खरीददार बा, आलू-खरीददार बा। एगो नया क्लास खरीददार भइल बा पानी के। तरह-तरह के बोतल में पानी बिकता-सादा पानी। त इहाँ खरीददार बा आ प्रचूर बा लेकिन बाजार नइखे। काहे कि बाजार खातिर जवन चीज चाहीं- दृढ़ इच्छा शक्ति ऊ नइखे।

आज भी अइसन तर्क करे वाला के कमी नइखे कि अरे भाई आलू खेत में चार रुपये किलो मिलता आ इहाँ 14 रुपये। आ एकर दोषी निकम्मा सरकार बा। अब असल कारण देखल जाव। आलू खेत से निकलला के बाद कतना प्रक्रिया से गुजरता। लोडिंग से शुरू होता-मजदूरी लागी, पैकेजिंग-बस्ता आ मजदूरी, उहाँ से कोल्ड स्टोरेज-गाड़ी भाडा आ मजदूरी। कोल्ड स्टोरेज से निकलला के बाद के प्रक्रिया- शायद कम लोग के मालूम होखे- मिट्टी आ हीट ट्रीटमेंट- जवना से आलू अपना मूल रूप में दिखेला, चुपसे ना। वोकरा बाद होल सेलर से लेके खुदरा बिक्रेता तक के आपन-आपन मजदूरी बा। एही तरह हर सामान अलग-अलग प्रक्रिया से गुजर के ग्राहक तक पहुँचता।

बाजार दिल्ली में बा, बाजार मुंबई में बा, बाजार कोलकाता में बा जहाँ से सब सामान आवता काहे कि भोजपुरिया प्रदेश में खरीददार बारन, उपभोक्ता बारन। आपके क्षेत्र में चीनी के मिल रहे जवना के महाराष्ट्र भेज दीहनी। मुजफ्फरपुर के लीची के खिलाफ हर साल बड़ा-बड़ा आर्टिकल आवेला। आम के नाम पर सफेद मालदा बिकेला जवना के मालदा से कवनो संपर्क नइखे, अमरुद के नाम पर इलाहाबादी बा, खैर केला अभी भी हाजीपुर वाला भगवान भरोसे चलता।

एकरा पहिले कि आप सब से आज्ञा ली, बिहार प्रदेश के संबंध में कुछ सत्य से अवगत करावतानी। जनसंख्या के लिहाज से इ देश में तीसरा आ क्षेत्र का लिहाज से ७वां स्थान पर बा। इहाँ ६९ प्रतिशत जमीन कृषि कार्य खातिर व्यवहार होता

जवना में एक तिहाई जमीन हमेशा बाढ़-सूखा से ग्रस्त रहेला। फिर भी कृषि उत्पादन पर ध्यान बा सरकार के-कम से कम किताब में। बाजार के आवश्यकता से सभे अवगत बा लेकिन इ सब खातिर दीर्घकालीन योजना के जरूरत बा। नीति **निर्माता** खातिर अइसन दीर्घकालीन योजना आनंददायी ना हो सकता। उनका खातिर त अइसन लक्ष्य चाही जवना के परिणाम फटाफट वोट में परिणत हो जाव। का भइल यदि इहाँ के लोग

अब सोचल जाव भोजपुरिया प्रदेश में कृषि कइसे बाँची। ना त इहाँ भूमि के प्रचुरता बा, ना त बाजार बा। खेत आ बाजार के बीच वाला चीज त पूरा तरह गायब बा। हाँ, बा त खाली उपभोक्ता। दूध के पैकेट-खरीददार बा, अंडा-खरीददार बा, मछली-खरीददार बा, आलू-खरीददार बा। एगो नया क्लास खरीददार भइल बा पानी के। तरह-तरह के बोतल में पानी बिकता-सादा पानी। त इहाँ खरीददार बा आ प्रचूर बा लेकिन बाजार नइखे। काहे कि बाजार खातिर जवन चीज चाहीं- दृढ़ इच्छा शक्ति ऊ नइखे। बाजार दिल्ली में बा, बाजार मुंबई में बा, बाजार कोलकाता में बा जहाँ से सब सामान आवता काहे कि भोजपुरिया प्रदेश में खरीददार बारन, उपभोक्ता बारन। आपके क्षेत्र में चीनी के मिल रहे जवना के महाराष्ट्र भेज दीहनी। मुजफ्फरपुर के लीची के खिलाफ हर साल बड़ा-बड़ा आर्टिकल आवेला। आम के नाम पर सफेद मालदा बिकेला जवना के मालदा से कवनो संपर्क नइखे, अमरुद के नाम पर इलाहाबादी बा, खैर केला अभी भी हाजीपुर वाला भगवान भरोसे चलता।

मजदूरी खातिर देश विदेश मारल-मारल फिरता।

जरूरत बा कृषि जनित नजर तैयार करेके। इहाँ के कृषक बुड़बक नइखन, आपन नफा नुकसान समझत बाड़न। अभाव बा त पूंजी के आ ओकरो से अधिक राजनीतिक चेतना के। नेतृत्व स्वयं दिशाहीन बा। Agriculture Produce Market Committee (**APMC**) कानून २००६ में हटा दीहल गइल लेकिन ओकरा फलाफल के बारे में ना त केहू जानता ना जाने के जरूरत बा। नेतृत्व का, बस हम राजा हम राजा वाला खेला चल रहल बा। मजदूर खातिर मशहूर भोजपुरी प्रदेश में मजदूर नइखे मिळत इ सच्चाई बा। खेत कम होखे के रोना सबे रोअता लेकिन जवन बा तवनो परती बा।

जहाँ दूसरा जगह अधिक MRP(सरकारी मूल्य निर्धारण) खातिर आन्दोलन होता उहाँ बिहार सरकार के सारा उर्जा शराब तस्करी रोके पर खर्च हो रहल बा। सरकारी आय के बड़ा हिस्सा भारत के राजनीति पर दबाव बनावे खातिर व्यय होखे से कवनो परहेज नइखे लेकिन बिजली, खाद, डीजल पर अनुदान देबे खातिर **अर्थाभाव** के रोना बा। का त इहाँ समुद्री सीमा नइखे। लेकिन नेपाल के साथ आयात-निर्यात के व्यापार काहे उत्तरप्रदेश आ बंगाल से होता? पटना एअरपोर्ट पर अंतर्राष्ट्रीय विमान काहे नइखे आवत। जबकि अमृतसर, चंडीगढ़, कोचीन जइसन छोट-छोट जगह पर अमेरिका, दुबई से सीधा हवाई जहाज उतरता। गोहाटी से बनारस तक नदी से व्यापार होता, लेकिन पटना से भागलपुर तक के का दशा बा।

प्रश्न बहुत बा लेकिन जबाब नइखे। भोजपुरिया देश बिदेश में अपना श्रम आ ज्ञान खातिर मशहूर बारन लेकिन भोजपुरी प्रदेश उहे गिरमिटिया बारन। एमे गर्व नईखे शर्मिंदगी बा। जब तक सोच ना बदली, गरीबी के महिमामंडित कइल ना छोड़ल जाई, तब तक दशा ना बदलल जा सके। केवल राजनीती से समाज में परिवर्तन ना ले आवल जा सकेला।

परिचय-पेशा से वकील, हरेंद्र कुमार पांडेय भोजपुरी कहानी व उपन्यास लेखन में आपन अलग स्थान बनवले बानी। आधुनिक वैवाहिक जीवन में विवाहेतर सम्बंध पर आधारित उनके उपन्यास सुष्मिता सान्याल के डायरी काफी चर्चित रहल बा ।

आलेख

डॉ० रंजन विकास

सारण प्रमण्डल के खेती-किसानी

शुरूआती दौर में गँवई समाज के स्थापना के क्रम में खेती-किसानी आ धरेलू जरुरत के पूरा करे खातिर हर सम्प्रदाय के लोग स्वेच्छा से आपन रूचि आ क्षमता के हिसाब से अलग-अलग काम के जिम्मेदारी लेले रहे। गंवे-गंवे ओह काम में ऊ लोग के कौशल विकसित भइल। सभे आपन काम में माहिर होत गइल। एक तरे से देखल जाव त ऊहे काम ओह लोग के पेशा बन गइल, जवन पीढ़ी दर पीढ़ी चले लागल। एह तरे के वेवस्था से गँवई समाज में एक दोसरा पर परस्पर निर्भरता, सदभावना, हेल-मेल, मेल-मेरावट, भाइचारा आ आपसी प्रेम बढ़ल। ओह समय नगदी के कवनो बेवस्था ना रहे। बाट-प्रथा चलत रहे। जरुरत के मुताबिक गाँव के लोग एक दोसरा के आपन बनावल सामान भा आपन सेवा देत रहे, जवना के एवज में ओह लोग के अनाज भेंटात रहे। सभे के एक दोसरा के जरुरत परत रहे।

बिहार में कबहूँ नील, चीनी, पेपर, सूत, सिल्क, उर्वरक, डेयरी आ आउरो उद्योग बहुते नीक रहे, जवन रोजी-रोजगार के एगो नीमनठेहा के साथे राज्य के आर्थिक सम्पन्नता आ खुशहाली के स्रोत रहे। आजादी के बाद शुरूआती दौर में बिहार भारत के दूसरका नीमन अर्थ बेवस्था वाला राज्य रहे। समय-समय पर बदलत सरकार के गलत नीति, लापरवाही, भ्रष्टाचार, कल-पुर्जा के खराब रख-रखाव, मील यूनियन के हड़ताल, बैंक आ वित्तीय संस्थान के असहयोग के चलते बिहार के उद्योग बीमारु हो गइल। भरपूर प्राकृतिक संसाधन रहला के बादो सरकार के साफ-सुथरा आ बेवहारिक नीति ना रहला के चलते बिहार में औद्योगिक विकास ओतना ना हो सकल, जेतना एकर सम्भावना रहे।

बिहार में सारन नाँव के एगो प्रमण्डल बा। एह प्रमण्डल के तीनो जिला छपरा, सीवान आ गोपालगंज के अर्थ बेवस्था में ओहीजा के खेती-किसानी आ एकरा पर आधारित पेशेवर अर्थ बेवस्था, आढ़त, कल-कारखाना, लघु उद्योग, कुटीर उद्योग आ आउरो बेवसाय के बड़हन हाथ रहल बा।

सारण जिला के कुल दू लाख सत्तर हजार दू सौ पैतालीस हेक्टेयर जमीन में लगभग चौहत्तर प्रतिशत जमीन खेती जोग, एक दशमलव चार प्रतिशत जमीन स्थायी रूप से जल से ढँकल आ तीन प्रतिशत जमीन में आम, इमली, शीशम आ आउरो गाछ-बिरिछ लागल बा। खेती जोग जमीन में ऊँचाह, समतल, खाल, चँवर आ दियरा क्षेत्र बाड़े सन। जिला के माटी जलोढ़ बा। नदियन के किनारे दियरा क्षेत्र में अकसरे बाढ़ अइला के चलते जमीन बेसी उपजाऊ बा। एहीजा के मुख्य फसल में गेहूँ, धान, मकई, दलहन, तेलहन आ आलू-पियाज बा। एह कृषि उद्योग से सारण जिला के अर्थ बेवस्था में लगातारे सुधार होत गइल बा। एगो समय रहे, जब एह जिला के आर्थिक गतिविधि में कृषि आधारित उद्योग नीमन तरे चलत रहे। ई उद्योग रोजी-रोजगार के बरियार ठेहा रहे, बाकिर अब त ना ई उद्योग रहल आ ना रोजी-रोजगार के साधन।

सीवान जिला के पसारा बाइस सौ उन्नीस वर्ग किलोमीटर में फइलल बा। एह जिला के औसत साक्षरता दर बहत्तर प्रतिशत बा, जवन बिहार के औसत साक्षरता दर से बहुते बेसी बा। एहीजा के बेसी साक्षरता दर हरमेसा आर्थिक प्रगति के अनुकूल रहल बा। सीवान जिला के अर्थ बेवस्था के सभसे बड़हन हिस्सा कृषि उद्योग बा। जिला के कुल जमीन में लगभग बहत्तर प्रतिशत से तनी बेसिए जमीन खेतिहर जोग बा। खास तरे के भौगोलिक बनावट के चलते एह जिला के कुछ क्षेत्र में बालू के मोटाह परत पर क्ले आ सिल्ट के पातर परत पावल जाला। खास क के एहीजा के माटी खादर आ बाँगर के बिचबिचवा वाला बाटे। एहीजा के लोग खादर माटी के दोमट आ बाँगर माटी के बाल-सुन्दरी कहेला। जलोढ़ सोभाव के माटी रहला के चलते जिला में सगरो धान आ गेहूँ के फसल के भरमार बा। एकरा अलावे मकई, गन्ना, मटर, चना, अरहर, सरसो, तीसी, आलू-पियाज, फूल, साग-सब्जियन आ

तम्बाकू के खेती बेवसाय के रूप में कइल जाला, जवन रोजगार के एगो साधन बा। खेतीबारी के उत्पादकता बढ़ावे खातिर एहीजा के किसान लोग कृषि के नया-नया तरीका अपनावेला। एकरा अलावे एहीजा मछली पालन के बेवसाय नीक बा।

गोपालगंज जिला के पसारा लगभग दू हजार तैतीस वर्ग किलोमीटर में बा। मोटा मोटी एहीजा चौरानबे प्रतिशत आबादी अबहुँओ गाँवे में रहे ला। ओह लोग के अर्थ बेवस्था में खेतीबारी के लमहर जोगदान बा। उत्तर बिहार में गोपालगंज जिला के एगो महत्वपूर्ण कृषि केन्द्र मानल जाला। मुख्य रूप से एह जिला के माटी चिकनी, बलुआही, क्षारीय आ गंगाकारी बा, जवन खेतीबारी खातिर बहुते नीमन बा। गन्ना, धान, गेहूँ, चना, मकई, दलहन, तेलहन के उत्पादन खातिर एहीजा के माटी बहुते उपजाऊ बा, बाकिर गन्ना, धान, गेहूँ, मकई आ साग-भाजी के उत्पादन बेसी होला। गोपालगंज के बाजार एह उपज के बेवसाय खातिर बेसी मशहूर बा।

गोपालगंज जिला के अन्दर सिचाई के कवनो वेवस्थित सुबहिता त नइखे, बाकिर सिचाई के साधन में गण्डक नहर आ सरकारी नाला बा। गण्डक नहर के गोपालगंज आ भोरे डिवीजन में बाँटल गइल बा। गण्डक नहर आ सरकारी नाला से लगभग पैतालीस प्रतिशत खेतिहर जमीन के सिचाई होला। बाकी खेतन में मानसून भा व्यक्तिगत सिचाई बेवस्था में चापाकल, बोरिंग, स्थानीय जलाशय भा पोखरा से होला। अइसे एह जिला में बरसात के मौसम में अच्छा खासा बारिस होला, जवन एहीजा के नीमन कृषि के एगो बड़हन कारण बा। गोपालगंज जिला हरित क्षेत्र खातिर मशहूर बा, जहँवा सागवान, साल, सखुआ, शीशम, कटहल, आम, नीम, बबूल, पीपल, बरगद आ आउरो तरे के गाछ-बिरिछ के भरमार बा। कृषि पर आधारित कई गो कोल्ड स्टोरेज बाड़े सन, जवन रोजगार के साधनो बा।

शुरूआती दौर में गँवई समाज के स्थापना के क्रम में खेती-किसानी आ धरेलू जरुरत के पूरा करे खातिर हर सम्प्रदाय के लोग स्वेच्छा से आपन रूचि आ क्षमता के हिसाब से अलग-अलग काम के जिम्मेदारी लेले रहे। गंवे-गंवे ओह काम में ओह लोग कौशल विकसित भइल। सभे आपन काम में माहिर होत गइल। एक तरे से देखल जाव त ऊहे काम ओह लोग के पेशा बन गइल, जवन पीढ़ी दर पीढ़ी चले लागल। एह तरे के वेवस्था से गँवई समाज में एक दोसरा पर परस्पर निर्भरता, सदभावना, हेल-मेल, मेल-मेरावट, भाइचारा आ आपसी प्रेम बढ़ल। ओह समय नगदी के कवनो बेवस्था ना रहे। बाट-प्रथा चलत रहे। जरुरत के मुताबिक गाँव के लोग एक दोसरा के आपन बनावल सामान भा आपन सेवा देत रहे, जवना के एवज में ओह लोग के अनाज भेंटात रहे। सभे के एक दोसरा के जरुरत परत रहे। एह तरे गँवई खेती-किसानी के पेशेवर अर्थ बेवस्था विकसित भइल, जवना के चलते तत्कालीन गँवई समाज के ठोहर संरचना आ आर्थिक ताना बाना मजबूत भइल। अइसन सुबहित बेवस्था के चलते आदमी के जिनगी जीयल आसान हो गइल।

बदलत माहौल के साथे पेशेवर जातीय बेवसाय छोड़ के अब बहुते लोग दोसर बेवसाय में चल गइल आ अबहुँओ जा रहल बा। समय के साथे आदमी के मान मरजाद जातीय पेशा, आर्थिक स्थिति, धार्मिक संस्कार आ सांस्कृतिक परिष्कार राजनीतिक सत्ता से तय होखे लागल। आजादी के बाद से जइसे-जइसे सत्ता बदलत गइल, ओइसे-ओइसे सरकारी नीति निर्धारण, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आ रोजी रोटी के समस्या के चलते पेशेवर जातिगत अर्थ बेवस्था में बहुते बदलाव आइल। एकरा चलते गाँवन से पलायन के संख्या सभ से बेसी भइल। हमनी के समाज में जाति प्रथा अतना ना जादे बरियार बा, जे जातिगत पेशा बदलला का बादो जाति जस के तस रह गइल

गँवई समाज के संरचना, विकास आ खेती-किसानी के पेशेवर अर्थ बेवस्था में कमकर, कहाँर, कोंहार, कोइरी, गोंड़, चर्मकार, चीकवा, जुलहा, डोम, तुरहा, तेली, दर्जी, धुनिया, धोबी, नोनिया, अहीर, पासी, बढ़ई, बरई, बिसाती, भाँट, भेंड़ीहार, मनिहार, मलाह, मेहतर, रंगरेज, लोहार, सोनार, हजाम, हलवाई आ आउरियो जाति के लोग कवनो ना कवनो रूप में एगो हिस्सा रहल बा। एकरे चलते कृषि प्रधान गाँवन के आर्थिक आ सामाजिक संरचना ठोहर भइल रहे। बाकिर ई के जानत रहे कि इहे पेशेवर बेवस्था जाति के रूप ले ली आ भारतीय समाज जातीय सामाजिक इकाई के रूप में बँटत चल जायी।

बदलत माहौल के साथे पेशेवर जातीय बेवसाय छोड़ के अब बहुते लोग दोसर बेवसाय में चल गइल आ अबहुँओ जा रहल बा। समय के साथे आदमी के मान मरजाद जातीय पेशा, आर्थिक स्थिति, धार्मिक संस्कार आ सांस्कृतिक परिष्कार राजनीतिक सत्ता से तय होखे लागल। आजादी के बाद से जइसे-जइसे सत्ता बदलत गइल, ओइसे-ओइसे सरकारी नीति निर्धारण, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आ रोजी रोटी के समस्या के चलते पेशेवर जातिगत अर्थ बेवस्था में बहुते बदलाव आइल। एकरा चलते गाँवन से पलायन के संख्या सभ से बेसी भइल। हमनी के समाज में जाति प्रथा अतना ना जादे बरियार बा, जे जातिगत पेशा बदलला का बादो जाति जस के तस रह गइल।

कवनो समय में सारण प्रमंडल के सगरी गाँव पूरा तरे से खेती-किसानी पर आश्रित रहे। एहीजा के पेशेवर अर्थ बेवस्था में हस्त शिल्प कला, कुटीर उद्योग आ लघु उद्योग के जनम भइल। हस्त शिल्प कला आ कुटीर उद्योग के उत्पादन के जरुरत के हिसाब से गाँव जवार के लोग आपस में लेन देन करत रहे। खेती-किसानी आ धरेलू जरुरत के पूरा करे खातिर सभे एक दोसरा पर निर्भर रहे। परम्परागत जातीय पेशा, एक जइसन धार्मिक आस्था, धार्मिक प्रथा, बेवहार, खानपान, जातीय अनुशासन, सजातीय शादी-बियाह, जातीय आ सामाजिक एकता बहुते मजबूत रहे। एकरा अलावे समाज में हरेक पेशेवर जाति के बेवसाय के आपन-आपन जगे पर खास महातिम रहे आ ओह लोग के सामाजिक ताना बाना में आर्थिक आ सामाजिक मान-मरजाद रहे।

परिचयः डॉ. रंजन विकास, (अवकाशप्राप्त मूल्यांकन पदाधिकारी, स्वास्थ्य एवं प. क. मंत्रालय , भारत सरकार) वर्त्तमान में सह-संचालक 'भोजपुरी साहित्यांगन'।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वां राष्ट्रीय अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 27वां दू दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन स्थानीय बिष्टुपुर स्थित तुलसी भवन के सभागार में सम्पन्न भइल, जवना में देश-विदेश से प्रतिनिधि आ सदस्य लोग शामिल भइलें। आयोजन के अध्यक्षता कइलीं डॉ. ब्रजभूषण मिश्र आ मंच संचालन कइलीं डॉ. संध्या सिन्हा।

अधिवेशन के उदघाटन मुख्य अतिथि जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय आ बिहार विधान परिषद सदस्य आ राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. संजय मयूख का साथ मॉरीशस भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन के चेयरपर्सन डॉ. सरिता बुधू, नेपाल भाषा आयोग के अध्यक्ष गोपाल ठाकुर, सदस्य गोपाल अश्क आ उपस्थित अन्य अतिथियन द्वारा दीप प्रज्जवलित कके कइल गइल। कार्यक्रम के शुरूआत मंगलाचरण- गाय के गोबरे महादेव..से भइल जवना के प्रस्तुति वीना पाण्डेय, माधवी उपाध्याय आ उपासना सिंह द्वारा कइल गइल। ओकरा बाद भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत "बटोहिया" के खूबसूरत प्रस्तुति लोकगायक उदयनारायण सिंह आ रामेश्वर गोप द्वारा भइल।

अपना संबोधन में विधायक सरयू राय कहलें कि भोजपुरी भाषा के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के पूरा उम्मीद बा। डॉ. संजय मयूख कहलें कि हमरो अंदर दरद बा एह बात के कि भोजपुरी के जवन सम्मान मिले के चाहत रहे ऊ अभी ले नइखे मिलल। बाकिर एकरा खातिर जवन प्रयास होई, कइल जाई। डॉ. सरिता बुद्धू के कहनाम रहे कि हम चालीस साल से सुनत आवत बानी कि भोजपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के प्रयास होता।

मंच से कई गो पुस्तक के लोकार्पण भी भइल जवना में प्रमुख रूप से अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका ''अकियान'', भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अधिवेशन अंक, डॉ० ब्रजभूषण मिश्र के कृति भोजपुरी गजल संग्रह ''उफनत दरिया बाटे रात'' संपादक- गुलरेज शहजाद, नागेंद्र प्रसाद सिंह, भोजपुरी के श्वाका पुरुष'' संपादक-डॉ० संध्या सिन्हा, सौरभ पाण्डेय के लिखल ''बात-बात बतकुचन'', ई० राजेश्वर सिंह के ''भोजपुरी योगी कथामृत'', संपादक रामप्रसाद साह के ''भोजपुरी संजीवनी'', सरिता बुद्धू के ''गीत-गवनई'', भूषण कुमार के ''भूषण भजनावली'', पत्रिका ''हम भोजपुरिया'' के गांधी विशेषांक, संपादक-मनोज भावुक, महंथ राय यादव के कृति ''भोजपुरी संजीवनी'', संपादक-रामप्रसाद साह आ हीरालाल लीलाधर के एकांकी संग्रह ''घर के मालिक'' के मिला के दस गो किताब के लोकार्पण भइल।

कई लोगन के भोजपुरी भाषा साहित्य में योगदान खातिर सम्मेलन का ओर से सम्मान आ पुरस्कार भी प्रदान कइल गइल, जवना में सर्वतोभावेन भोजपुरी सेवा सम्मान माधव सिंह पुरस्कार से शिवपूजन लाल विद्यार्थी, कन्हैया सिंह सदय, गंगा प्रसाद अरुण, अरविंद विद्रोही आ माधव पाण्डेय निर्मल के सम्मानित कइल गइल।

महिला रचनाकार खातिर ''चित्रलेखा पुरस्कार'' डॉ० शारदा पाण्डेय के, निबंध आ शोध खातिर ''हरिशंकर वर्मा पुरस्कार'', ''जइसे अमवा का मोजरा से रस चुवेला'' खातिर भगवती प्रसाद द्विवेदी के, नाटक खातिर दिहल जाये वाला ''जगन्नाथ सिंह पुरस्कार'' नाटक के किताब ''दरद न जाने कोय'' सुरेश काँटक के, ''पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय'' पुरस्कार डॉ० रंजन विकास के, ''पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार'' कहानी संग्रह ''कुछ हमार कुछ राउर'' खातिर तुषार कांत उपाध्याय के, ''अभय आनंद पुरस्कार'' उपन्यास ''हम गुरुदक्षिणा हईं'' खातिर मुंगालाल शास्त्री के, नर्मदेश्वर सहाय पत्रकारिता पुरस्कार जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के, ''चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

पुरस्कार'' शोध आ आलोचना के किताब ''भोजपुरियत के थाती'' खातिर प्रमोद कुमार तिवारी के, ''राम नगीना राय पुरस्कार'' कविता संग्रह ''धधकत सुरुज पियासल धरती'' खातिर कनक किशोर के, निबंध आ शोध खातिर दिहल जाये वाला ''हरिशंकर वर्मा पुरस्कार'' ई० राजेश्वर के उनकर किताब ''श्याम पियारा साधु संत'', ''महेंद्र शास्त्री पुरस्कार'' कविता संग्रह ''अँखुआइल शब्द'' खातिर डॉ० मधुबाला सिन्हा के, ''राम नगीना राय पुरस्कार'' सूर्य प्रकाश उपाध्याय के उनकर किताब ''गीत कवन गाई हम'', शोध आ आलोचना खातिर दिहल जाये वाला ''चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह पुरस्कार'' डॉ० विक्रम सिंह के उनकर किताब ''भोजपुरी के विश्वकोश पंडित गणेश चौबे'' आ संगीत (कला) के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान खातिर दिहल जाये वाला ''महंथ लाल दास पुरस्कार'' लोकगायक प्रेम रंजन के दिहल गइल। ओहिजे ब्रजकिशोर दुबे नवोदित लोक गायक/गायिका पुरस्कार प्रीति कुमारी आ कृति कुमारी के प्रदान कइल गइल।

अधिवेशन में सांझी के सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन भइल। सांस्कृतिक संध्या के अध्यक्षता मुख्य सतर्कता अधिकारी कोल इंडिया, भारत सरकार के ब्रजेश त्रिपाठी, मुख्य अतिथि का रूप मे भारत सरकार के कृषि मंत्री

अर्जुन मुंडा के आगमन सांझी के भइल, जवना मे अर्जुन मुंडा द्वारा अपना संबोधन में कहल गइल कि भोजपुरी भाषा बेहद सरस आ मधुर भाषा बा।

सांस्कृतिक सत्र में स्थानीय कलाकार लोगन के साथ बाहर से आइल लोकगायक रामेश्वर गोप, प्रीति, कृति, उदयनारायण सिंह के प्रस्तुति मन मोह लिहलस। ओकरा बाद नाट्यसंस्था रंगश्री द्वारा दू गो नाटक के मंचन भइल जवना मे पहिलका नाटक रहे 'माइंड सेट' जवन लोगन के बीच बढ़िया छाप छोड़लस एगो कटाक्ष का रूप में। दोसरका नाटक रहे इंसाफालय जवन डॉ रसिक बिहारी ओझा निर्भीक जी के लिखल एकांकी पर आधारित रहे।

अधिवेशन के दोसरका दिन यानी कि 17 दिसंबर के प्रथम सत्र में डॉ० रसिक बिहारी ओझा निर्भीक स्मृति व्याख्यान विचार गोष्ठी के आयोजन भइल जवना के विषय रहे ''झारखण्ड राज्य आ भोजपुरी'' जेकर अध्यक्षता समाजसेवी ए० के० श्रीवास्तव कइनी। विमर्शक के रूप में दिव्येन्दु त्रिपाठी के सहभागिता रहे। गोष्ठी के संचालन प्रसेनजित तिवारी करत रहले। मुख्य वक्ता के रूप में प्रभात खबर के संपादक संजय मिश्रा के कहनाम रहे कि भोजपुरी खातिर सब भोजपुरिया लोगन के जागे के होई। झारखण्ड में द्वितीय राजभाषा के दर्जा मिलल रहे आ फिर उ छीना गइल। एकरा खातिर सब केहू के मिल के भरपूर

प्रयास करे के होई।

द्विवेंदु त्रिपाठी द्वारा झारखंड के विषय पर आपन महत्वपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत कइल गइल। इहाँ के कहनाम रहे कि भोजपुरी के बात करे के पहिले छोटा नागपुरिया के चर्चा करे के होई। जनजातीय बिरादरी के साथ लेके चले के पड़ी। जइसे हमनी के झारखण्ड वासी होखे में गर्व महसूस होला ओसही आदिवासी जनजाति में भी बिहारियत बा। जमशेदपुर में सक्रिय संस्था आ प्रकाशित होखे वाला किताब आ पत्रिका के भी जानकारी दिहल गइल आ साथ मे जोर दिआइल कि आपन जड़ से जुड़ल जरूरी बा। वक्ता दुर्योधन सिंह के कहनाम रहे कि हमनी के राजनीतिक संरक्षण नइखे बल्कि हमनी के विरोध बा। आंदोलन चल रहल बा, चली आ जीत हमनी के होई। एह गोष्ठी के अध्यक्षता करत एके श्रीवास्तव के कहनाम रहे कि डर लागे त भोजपुरी बोल दी। ई हमनी के हनुमान चालीसा ह। सब केहू के मिल के प्रयास करे के होई। एह अधिवेशन के सफलता खातिर शुभकामना बा।

ओहीजे द्वितीय सत्र में आयोजित गोष्ठी के विषय रहे "विश्व पटल पर भोजपुरी" जेकर अध्यक्षता भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस के चेयरपर्सन डॉ० सरिता बुधु आ संचालन मनोज भावुक कइलीं। गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में भाषा आयोग, नेपाल के अध्यक्ष डॉ० गोपाल ठाकुर आ विशिष्ट वक्ता के रूप में भाषा आयोग, नेपाल के सदस्य नेपाल के ख्यातिलब्ध साहित्यकार गोपाल अश्क रही। नेपाल में 18 लाख भोजपुरी बोलनिहार बाड़न। भोजपुरी उहाँ के सरकार के मान्यता प्राप्त भाषा बिया। अध्यक्षीय भाषण में सरिता बुधु द्वारा अंग्रेजन के शासन काल में गिरमिटिया बन के बिहार से मॉरीशस गइल लोगन के सांस्कृतिक, भाषाई आ सामाजिक स्थिति आ उनकर इतिहास पर विस्तार पूर्वक बात रखल गइल।

अधिवेशन के संगोष्ठी सत्र में तीसरा संगोष्ठी "उपन्यास के वैश्विक परिदृश्य आ भोजपुरी उपन्यास" विषय पर रहे जेकर अध्यक्षता भोजपुरी आ हिंदी के वरीय साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी कइलीं। विषय प्रवर्तक रचनाकर जितेन्द्र कुमार रहीं। जितेंद्र कुमार द्वारा वैश्विक स्तर पर प्रकाशित भइल उपन्यासन पर बहुत विस्तार से आपन बात रखल गइल। श्रीलंकाई लेखक शेहान करुणातिलका के 2022 में प्रकाशित उपन्यास "सेवेन मून ऑफ माली अलमीडिया", साल 2023 के बुकर पुरस्कार से पुरस्कृत आयरलैंड के लेखक पॉल लिंच के उपन्यास "प्रोफेट सॉन्ग" के विषय आ कथानक पर बेजोड़ वक्तव्य प्रस्तुत कइनी। विचार गोष्ठी में विमर्शक के रूप में कन्हैया सिंह 'सदय', जमशेदपुर आ प्रसिद्ध समालोचक डॉ० विष्णुदेव तिवारी (बक्सर) भी रहीं आ उहाँ के भी भोजपुरी उपन्यास पर सारगर्भित बात रखनी। गोष्ठी के संचालन कइलीं डॉ० राजेश कुमार मांझी(नई दिल्ली)।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भगवती प्रसाद द्विवेदी द्वारा भोजपुरी के पहिला उपन्यास रामनाथ पांडेय के बिंदिया, इमरीतिया काकी, फुलसूंघी, बनचरी, कमली, सुन्नर काका, रावण उवाच, जुगेसर, विजय पर्व सहित कई गो उपन्यासन के चर्चा कइल गइल आ ओकर विषय आ कथानक पर चर्चा भइल। उहाँ के कहनाम रहे कि भोजपुरी में उपन्यास लेखन के गति भले धीमा बा बाकिर वैश्विक परिदृश्य के देखत स्तरीयता में कवनो कमी नइखे।

अधिवेशन के समापन सत्र में आयोजन समिति के प्रतिनिधि आ सदस्यन के अधिवेशन में सहभागिता खातिर सम्मानित कइल गइल। ओकरा बाद नयका कार्यकारिणी के घोषणा दिलीप कुमार द्वारा मंच से कइल गइल आ मंच से कई गो प्रस्ताव पारित भइल जेकरा के प्रस्तुत कइनी कौशल मुहब्बतपुरी।

रात के विराट कवि सम्मेलन भइल, जेकर सफल संचालन गुलरेज शहजाद आ डॉ० संध्या सिन्हा कइलीं। उद्घाटनकर्ता रहीं शहर के चर्चित कवि आ पूर्व पत्रकार दिनेश्वर प्रसाद सिंह दिनेश आ अध्यक्षता कइलीं डॉ कमलेश राय। सनिध्य रहे ब्रजमोहन राय देहाती आ डॉ रविकेश मिश्र जी के। एह कवि सम्मेलन में देश विदेश से आइल 49 गो कवि कवयित्री लोगन द्वारा आपन रचना के सस्वर पाठ कइल गइल।

परिचय-राजेश भोजपुरिया, युवा साहित्यकार, प्रचार-प्रसार मंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

शशि कांत मिश्र

स्ट्रॉबेरी के करीं खेती, दू महीना में बनीं लखपति !

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम स्ट्रॉबेरी के खेती खातिर ठीक बिया। वइसहूं स्ट्रॉबेरी के खेती में माटी के कौनो जादा लफड़ा नइखे। एकर खेती हर तरह के माटी में हो जाला लेकिन माटी अइसन होखे के चाहीं जेकरा में जल निकासी के अच्छा व्यवस्था होखे। साथ ही माटी तनि बरियार होखे के चाहीं। माटी कमजोर होखे त ओकरा के कम्पोस्ट से मजबूत बनाईं। वर्मी कम्पोस्ट से बढ़िया कुछु ना होई। वर्मी कम्पोस्ट के इंतजाम ना होखे त फेन गोबर के खाद डालीं। दोसरो जैविक खाद के इस्तेमाल कइ सकेनी। माटी के पीएच मान पांच से छह के बीच होई त फसल फनफना के बढ़ी। टेम्परेचर बीस से तीस डिग्री सेल्सियस के बीच अच्छा मानल जाला।

स्ट्रॉबेरी फल के दुनिया के नया सनसनी बा। स्वाद आ पौष्टिकता के संगे संग स्टेट्स सिंबल के भी प्रतीक बन गइल बा स्ट्रॉबेरी। बड़ शहर के बात छोड़ीं, अब त गांवो देहात के बाजार में स्ट्रॉबेरी बिका रहल बा। खास बात बा कि जौन हिसाब से मार्केट में स्ट्रॉबेरी के डिमांड बा, उ हिसाब से एकर सप्लाई नइखे हो पावत। अइसे में रउवा खातिर स्ट्रॉबेरी के खेती से कमाए के अच्छा मौका बा।

स्ट्रॉबेरी मेनली पहाड़ के खेती ह। कुछ साल पहिले तक इ खाली पहाड़ी इलाका में होत रहे लेकिन दू तीन साल से मैदानी इलाका के किसान भाई लोग भी एकर खेती कइ रहल बाड़न आ अच्छा बात बा कि मैदानी इलाका में स्ट्रॉबेरी खूब होत बा। यूपी बिहार के कईगो किसान भाई स्ट्रॉबेरी के खेती से लाखों कमा रहल बाड़न।

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम स्ट्रॉबेरी के खेती खातिर ठीक बिया। वइसहूं स्ट्रॉबेरी के खेती में माटी के कौनो जादा लफड़ा नइखे। एकर खेती हर तरह के माटी में हो जाला लेकिन माटी अइसन होखे के चाहीं जेकरा में जल निकासी के अच्छा व्यवस्था होखे। साथ ही माटी तनि बरियार होखे के चाहीं। माटी कमजोर होखे त ओकरा के कम्पोस्ट से मजबूत बनाईं। वर्मी कम्पोस्ट से बढ़िया कुछु ना होइ। वर्मी कम्पोस्ट के इंतजाम ना होखे त फेन गोबर के खाद डालीं। दोसरो जैविक खाद के इस्तेमाल कइ सकेनी। माटी के पीएच मान पांच से छह के बीच होई त फसल फनफना के बढ़ी। टेम्परेचर बीस से तीस डिग्री सेल्सियस के बीच अच्छा मानल जाला।

स्ट्रॉबेरी के खेती बेड पर करे के चाहीं। बेड जादा ऊंच बनावे के जरूरत नइखे। बस बीत्ता भर ऊंच। चौड़ाई जरूर तीन फीट के आसपास रखब ताकि जड़ के फइले के पूरा जगह मिले। एक बेड से दोसर बेड के बीच के दूरी दू फीट के आसपास रखब। बेड तैयार हो जाए त फेन पूरा बेड के प्लास्टिक से ढक देब। स्ट्रॉबेरी के खेती में प्लास्टिक मल्चिंग विधि के बहुत महत्व बा। प्लास्टिक मल्चिंग टेक्नीक खेती के नया तरीका ह। एकरा में पूरा बेड के खास तरह के प्लास्टिक से ढक दिहल जाला। ओकरा के प्लास्टिक मल्चिंग विधि कहल जाला। एकरा से फायदा इ होला कि बेड में नमी बनल रहे ला आ खर पतवार भी ना होला। स्ट्रॉबेरी के खेती में टपक सिंचाई कइला से बहुत फायदा होला। पानी पटावे समय ध्यान रखब कि जड़ में पानी ना जमा होखे।

स्ट्रॉबेरी के कई गो वैराइटी होला। जइसे कमारोसा, चांडलर, ओफ्रा, फेस्टिवल ब्लैक मोर, स्वीड चार्ली, एलिस्ता और फेयर फॉक्स। रउवा

वैराइटी के सेलेक्ट करत समय आपन इलाका के नर्सरी आ मार्केट पर नजर रखब। जौन वैराइटी के स्ट्रॉबेरी के डिमांड होखे, ओकरे खेती करे में समझदारी बा। इ मामला में बढ़िया नर्सरी वाला कुल राउर हेल्प कइ सकेलन। ओही जी से रउवा स्ट्रॉबेरी के पौधा भी ले सकत बानी। एक दू फसल कइला के बाद रउवा खुद भी आपन नर्सरी में पौधा तैयार कइ सकत बानी।

एक एकड़ में स्ट्रॉबेरी के करीब बीस बाईस हजार पौधा लागेला। एगो पौधा से एक सीजन में आधा किलो से जादे फल मिल जाला। जहां तक स्टॉबेरी के खेती से कमाई के बात बा त एक एकड़ से करीब छह सात लाख रूपया रउआ कमा लेब, खर्चा वर्चा काट के। एक एकड़ खेती में दू लाख के आसपास लागत आवेला, बिक्री आठ नौ लाख तक के हो जाला। त ए हिसाब से रउवा एक एकड़ में खर्चा काटके छह सात लाख तक कमा सकत बानी।

पाला स्ट्रॉबेरी के सबसे बड़ दुश्मन ह। अगर रउवा पॉली हाउस में खेती करत बानी त ओइजी त पाला के कौनो खतरा ना होई लेकिन खुला खेत में पाला के खतरा रही। प्लास्टिक के इस्तेमाल कइके रउवा पाला से आपन फसल के बचा सकत बानी।

स्ट्रॉबेरी के लगावे के समय सितंबर-अक्टूबर ह लेकिन रउवा फरवरी-मार्च में भी एकरा के लगा सकत बानी। एकरा में फल दू महीना से पहिले ही पकड़ लेला। फल अधपका पर ही तुड़ लेब। जइसे फल ललछांवे लागे, ओकरा के तुड़ लेब। पैकिंग में खास ख्याल रखब। स्टॉबेरी के फल बड़ा नाजुक होला। एही से एकर पैकिंग भी बहुत संभाल के करे के पड़ेला।

एक एकड़ में स्ट्रॉबेरी के करीब बीस बाईस हजार पौधा लागेला। एगो पौधा से एक सीजन में आधा किलो से जादे फल मिल जाला। जहां तक स्टॉबेरी के खेती से कमाई के बात बा त एक एकड़ से करीब छह सात लाख रूपया रउआ कमा लेब, खर्चा वर्चा काट के। एक एकड़ खेती में दू लाख के आसपास लागत आवेला, बिक्री आठ नौ लाख तक के हो जाला। त ए हिसाब से रउवा एक एकड़ में खर्चा काटके छह सात लाख तक कमा सकत बानी।

परिचय- किसानी आ कलम शशि कांत मिसिर के रग में खून बनके के बहेला। अठारह साल टीवी पत्रकारिता कइला के साथे तीन गो उपन्यास- नॉन रेजिडेंट बिहारी, वैलेंटाइन बाबा आ मीडिया लाइफ लिख चुकल बानी। फिलहाल मायानगरी मुंबई में सिनेमा-सीरियल खातिर लिखत बानी आ कर्मनगरी कटिहार में मॉडर्न किसानी करत बानी।

शशि कांत मिश्र

काला गेंहू के कमाल, तीन महीने में हो जाइब मालामाल!

काला गेहूं के गुण के बात करीं त बस इहे समझ जाईं कि इ पचास गो औषधि के अन्न बा। नारमल बीमारी के बात छोड़ दिहीं, काला गेंहू हार्ट अटैक, कैंसर, डायबिटीज, एनीमिया जइसन झंझटिया बीमारी के भी रामबाण इलाज ह। जेकरा मानसिक तनाव के बीमारी होखे या फेन हड्डी के कमजोरी के, उनका खातिर त काला गेंहू बहुत फायदेमंद बा। असल में काला गेंहू में जौन एन्थोसाइनिन पिगमेंट मिले ला, उ नेचुरल एंटी ऑक्सीडेंट आ एंटीबायोटिक होला। ओकरा वजह से शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी मजबूत हो जाला। काला गेंहू के खोज करे वाला मोहाली के नेशनल एग्री फूड बॉयोटेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट के दावा बा कि काला गेंहू में आयरन आ जिंक के मात्रा बहुत जादा होला जेकरा वजह से ई कइएक गो बीमारी से लोग के बचावेला। एही सब वजह से काला गेंहू के मारकेट टाइट बा।

काला गेंहू देखले बानी? नाम सुनले बानी? अगर जवाब ना बा त इहे समझ जाईं कि रउआ खेती-बारी में जमाना के साथ कदम मिला के नइखीं चलत। काला गेंहू ए दौर के एगो नया खोज बा आ जौन रफ्तार से ई पॉपुलर हो रहल बा, ओकरा से इहे लागत बा कि चार पांच साल में ई हर एक इलाका में पहुंच जाई।

काला गेंहू के दाना नारमले गेंहू जइसन होला। नारमल गेंहू जइसने साइज, ओइसन बनावट। फरक बस दू चीज में होला। रंग आ गुण में। नारमल गेंहू के रंग उजर आ लालछांह के बीच होला जबकि इ काला गेंहू धुप्प करिया होला। बालियो काला, दाना भी काला। असल में एकर काला रंग एन्थोसाइनीन पिगमेंट के कारण होला। इहे पिगमेंट गेहूं के कलर तय करेला। नारमल गेंहू में एंथोसाइनिन पिगमेंट के मात्रा 5 से 15 पीपीएम के बीच होला जबकि काला गेहूं में ऐकर मात्रा 40 से 140 पीपीएम के बीच होला। पिगमेंट के मात्रा में इहे फर्क के वजह से एकर रंग नारमल गेंहू के रंग से अलग होइके करिया हो जाला।

काला गेहूं के गुण के बात करीं त बस इहे समझ जाईं कि इ पचास गो औषधि के अन्न बा। नारमल बीमारी के बात छोड़ दिहीं, काला गेंहू हार्ट अटैक, कैंसर, डायबिटीज, एनीमिया जइसन झंझटिया बीमारी के भी रामबाण इलाज ह। जेकरा मानसिक तनाव के बीमारी होखे या फेन हड्डी के कमजोरी के, उनका खातिर त काला गेंहू बहुत फायदेमंद बा। असल में काला गेंहू में जौन एन्थोसाइनिन पिगमेंट मिले ला, उ नेचुरल एंटी ऑक्सीडेंट आ एंटीबायोटिक होला। ओकरा वजह से शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी मजबूत हो जाला। काला गेंहू के खोज करे वाला मोहाली के नेशनल एग्री फूड बॉयोटेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट के दावा बा कि काला गेंहू में आयरन आ जिंक के मात्रा बहुत जादा होला जेकरा वजह से ई कइएक गो बीमारी से लोग के बचावेला। एही सब वजह से काला गेंहू के मारकेट टाइट बा।

लेकिन काला गेंहू के खेती के लेके अभी कुछ झंझटो बा। सबसे बड़ झंझट बा बिया के लेके। हर जगह एकर बिया आसानी से मिलत नइखे। जहां मिलत बा, ओइजी रेट अनाप शनाप के। बिया के लेके फ्रॉडइ के भी खबर बा। खबर मिल रहल बा कि कई जगह फ्रॉड कुल नारमल गेंहू के करिया रंग से रंग के ओकरा के काला गेंहू बता के सीधा सादा किसान भाई लोग के थमा देत बाड़न। एकरा के जांचे के सबसे आसान तरीका बा कि रउआ बिया के पानी में डाल के थोड़ा देर छोड़ दिहीं। अगर बिया रंग छोड़त बा

त समझ जाईं कि रउआ साथे गेम हो रहल बा। काला गेंहू में एगो आउर प्रॉब्लम बा। बहुत लोग करिया रंग के वजह से एकरा के नापसंद करत बाड़न। हालांकि जब उ लोग एकर गुण के जान जात बाड़न त फेन उहे लोग एकरा के दबाइ के खात बाड़न लेकिन शुरू में एकरा के लेके सइगो सवाल खड़ा करत बाड़न।

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम काला गेंहू के खेती खातिर परफेक्ट बा। माटी आ मौसम के लेके रउआ बस इहे समझ लिहीं कि जइसन माटी आ मौसम नारमल गेंहू के चाहीं, उहे काला गेंहू के भी चाहीं। बोआई-कटाई के समय भी नारमले गेंहू वाला बा। खाद में एगो सावधानी करब। जैविक खाद के इस्तेमाल करब। वर्मी कम्पोस्ट से बढ़िया कुछु ना होई। वर्मी कम्पोस्ट के इंतजाम नइखे हो पावत त फेन गोबर के खाद के इस्तेमाल करब। कीटनाशक भी जैविक इस्तेमाल करब। नीम के पत्ता आ गौमूत्र से बनल जैविक खाद के कौनो तोड़ नइखे।

आपन भोजपुरिया बेल्ट के माटी आ मौसम काला गेंहू के खेती खातिर परफेक्ट बा। माटी आ मौसम के लेके रउआ बस इहे समझ लिहीं कि जइसन माटी आ मौसम नारमल गेंहू के चाहीं, उहे काला गेंहू के भी चाहीं। बोआई-कटाई के समय भी नारमले गेंहू वाला बा। खाद में एगो सावधानी करब। जैविक खाद के इस्तेमाल करब। वर्मी कम्पोस्ट से बढ़िया कुछु ना होई। वर्मी कम्पोस्ट के इंतजाम नइखे हो पावत त फेन गोबर के खाद के इस्तेमाल करब। कीटनाशक भी जैविक इस्तेमाल करब। नीम के पत्ता आ गौमूत्र से बनल जैविक खाद के कौनो तोड़ नइखे।

अब चलीं काला गेंहू से कमाई के बात कइल जाव। काला गेंहू के उपज करीब ओतने होला जेतना नारमल गेंहू के होला लेकिन एकर रेट नारमल गेंहू से तीन गुना, चार गुना मिल जाला। नारमल गेंहू मंडी में इक्कीस सौ बाइस सौ के रेट पर बिकाला त काला गेंहू के रेट छह हजार तक पार कइ जाला। मतलब नारमल गेहूं से तीन गुना चार गुना ज्यादा फायदा।

परिचय- किसानी आ कलम शशि कांत मिसिर के रग में खून बनके के बहेला। अठारह साल टीवी पत्रकारिता कइला के साथे तीन गो उपन्यास- नॉन रेजिडेंट बिहारी, वैलेंटाइन बाबा आ मीडिया लाइफ लिख चुकल बानी। फिलहाल मायानगरी मुंबई में सिनेमा-सीरियल खातिर लिखत बानी आ कर्मनगरी कटिहार में मॉडर्न किसानी करत बानी।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 'भारत अध्ययन केंद्र' में व्याख्यान: "लोक कविता का देशरंग"

1 दिसंबर 2023, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत अध्ययन केंद्र में भोजपुरी कवि मनोज भावुक **"लोक कविता का देशरंग"** विषयक कार्यक्रम में कहलें कि लोकभाषा में कविता रचे वाला कवियन के काव्य में प्रतिरोध के स्वर एतना तीखा रहे कि साम्राज्यवादी शासक द्वारा ओह लोग के जेल भेजे के पड़ल।

बीएचयू के शोधार्थी लोग के तरफ इशारा करत मनोज कहलें कि हमनी के रघुवीर नारायण, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा आ गुन्जेश्वरी मिश्र 'सुजश' के कविता के पाठ करत रहे के चाहीं।

भारत अध्ययन केन्द्र, का.हि.वि.वि. द्वारा आयोजित व्याख्यान-सह-काव्यपाठ 'लोक कविता का देशरंग' विषयक कार्यक्रम में मुख्य वक्ता श्री मनोज भावुक, सुप्रसिद्ध कवि/फिल्म समीक्षक, नई दिल्ली कहलें कि लोक ही शास्त्र के प्रतिनिधित्व करेला। रघुवीर नारायण जी के बटोहीया गीत आ प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिन्हा जी के फिरगिंया गीत, लोक में राष्ट्र के चेतना के प्रदर्शित करत बा। फिरगिंया गीत पर सिन्हा जी के जेल भइल। गुन्जेश्वरी मिश्र 'सुजश' के उनका लुटेरवा गीत पर जेल भइल। बटोहिया, फिरंगिया आ लुटेरवा तीनों गीत के स्वन्तत्रता आन्दोलन के अलख जगावे में महत्वपूर्ण योगदान बा। एह अवसर पर भावुक जी आपनो कई गो देश भक्ति रचना सुनवलें।

प्रो. नीरज खरे, आचार्य, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी कहलें कि पूंजीवाद के लालच रूपी सैलाब में सब बह जाला लेकिन लोक जीवित रहेला। बुन्देलखण्ड के जगनिक आल्हखण्ड 'आल्हा' के रचना कइलें। आल्हा-ऊदल के चरित्र से आज भी लोग देश भक्ति के प्रेरणा प्राप्त करेला।

प्रो. प्रभाकर सिंह, आचार्य, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी अवधी साहित्य पर बोलत कहलें कि ई अवधी भाषा ही ह जवना में मानस आ पद्मावत जइसन कालजयी रचना भइल जे कि भारतीय संस्कृति के अमूल्य निधि बा।

कार्यक्रम के अध्यक्षता करत प्रो. वशिष्ठ अनूप, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी कहलें कि दुनिया के सभ लोग के आपन मातृभाषा अत्यन्त प्रिय होला। इहे रहस्य बा कि लोक बोली में रचल काव्य से हमनी के व्यक्तित्व के परिशोधन सहजे हो जाला। युवा लोग के समर्पित एह कार्यक्रम के स्वागत भाषण डॉ. ज्ञानेन्द्र नारायण राय, संचालन डॉ. अमित कुमार पाण्डेय आ धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनूप पति तिवारी कइलें। भारत अध्ययन केन्द्र के सभागार में डॉ.अशोक कुमार ज्योति, डॉ.महेन्द्र प्रसाद कुशवाहा, डॉ.प्रियंका सोनकर, सोनी शर्मा, वंशिका राय आ शुभम तिवारी सहित भारी संख्या में विभिन्न विभाग के छात्र उपस्थित रहलें।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 'भोजपुरी अध्ययन केंद्र' में व्याख्यान:

"भोजपुरी साहित्य का नया स्वर आ विश्व पटल पर भोजपुरी"

29 नवंबर 2023, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केंद्र द्वारा 'हम भोजपुरिया, हमार भोजपुरी' व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत पहिला व्याख्यान **'भोजपुरी साहित्य का नया स्वर आ विश्व पटल पर भोजपुरी'** विषय पर भोजपुरी के गीतकार आ 'भोजपुरी जंक्शन' पत्रिका के सम्पादक मनोज भावुक के भइल। कार्यक्रम के आयोजन भोजपुरी अध्ययन केंद्र के समन्वयक प्रो.श्रीप्रकाश शुक्ल के अध्यक्षता में केंद्र के राहुल सभागार में कइल गइल। कार्यक्रम में हिंदी विभाग के अध्यक्ष आ प्रसिद्ध गजलकार प्रो. वशिष्ठ अनूप भी विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहलें।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलत मनोज भावुक कहलें कि हमनी के प्रयास होखे के चाहीं कि विभिन्न भाषा में हो रहल विमर्श में भोजपुरी साहित्य के चर्चा होखे आ तमाम भाषा के साहित्य भी भोजपुरी में उपलब्ध होखे। मनोज भावुक कहलें कि भोजपुरी के नित्यप्रति अध्ययन आ नया-नया स्वर के तलाश कइल हमनी के कर्तव्य बा। नवीन विषय आ नया दृष्टिकोण के साथ भोजपुरी में लेखन होखत रहे के चाहीं। एह अवसर पर मनोज अपना तमाम गीत-गजलन के पाठो कइलन।

विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलत प्रो.वशिष्ठ अनूप कहलें कि भोजपुरी के प्रारंभिक साहित्य लोक से प्रसूत बा। लोक के संपदा ही भोजपुरी के प्रारंभिक साहित्य बनेला। लोकगीतन के संरक्षित-संवर्धित करे के काम महिला लोग कइले बा। प्रो.अनूप कहलें कि लोक में एह गीतन के महत्व मंत्र जइसन बा। लोक के रास्ते भोजपुरी के बहुत कुछ मिलल बा आ हमनी के ई कर्तव्य बा कि ओह विरासत के सुरक्षित रखीं जा आ ओह में निरन्तर संवर्धन करे के प्रयत्न करीं जा। एह अवसर पर प्रो.अनूप भी अपना कुछ गजलन के पाठ कइलन।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो.श्रीप्रकाश शुक्ल कहलें कि भोजपुरी श्रम के भाषा ह आ जहाँ श्रम होई उहाँ परिष्कार भी होई। प्रो.शुक्ल कहलें कि हमनी के सबसे बड़ काम ई करे के बा कि सत्ता संरचना के सम्मुख भोजपुरी अपना भाषाई गौरव के साथ प्रस्तुत हो सके। भोजपुरी के वर्तमान साहित्य सभ विधा से समृद्ध बा आ निरन्तर समृद्ध हो रहल बा। विश्व पटल पर भोजपुरी के तरफ भी ध्यान गइल बा आ एह गति के अउर बढ़ावे आ नया-नया सम्भावना के द्वार खोले खातिर आवश्यक बा कि भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता मिले।

कार्यक्रम में मधुर आ मखमली आवाज के धनी गायक धर्मेंद्र सिंह मनोज भावुक के गजलन के सांगीतिक प्रस्तुति देलें।

कार्यक्रम के संचालन शोधार्थी उदय पाल, स्वागत वक्तव्य शोधार्थी मनकामना शुक्ल आ धन्यवाद ज्ञापन शोधार्थी शुभम चतुर्वेदी कइलें। कार्यक्रम में डॉ. अशोक कुमार ज्योति, दीप मोहम्मदाबादी के साथ छात्र-छात्रा लोग के भारी उपस्थिति रहे।

विविधा

डॉ. फतेहचन्द बेचैन

गाय

हमनी हिन्दू धरम की हर शुभ, मंगल कारज में गाय के ही चीज क इस्तेमाल पुरातन काल से चलि रहलि बा। गाय के दूध, दही, घी, गोबर के मिला के पंचगव्य बनेला जेकर औषधीय महातम बा। घी अऊरी गोमूत्र से बहुत दवाई बनावल जाला। गाय क दूध बहुत ताकतवर पौष्टिक मानल गइल बा। एके अमृत क संज्ञा दिहल गइल बा।

हमरी धरम शास्त्र में गाय के माता क दरजा दिहल गइल बा। एही से गाय के गौ माता कहल जाला। गाय के पूजनीय मानल जाला। एही से हम भारतीय की हर घर में पहिलकी रोटी गऊ माता के अरपित कइल जाला। धरमशास्त्र में प्राचीन काल से ही गऊ माता के देवी कहल गइल बा। धरम की हिसाब से इ मानल गइल बा कि गाय में तैंतीस करोड़ देवी देवता के बास होला। पालतू जानवर त बहुते बाड़स बाकिर इ सबमें गाय क सर्वोच्च स्थान रखल गइल बा। धरमशास्त्र क इहो मान्यता बा कि गाय, गंगा, गायत्री इ तीनों में से कौनो एकही के जे अपना ली सेवा करी ओके मोक्ष मिल जाला जीवन सफल हो जाला अगर केहू इ तीनों के सेवा करी अऊरी अपना ली ओके रऊवां अंदाजा लगालीं कि ओके का न मिल सकेला। ई सब धरमशास्त्र के मान्यता ह विचार ह। हमनी की हर हिन्दू घर में घर क केहू सदस्य क हालत गंभीर हो जाला त सबकर राय हो जाला कि अब इनका के गाय, बाछी छुआ दिहल जाय वैतरणी पार करे क सहारा हो जाव। गाय, बाछी छुआ दिहला के बाद ई देखल गइल बा कि उनकी स्वास्थ्य में सुधार हो गइल बा। अरदुवाइ जरूर बढ़ गइल बा। एके लगभग सभे देखले होई, सुनले होई, अन्दाजा लगवले होई कि गाय में जरूर कौनो दैवी शक्ति बा अऊरी त अऊरी भगवान श्री कृष्ण जी खुदे गाय चरा के गाय क महत्ता बढ़ा देले बानी एसे बढ़ के का उदाहरण हो सकेला।

हमनी हिन्दू धरम की हर शुभ, मंगल कारज में गाय के ही चीज क इस्तेमाल पुरातन काल से चलि रहलि बा। गाय के दूध, दही, घी, गोबर के मिला के पंचगव्य बनेला जेकर औषधीय महातम बा। घी अऊरी गोमूत्र से बहुत दवाई बनावल जाला। गाय क दूध बहुत ताकतवर पौष्टिक मानल गइल बा। एके अमृत क संज्ञा दिहल गइल बा। छोट बच्चा से लेके बूढ़ आदमी तक हर उमिर के लोगन के इनकर दूध फायदा करेला, स्वास्थ्य बढ़ावेला, स्वस्थ राखेला। गाय की दूध से अऊरी भी चीज मक्खन, पनीर, छाछ भी बनेला। एकरी पनीर में प्रोटीन बहुते होला। गाय क घी खइला से ताकत मिलेला, कई बेमारी में भी फायदा करेला। गाय की घी क धार्मिक महत्व भी बा। एइसे हवन, पूजन भी कइल जाल। हवन से वातावरण शुद्ध होला। एक चम्मच गाय क घी आगी में डलला से लगभग एक टन आक्सीजन बनेला। इ सुनला में अचरज लागत बा लेकिन इ सौ प्रतिशत प्रमाणित हो चुकल बा।

गाय के ग्रामीण अरथव्यवस्था की रीढ़ क हड्डी मानल गइल बा। एगो कवि की रचना में लिखल बा कि गोधन, गजधन, वाजीधन और रतनधन खान गाय के धन की रूप में मान्यता बा। प्राचीन समे में गाँव में गाय की संख्या बल से ही सम्पन्नता क आंकलन कइल जात रहल ह। शादी, बियाह में धार्मिक नियम अबो बा कि गऊ दान कइल जाला। राजा महाराजा की इहां त हजारन लाखन में गाय रखला क धर्मिक प्रमाण मिलेला। रिसी मुनी लोग की इहां भी गाय रखला क असंख्य बल क प्रमाण मिलेला।

कुछ समे से गाय की जीवन पर संकट क बादर मेड़रा रहल बा। एकर खास कारन प्लास्टिक बा। शहर में दोकान से हर सामान प्लास्टिक की थइली में मिलेला। इस्तेमाल की बाद लोग ओके कूड़ा की ढेर पर फेक देला ओसे चरे वाली मासूम गाय प्लास्टिक खा के आपन जान गँवा देली। इ बात सबके मालूम बा कि प्लास्टिक गलेला नाही। हमनी के साथे जेतना पालतू जानवर बाने ओमे गाय के सर्वोच्च स्थान बा। संयोगवश गोहत्या हो गइला पर बहुत कठिन तपस्या और पूजा पाठ क विधान बा। जेकरे दुआरे गाय रहेली, ऊ बहुत भाग्यवान मानल जाला। उहाँ लक्ष्मी जी क वास मानल जाला। ऊ परिवार खुशहाल जिनगी बितावेला। एतना सब जानकारी की बाद गाय के उत्पति की जानकारी भी जरूरी बा। गाय की उत्पत्ति की बारे में शास्त्र की हिसाब से कहल गइल बा कि गाय क उत्पत्ति समुद्र मंथन की समे भइल रहल स्वर्ग में स्थान मिलल रहल। पुराण में भी गाय की महिमा क वर्णन कइल गइल बा। पुराण में उल्लेख बा कि माता कामधेनु समुद्र मंथन से परगट भइल रहली। कामधेनु के सुरभि क संज्ञा दिहल गइल बा। कामधेनु के ब्रह्मदेव अपनी लोक में ले गइलीं। फेरू लोक कल्याण खातिर रिसी मुनी लोगन के सौंपि दिहलन। अब गाय की रूप रंग बनावट के बारे में संक्षिप्त जानकारी बाटे–

गाय भिन्न भिन्न रूप रंग क होलीं। इनकर कद छोट भी होला त लम्बा भी

होला। इनकर पीठ चाकर होला जइसे हमरी देश क जलवायु अलग अलग तरे क होला ओहि तरे पशु जानवर भी अलग अलग तरे क पावल जाला–

कुछ समे से गाय की जीवन पर संकट क बादर मेड़रा रहल बा। एकर खास कारन प्लास्टिक बा। शहर में दोकान से हर सामान प्लास्टिक की थइली में मिलेला। इस्तेमाल की बाद लोग ओके कूड़ा की ढेर पर फेक देला ओसे चरे वाली मासूम गाय प्लास्टिक खा के आपन जान गँवा देली। इ बात सबके मालूम बा कि प्लास्टिक गलेला नाही।

साहीवाल गाय- इ हमरी देश क सरबश्रेष्ठ प्रजाति हईं। ई प्रजाति मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा अऊरी पंजाब प्रान्त में पावल जालीं। ई दूध क रोजगार धंधा करे वाला क खास पसंद हईं। ई सलाना दू हजार से तीन हजार लीटर तक दूध देलीं अच्छा तरह से देखभाल कइल जाव त ई कहीं भी रहि सकेली।

गिर- एह नसल क गाय हमरी देश की गुजरात की गिर की जंगल में पावल जाली। इ भारत क सबसे दुधारू गाय हई।

लाल सिंधी- एकरी लाल रंग की कारन इनकर नाम लाल सिंधी रखाइल बा। एकरी अलावा राठी नसल, कोकरेज, थारपरकर, आदि तरे तरे क गाय क नसल बा। एह समे में लोगन क धीरे धीरे आस्था, विश्वास, धरम करम मानसिकता बदलि रहलि बा। जंगल, पेड़, चरागाह, धीरे धीरे खतम हो रहल बा। एह सबसे गाय के राखे में परेशानी भी हो रहल बा। अब त गाय केहू केहू क घरे राखल जात बाड़ी स। बुचड़खाना में कमजोर, बीमार गाय धड़ल्ले से काटत जा रहल बाड़ी। गोहत्या बन्द करावे के चाहीं। एही में मानव समाज क भला बा। अपनी जीयत जिन्दगी में त गाय, मानवता की सेवा में लागले रहेलीं। मरला के बाद भी उनकी शरीर क सब अंग मानव की कामे आ रहल बा।

गाय की प्रति हमनी क घट रहल आस्था, विश्वास के बढ़ावे के चाही। जगह जगह गोआश्रय बनावल बा। ओमे भरपूर सहयोग यथाशक्ति देवे के चाही। उनकी रक्षा अऊरी बीमार गाय के देखभाल इलाज खातिर सहायता देबे के चाही। अगर हमनी के पुरनका भारत ले आवे के बा त इ नारा खूबे बुलन्द करे के परी कि "धरम के जय होखे अधरम क नाश होखे, गऊ माता क सेवा होखे प्राणी में सद्भावना होखे, विश्व क कल्याण होखे"।

परिचय-देश खातिर, भाई के प्यार आ हम दू हमार एक जइसन पुस्तकन के लेखक डॉ. फतेहचंद बेचैन बलिया के रहनिहार हईं।

उषा पाण्डेय 'कनक'

सजाव दही

जइसे-जइसे हमनी के अपना गाँव से दूर होत जात बानी जा ओइसे-ओइसे ऊ पुरान स्वाद जवना के नाम लेत मूँह आ नाक में ओकर महक अउर सुवाद महसूस होखे लागेला जइसे लखटो, टिकरी, पटौरा। एही तरह से महत्वपूर्ण रहल सजाव दही। एकर त बाते निराला बा। एकरा बिना कवनो परोजन के कल्पना ना कइल जा सकेला।

ऊ लाल लाल खूब मोट मलाई वाला माटी के हड़िया में सोन्ह महक जेकर जमावे के तरीका भी बड़ा जिम्मेवारी के काम रहे। माटी के बोरसी में गोयिठा के सुलुगत आगि पर माटिये के हड़िया भा अलमुनियम के तसला जवना के माटी से लेवर दिहल जात रहे, जवना से आग के गरमी एक समान रूप से भीतर दूध में धीरे-धीरे पहुँचे अउरु गोरस निमन से अउँटा जाय। बोरसी के धुआँ के सोन्ह महक गोरस के महका देव। अउँटात-अउँटात दूध कुछ गाढ़ हो जाला अउर ऊपर मलाई के ललहुत रंग के तह जम जाला त ठंडा होखला पर ओमे जोरन डालल भी एगो कला रहत रहे। दूध के मात्रा के हिसाब से ताजा दही जवन खटतुरुस ना होखे के चाही, उ दूध के अनुपात में धीरे से मलाई हटा के एगो कोना में डाल दिहल जात रहे। करीब आठ घंटा बाद बढ़िया सजाव दही एह तरह से तैयार हो जात रहे।

शादी बियाह होखे, मुंडन संस्कार होखे चाहे कवनो परोजन ए दही के बिना सब फीका। दियरा से गोप समाज आपन-आपन सजाव दही लेके दुआर पर पहुँच जात रहे लोग आ सबके दही एगो बड़ तसला में रखा जात रहे। तब पंगत में खाना खइला के बाद चलत रहे दही अउरु चीनी।

खिचड़ी के दही चिउरा के के भुलाइ! हमनीके घर में खिचड़ी से एक दिन पहिले विधिवत रूप से बोरसी त ना बाकिर गैस पर ही धीमा-धीमा आँच पर दूध के गरमायी के खूब ध्यान अउर प्रेम से दही जमावल जात रहल हा, बाकिर अब सब खत्म हो रहल बा। सब बाजार पर आश्रित होके एगो अलगे समाज बनल जाता। अब डेयरी प्रोडक्ट के रूप में नाना प्रकार के दही के हंक कर्ड, योगर्ट अउर जाने कवना-कवना रूप में उपलब्ध बा, लेकिन सजाव दही जइसन स्वाद अब कहीं ना मिलेला। जे खइले बा उहे ओकर स्वाद जानता। आज के पीढ़ी का जानी 'सजाव दही'!

परिचय-काव्य-संकलन ''मस्तूल'' से लोकप्रिय, बलिया के रहनिहार हिंदी-भोजपुरी के लेखिका उषा पांडेय कनक मोहाली, पंजाब में रहेली।

डॉ. पुष्पा सिंह विसेन

किसान के आय बढ़ावे के उपाय

आपन मूल्य उद्देश्य से भटकल किसान आज आपन अस्तित्व मिटावे में सबसे आगे बा। अपनी तरक्की के राह छोड़िए के बिना मतलब के कवनो मुद्दा होवे ऊ भीड़ के हिस्सा बने में अपनी अस्मिता के मटियामेट करते बा, साथ ही आपन कीमती समय भी भीड़ के समर्थन में बर्बाद करत बाटे। हमनी के देश कृषि प्रधान हवे, लेकिन देश में कवनो अनशन आन्दोलन होखे, ओह में सहज सरल किसान अब कुटिल रुप अख्तियार करिके आपन सहयोग देखावत बाटे। ई सब किसान लोगन की भलाई के पक्ष में नइखे। कुछ लोग खाली आपन निजी स्वार्थ के साधे खातिर देश में कवनो भी मुद्दा होखे, अन्य किसान लोगन के भड़का के देश विरोधी माहौल तैयार करत बाड़े।

ए तरह के तमाम सामाजिक सामूहिक विवादित आंदोलन के बढ़ावा देवे में आगे आ के देश के अहित त करते बान, अन्य किसानन के भी समय बर्बाद करत बाड़न। ई ठीक नइखे।

किसान के अपनी खातिर ई सोचे के चाहीं कि जवन सामान उनके ऊगावल अन्न, सब्जी आदि से बना के दसगुना दाम में हमनी के सामने पैकेट में आवता, उ सब हमनि के भी कर सकेनी। आमदनी बढ़ावे खातिर एहू दिशा में सोचल जा सकेला।

आखिर तमाम विदेशी कम्पनी हमनी के देश में हमरे उपजावल फसल से कमाई करते बा। त काहें ना हम सब भी खेती बाड़ी के जरिए उगावल आपन सामान खुद तइयार करके आपन आय बढ़ावे के सोचल जाय। आज सरकार हर तरह के लघु उद्योग के सुविधा देत बा। ऊ छोड़ि के आजु के किसान एगो अलगे तरह के राष्ट्र के अहित में अग्रणी होत बा। हालांकि अइसन लोग मुट्ठिए भर बा।

आखिर, कब अइसन दिन आई कि चिप्स आ पापकार्न, जइसन हजारों समान हमरी देश के किसान लोग खुदे तइयार करें लगिहें। अऊर अपनी खेती बाड़ी से आपन आय दस गुना करिके आपन दशा अऊर दिशा बदलि के एक श्रेष्ठ व्यवसायिक किसान बनि के अपनी विकास के झंडा गड़िहन। किसान के आपन आय बढ़ावे के उपाय खुद भी करे के पड़ी।

परिचय-नारायणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. पुष्पा सिंह विसेन 6 दर्जन से अधिक पुस्तकन के लेखिका हईं।

विविधा

अमित दुबे

किसान के पीड़ा

भारत की आजादी के अनेक दशक बीत गइल बा। भारत अनेक क्षेत्र में बहुत विकास क लेहले बा, औरी अबहीं बहुत आगे जाए के बा। आज भारत में विश्व के सफलतम अंतरिक्ष योजना के पूरा कइल गइल बा। कोरोना काल में त भारत कई गो देशन के आपन बनावल वैक्सीन भेजलस। भारत में बहुत बरियार आर्मी बा। भारत अब दुनिया के मजबूत अर्थव्यवस्था में पांचवा स्थान पर बा। एह कुल बात पर सोचला पर छाती गर्व से फूल जाला। लेकिन बात जब किसानी के होला त मन मुरझा जाला। काहे कि आजो किसानी से बहुत जनता के रोजगार औरी देहाड़ी के इंतजाम होला। बहुत जाना की घरे के चूल्हा चौका किसानी के भरोसे चलेला। लेकिन अबहियों ए क्षेत्र में ओतना विकास देखे के नइखे मिलत जेतना चाहीं। चलीं, ए लेख में इहे पड़ताल कइल जाव कि ई परेशानी कौना-कौना वजह से बा।

तनी अतीत में झांक के देखल जाव, त किसानी में ई कुल कौनो नया परेशानी ना कहल जा सकेला। ई मुगल शासक लो की बेरा से बा। एही से त बाबा तुलसी दास जी कहले बानी-

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों, 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी॥

मतलब कि किसान, भिखारी, बनिया, बेरोजगार सभे ओह बेरा की व्यवस्था से बदहाल रहे। कम बेस आज भी स्थिति ओइसने बा। लेकिन किसानी में त उहे दशा बा।

छोट किसान की लगे पूंजी के अभाव होला। ओकरा उधारी पर बीज, खाद, मशीन आदि लेबे के पडेला। एकरी कारण किसान के फसल बहुत बार पछुवा जाला। कई बार संस्थागत ऋण की अभाव में ऊ साहुकार की ऋणजाल में फंस जाला। अंतिम में ओकर या त जमीन बंधक रखा जाला चाहे ऊ जान से हाथ धो बइठेला।

भारत के अनेक क्षेत्र में सिंचाई सुविधा के अभाव बा। मजबूत किसान त ट्यूबवेल जइसन महंग सुविधा के व्यवस्था क लेवला, लेकिन गरीब किसान ना क पावेला। तब ओकरा मानसून पर निर्भर होखे के पडेला। कई बार जब मानसून लेट हो जाला त फसल बिना पानी के सूख जाला। फसल बेचे के त छोड़ीं, खाए भर के भी ना हो पावेला। अगर ओहि में कौनों प्राकृतिक आपदा आ गइल त परेशानी दुगुनी हो जाले।

छोट किसान के फसल ले के बाजार पहुंचे में अनेक परेशानी के सामना करे के पडेला। परेशानी से बचे खातिर ऊ न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से भी कम दाम पर फसल बेच देला। भारत के पिछड़ा राज्य और पिछड़ा जिला में भंडारण सुविधा के बहुत अभाव बा। अगर सुविधा बा भी त बहुत मंहग बा। छोट किसान खातिर त संभव नइखे।

2014 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के मन में किसान के आय 2022 तक दुगुना करे के विचार आइल। ओकरा खातिर सात सूत्री योजना चलावल गइल। किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना, पर ड्रॉप मोर क्रॉप आदि जइसन कइगो योजना चलावल गयिली सन। लेकिन अबहूँ किसान के परेशानी कम भइला के नाम नइखे लेत। किसान के करेजा के पीड़ा हे तरे कहल जा सकेला कि-

मेरे आंखों में आसूं, तुमसे हमदम क्या कहूं, क्या है,
बह जाए तो दरिया है, ठहर जाए तो अंगारा है।

किसान के परेशानी से बचावे खातिर अनेक आयोग और समिति बनली सन। और ऊ सब के सुझाव भी बहुत अच्छा बा, लेकिन हम एगो बात कह के आपन बात खतम करब कि जे तरे सरकार वोट बैंक खातिर जाति सर्वेक्षण और परिवार सर्वेक्षण पर ध्यान दे रहल बिया, ओही तरे किसान कल्याण खातिर एगो महा किसान सर्वे करावे, और बड़ किसान की साथ साथ छोट किसान के समर्थन करे वाला कृषि नीति बनावे।

परिचय-अमित दूबे, उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत।

पश्चिम चंपारण के राजकीय विद्यालय में कार्यक्रम-

चान सूरज बनाईं लइकन के...

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मलकौली, पटखौली, बैरिया, पश्चिम चंपारण, बिहार पहुँचले साहित्यकार मनोज भावुक। भव्य स्वागत के बाद अपना उद्बोधन में मनोज बतवले कि हमरो शुरूआत अइसने विद्यालय से भइल बा त हमरा ओह घरी के इयाद आवत बा।

मनोज बच्चन खातिर मोटिवेशनल स्पीच देलें, आपन अनुभव साझा कइलें आ आपन बहुत सारा हिंदी-भोजपुरी के प्रेरणादायक गीतो-गजल सुनवले। जब उ सुनवले कि 'चान सूरज बनाईं लइकन के, घर में अपने अँजोर हो जाई' त बहुत देर ले ताली गूँजल।

बैगलेश शनिवार के अवसर पर आयोजित एह विशेष कार्यक्रम में अतिथि मनोज भावुक के हाथे विद्यालय के शिक्षक यादवलाल चौधरी आ हेना प्रवीन के आदर्श शिक्षक सम्मान प्रदान कइल गइल। बीपीएससी से नियुक्त नया शिक्षक मुकेश कुमार सिंह, रितेश कुमार आ रमेश कुमार सिंह के भी सम्मानित कइल गइल। प्रत्येक वर्ग के एक-एक बच्चा के भी श्रेष्ठ छात्र के रूप में पुरस्कृत कइल गइल। छात्र-छात्रा से भरल प्रांगण में एह अवसर पर विद्यालय के शिक्षक चन्द्रभूषण तिवारी, राजन कुमार गुप्ता, सावित्री कुमारी आदि शिक्षक-शिक्षिका उपस्थित रहले। स्वागत आ धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. दिवाकर राय जी कइनी।

उत्तर प्रदेश साहित्य सभा के गोष्ठी

27 नवंबर 2023, उत्तर प्रदेश साहित्य सभा के बलिया इकाई के प्रथम बइठक कुँवर सिंह इण्टर कालेज के सभागार में सम्पन्न भइल। जनपद के वरिष्ठ कवि शशि कुमार सिंह 'प्रेमदेव' के संयोजन में आयोजित विचार गोष्ठी सह काव्यपाठ के एह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कवि मनोज भावुक रहलें।

एह अवसर पर दिल्ली से आइल मनोज भावुक के उच्च स्तरीय गीत-गजल आ स्थानीय साहित्यकारन के प्रस्तुतियन के आनंद लीहल गइल। कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार यशवंत सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य कामेश्वर नाथ श्रीवास्तव, पत्रकार उमेश चतुर्वेदी, शिवजी पाण्डेय रसराज, आशीष त्रिवेदी, शंकर शरण काफिर, डॉ एसपी सिंह, डॉ नवचंद्र तिवारी, डॉ राहुल पाण्डेय, डॉ पवनेश तिवारी, प्रेमचंद गुप्ता, डॉ कादम्बिनी सिंह, प्रधानाचार्या उमा सिंह, विंध्याचल सिंह, श्वेतांक, राम बहादुर राय, विजेंद्र प्रताप सिंह, अनिल कुमार सिंह, गायक विजय प्रकाश पाण्डेय, शैलेन्द्र मिश्र, काशी नाथ ठाकुर, राकेश दुबे, मुकेश चंचल, संजय सिंह, धर्मराज गुप्ता आदि उपस्थित रहे। अध्यक्षता वरिष्ठ भोजपुरी कवि बृजमोहन प्रसाद अनारी, विशिष्ट अतिथि गोपाल जी, महाविद्यालय के प्रबंधक अशोक श्रीवास्तव, संचालन हिन्दी के प्राध्यापक डॉ. प्रमोद शंकर पाण्डेय आ आभार प्रदर्शन डॉ यशवंत सिंह जी कइनी।

डाक्टर प्रभाकर पाठक, डॉ. हरिन्द्र हिमकर, गोपाल जी राय, निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव, प्रेमशीला शुक्ल, बिनय बबुरंग, डॉ.कादम्बिनी सिंह, एस डी ओझा, गायत्री कुमारी, गीता चौबे गूँज, प्रो. विनोद कुमार मिश्र, निर्मल सिंह, गोपाल ठाकुर, दिनेश पांडेय, डॉ नीलम श्रीवास्तव, डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह, रचना झा, इरशाद खान सिकंदर, मीरा श्रीवास्तव

का कहीं, कहाते नइखे, कहला बिना रहाते नइखे

भोजपुरी जंक्शन तऽ अपना प्रत्येक अंक से चारि ओर घूम-घूम के धूम मचवले बा। एक, दू, तीन, तेसर के बाद चउथको अंक निकली, मतलब अभी त पोसाके पेन्हाबल गइल बा, चंदन आ टीका बाकिए बा। एक से एक बढ़ के अंक, कि 'अंक' देबे खातिर कौनो परीक्षक के सामने अंककोश आपन हाथ खड़ा कर दीही। मनोज भावुक भोजपुरी के भगीरथ भ गइल बाड़न आ बुझात बा कि ए गंगोत्री के ऊ गंगासागर तक पहुंचाइए के दम लिहन। इनका दोसरका अंक के संपादकीय के एगो वाक्य देखीं- **'भाव, भावना, संवेदना, तड़प, बेचैनी जब एक्स्ट्रीम पर भा एगो लेवल पर पहुँचेले त उहाँ कुछ बात होला।'** का बात होला भाई?- अजगूत सपना देखाला। त अपना सपना के दीवाना, परेशानी के परवाना आ मेहनत के मरदाना लगातार खेत जोते पर कछौटा काछ लेले बाड़न। बाबा तुलसी कह गइनीं कि-जस काछिय, तस चाहिए नाचा। नाचऽ भाई भावुक, नाचऽ। भोजपुरी के गिरि के छिगुनी पर नचाके गिरधर बन जाऽ।

दोसरका अंक के आलेख सब अइसन बुझाता कि भोजपुरी खेती पर एकदम टटका-टटका, शोधपरक आलेख एकदम छिरिया आ छरिया गइल बाड़े सँ, कुछ नया कहे खातिर। दिनेश पांडे के खेतिहर शब्द-शोध त अनूठा बा। उनकर आलेख मनबोध करा देहलस। अधीत आदमी बाड़न। वेद-वेदांग, उपनिषद, महाकाव्य से लेके नवही समय खातिर सब कुछ परोस देले बाड़न। ओइसे त लेखक सब एक से एक सकल रणधीरा, भोजपुरी के एहडति शोध-बोध आ गोड़ाई-खोदाई कइले बाड़न कि तारीफो के तारीफ करे के पड़ी। चंदेश्वर भारती के एगो कविता के पाँती याद आवत बा जे मनोज भावुक पर एकदम फिट बा-

"हम कोड़ब, झोड़ब, का करबऽ ? हम बोअब, रोपब, का करबऽ ?
हम फसल उगाएब, का करबऽ, हम लाल कहाएब, का करबऽ ?"

मनोज भावुक एही मूड में बाड़न। भोजपुरी के लाल!

खेती-किसानी के तेसर अंक कृषि-जीवन के संस्कृति, मनोहर पर्व-त्योहार के छवि, पौधा-पेड़ सब के जैवीय महत्त्व, गोबर से लेके ज्वार-बाजरा के बहार, गाँवन के थाती, देस-बिदेस में भोजपुरी से लागल लोकसाहित्य खेतीबारी के मौज-मजा में, गजल में सजल, खेती-किसानी के आ इतिहास से त पाटल पड़ल बा। लोकोक्ति, मुहावरा, मौसम के मिजाज पर एक से एक अजगूत आलेख आ शोध के बोध से भरल रचना के 'सजाव' अइसन जमावल बा कि मिजाज तर कऽ देले बाड़न मनोज जी। हम अपना अनुभव से साफ कहब कि लिखल आसान बा, कहलो आसान बा, बाकिर कवनो बात के एकट्ठा क के, मनोहर रूप में, महफिल में, महका-गमका देहल, बड़ा मुश्किल बा। मनोज भावुक अइसन संपादक ए मेहनत में केतना पिसाइल आ पेराइल होइ, इ बूझे के बात बा। खैर, हमार शुभकामना बा ए मशक्कत खातिर-

"नामी बगैर मशक्कत, कोई नहीं हुआ।
अकीक सौ बार कटा, तब नगीं हुआ"।।

रंग त ऊ जे सुरंग हो जाव, मर्द त ऊ जे गर्द झाड़ दे। फेर चउथको अंक के नेओता पठा देले बाड़न।

सधन्यवाद,
डाक्टर प्रभाकर पाठक, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष
ल.ना.मि.विश्वविद्यालय, दरभंगा

तीन भोजपुरिया देशन के आलेखन के सहेज के खास बनल अंक

छठ पबनी के शुभकामना लीं मनोज जी! किसानी का तिसरकी कड़ी में, तीन भोजपुरिया देशन के आलेखन के सहेज के एह अंक के खास बना दिहनी। तेकरा ऊपर, छठ परब से एह अंक के जोड़ के आउर कमाल क दिहनी।

कतिकी समृद्धि के औकात भर सहेज-समेट के वैदिक देव सूर्य के ई पूजा पद्धति सांच कहीं त भोजपुरी जीवन दर्शन आ भाव लोक के समहर झलक देखा देला। माटी-पानी, कतिकी फल मूल मांग-जुटा के आराधना करे के अइसन भाव भोजपुरिये समाज में सम्भव बा। एह अंक में भी नीक आलेखन के प्रस्तुति सराहनीय बा।

सम्पादकीय राउर माटी से भावनात्मक जुड़ाव के प्रमाण हो गइल बा। अपना भाव-भाषा आ संस्कृति के जोगावे खतिरा राउर भावुकता आबाद रहो !

फेरु शुभकामना लीं! छठ परमेसरी अपना समाज के सद्बुद्धि देस!

डॉ. हरिन्द्र 'हिमकर', पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी, खेमचंद ताराचंद कॉलेज, रक्सौल

भोजपुरी जंक्शन त कमाल क दिहलस

भोजपुरी जंक्शन त कमाल क दिहलस, एक के बाद एक तीन गो खेती किसानी पे अंक निकाल दिहलस। चौथा भी आ ही गइल। जेके जवन पढ़े के चाही कुल मिल गइल। कविता, कहानी, गीत गवनई कुल पढ़े के मिल गइल, एतना मेहनत से तीनों, अंक तैयार कइल गइल बा कि ई अंक ऐतिहासिक बा, ई धरोहर बा। केहुके अगर कबो ए विषय पर कुछ खोजे के पड़ी त बार-बार ए विशेषांक के खोजी तबे ओकर खोज पूरा होखी। एकरा खातिर पत्रिका के संपादक मनोज भावुक के बधाई दिहल जरूरी बा।

गोपाल जी राय, लेखक-पत्रकार, दिल्ली

भूलल-बिसरल चित्र आँखि का सोझा खड़ा करता ई अंक

'भोजपुरी जंक्शन' के संपादक मनोज भावुक के मन विहग कल्पना के पाँखि फड़फड़ावत सगरी दुनिया-जहान में उड़ान भरत रहेला आ भोजपुरी जंक्शन के पाठकन खातिर हमेशा कुछ-ना-कुछ नया लेके आवेला। एही कड़ी में खेती-बारी विशेषांक के तीसरा भाग सामने बा। ई तीसरका भाग पिछला दूनों भाग से कवनो माने में उनइस नइखे बलुक बीसे बा।

एह अंक के संपादकीय बहुते बढ़िया बा-कुछ-कुछ आध्यात्मिक कविता नियर। संपादक संकेत में बहुत कुछ कह गइल बाड़ें। आर० के० सिन्हा के लेख आज के शिक्षा-पद्धति के दुखत रग पर अंगूरी रखत बा। आवरण कथा स्तम्भ के सगरी आलेख छोट काया के शोधे बा। ब्रजभूषण मिश्र के आलेख बहुत सगरी भूलल-बिसरल चित्र आँखि का सोझा खड़ा करता। खेती-किसानी भोजपुरी, हिंदी भा दोसर कवनो लोकभासा के साहित्य के प्रिय विषय-वस्तु रहल बा। प्रेमचंद के 'गोदान' त किसान के आत्म-कथा ही बाटे। जयकांत सिंह 'जय' के 'खेती-किसानी के अजगूत कहानी' बढ़िया लागल। अइसे त पूरा पत्रिके पठनीय आ संग्रहनीय बा। सब रचनाकार लोगन के साधुवाद!

योग का धारणा का अनुसार मनुष्य के अस्तित्व पांच भाग में बंटल बा जेकरा के पंचकोश कहल जाला। ई पंचकोश हवे-अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय आ आनंदमय कोश। सगरी दिखाई देवे वाला जगत में अन्न आ भोजन से बनल हमनी के शरीर आ दिमाग भी शामिल बा। इहे अन्नमय कोश कहाला। अउर सगरी कोशन के आधार अन्नमय कोश ह। एह वजह से अन्न के ब्रह्म कहल गइल बा। त ई स्पष्ट हो गइल कि मनुष्य के अस्तित्व खेती-बारी पर ही निर्भर बा। किसान के दर्जा ब्रह्मा से कम नइखे। अब एकरा बाद एह विशेषांक पर कहे खातिर कुछुओ नइखे बाचत। एक बार फेरु संपादक आ रचनाकार लोगन के साधुवाद!

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव
वरिष्ठ साहित्यकार, राँची

'खेती-बारी विशेषांक' के अपना समाज आ साहित्य की सेवा का रूप में याद राखल जाई

खेती-बारी विशेषांक का रूप में भोजपुरी जंक्शन के तीन अंक निकलल बा। ये तीनों के मिला के देखल जाए त भोजपुरी क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक रूप के कई छवि देखल जा सकेला। भोजपुरिया आदमी के गरीबी, वैभव, करुणा, स्वाभिमान, परोपकार, उत्सवधर्मिता, राग, विराग जइसन अनेक विशेषता एमें सहेजा गइल बा। सामग्री के चयन आ प्रस्तुति बहुते सजगता से भइल बा। एकरा खातिर संपादक मनोज भावुक आ उनुका पूरी टीम के बधाई।

कुल्ही रचना बहुते मन से लिखाइल बाड़ी सन। अइसन लागता जइसे सब आपन-आपन आहुति जग्गी में डालत होखे। बहुत बढ़िया काम भइल। ई अपना समाज आ साहित्य की सेवा का रूप में याद राखल जाई।

विशेषांक का तीसरा अंक में एगो शुभ सूचना मिलल-माननीय श्री रवीन्द्र किशोर सिंहा जी क मानद डाक्ट्रेट के उपाधि से विभूषित कइल गइल। हमनी की ओर से हार्दिक बधाई आ अशेष मंगल कामना।

प्रेमशीला शुक्ल
वरिष्ठ कथाकार, देवरिया

बिना खेत-खलिहान क जिनगी क पहिया रुक जाई

राउर ई कदम भोजपुरी साहित्य खातिर महान बा। रउवा केहू से कम नइखी। रउवा भोजपुरी जंक्शन बना के एगो लाइन कविता की योर जात बा। जेवन कविता क जरिए समाज क सुतला से जगावत बा। दुसरी लाइन खेत-खलिहान की योर जात बा। बिना खेत-खलिहान क जिनगी क पहिया रुक जाई। पहिया चलत रहो, इहे सीख बा जंक्शन के।

बिनय बबुरंग, वरिष्ठ कवि, गाजीपुर

जोगा के राखे जोग एगो थाती बा ई अंक

भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक भाग-3 पढ़ के उठनी हं त कलम प्रतिक्रिया देला बिना रह ना सकल हियऽ। आवरण पृष्ठ से ले के अंतिम पत्र ले पढ़ला के बाद गर्व के एगो अलगे भाव मन में ले के पत्र लिख रहल बानी।

सबसे पहिले हम आदरणीय आर के सिन्हा सर, आदरणीय मनोज भावुक भैया के बधाई देम उहाँ सब के शानदार उपलब्धि पर। इहे ना, संपादक के सांच भूमिका निभावत मनोज भैया के सम्पादकीय मन के छू गइल बा अबकी। खेत-बारी के इज्जत बूझे वाला लोग त पहिले रहले रहे लोग, बाकिर एहू पीढ़ी के इंहा के बुझवा रहल बानी। हम प्रयास करेम कि अधिका से अधिका युवा पीढ़ी ई अंक पढ़ो।

आर के सिन्हा जी के मातृभाषा से जुड़ल आलेख एगो जरूरी आलेख लागल ह। वास्तव में लइकन के मातृभाषा में कुछऊ समझा दीं, लइका कबो ना भुलालन सन। डॉ० ब्रजभूषण मिश्रा जी के 'भोजपुरी भाषा में खेती किसानी' आलेख पढ़ के कई गो नया बात जाने के मिलल ह। एक से एक आलेख से समृद्ध ई अंक एगो जादुई अंक से कम नइखे कतहीं से। इरशाद खान सिकंदर जी के लिखल 'हिन्दी उर्दू गजल में खेती किसानी' बहुत बेहतरीन लागल ह। 'मिलेट्स के खेती समय के मांग' एगो जरूरी विषय पर सामयिक लेख बा। कुल मिला के ई अंक जोगा के राखे जोग एगो थाती बा।

डॉ. कादम्बिनी सिंह
शिक्षिका - कवयित्री, बलिया

तीनों अंक बड़ा लाजवाब बा

भोजपुरी जंक्सन के तीनो अंक पढ़े के मिलल। खेती किसानी से संबंधित ई तीनों अंक बड़ा लाजवाब बा। सब कुछ नपा तुला ज्ञान वर्द्धक बा। गजल/ कविता में किसानी के सुरुचिपूर्ण ढंग से बखान बा। मारीशॅस में लोक साहित्य के साथे साथ खेती किसानी कइसे कइल जाला, एकरो बढ़ियाँ तरीका से वर्णन कइल बा। तीसरा अंक में कपारफोरऊल बड़ा नीक लागल। डड़ार कटवा लोग पहिले तऽ डड़ार काटेला। फेनु कपार फोरे के उतजोग करेला। अतना सुंदर पत्रिका के प्रकाशन खातिर एकर संपादक मनोज भावुक जी आ टीम के अनघा बधाई।

एस डी ओझा, डिप्टी कमांडेंट
इंडो-तिबेटन बॉर्डर पोलीस फोर्स

खेती आ गांव के तरफ रूझान बढ़ी

"खेती-बारी विशेषांक" हम पढ़नी। आज सब कोई अपना लइकन के पढ़ावे खातिर अपन गांव-शहर से दूर भेज देला लोग आ लइकन सब हुएं पढ़ के नौकरी, शादी बियाह कर के बस जाता लोग। चाहे अफसर के बच्चा होखे चाहे किसान के, सबकर एके कहानी बा। अब खेती-बारी से कोई के कवनो सरोकार नइखे रहत। अइसन समय में रउरा लोग जइसन लेखक लोग के कलम से ही लोग के जीवन बदल सकेला। ई विशेषांक पढ़ के मन के बहुत बढ़िया लागल। संतोष भइल कि ई सब पढ़ के लोग के समझ आई कि खेती से जुड़ल रहल केतना जरूरी बा।

खेती-बारी विशेषांक में सब लेख अन्तर्मन पर छा गइल बा। उम्मीद बढ़ल कि जब तक मनोज भावुक जी जइसन संपादक लोग ज्वलंत मुद्दा पर लेख संपादन के माध्यम से लोग के जागरूक करत रहिहें तब तक हमनी के देश के साथ-साथ दुनिया के लोग के भी खेती आ गांव के तरफ रूझान बनल रही, बल्कि अउर बढ़ी।

गायत्री कुमारी,
प्रधानाध्यापिका, श्री शिव नारायण
मारवाड़ी कन्या मध्य पाठशाला, रांची

कविता कहाँ नइखे

खेती-बारी विशेषाक-3 के संपादकीय पढ़ के मन अघा गइल। साँचे कहनी... कविता कहाँ नइखे!

भँइस के पागुर में,
गुड़ के जाउर में,
बैलन के घंटी में,
आजी के अंटी में।

गवनई आ सोहर में,
गाई के गोबर में,
पोखर के पानी में,
पशुअन के सानी में।

खेत-खरिहान में,
बाबा के दलान में,
गौशाला बथान में,
होत साँझ-विहान में।

दूध-दही-मट्ठा में,
पहलवानन के लट्ठा में,
जमीन के बिगहा-कट्ठा में
चौपाल के हँसी-ठट्ठा में।

कहवाँ कविता नइखे समाइल... मनोज भावुक जी के भोजपुरी भाखा-समर्पण आउर भोजपुरिया गाँव-संस्कृति के संरक्षण के प्रति उनकर उदारता के जेतना बड़ाई कइल जाए कम बा। उनका एह काम में दिन दूनी रात चौगुनी सफलता मिले, इहे हमार शुभकामना बा।

गीता चौबे गूँज, कवयित्री,
बेंगलूरु, कर्नाटक

भोजपुरी की संतानों को इस पत्रिका से जुड़ना चाहिए ताकि ...

भोजपुरी भाषा के लिए समर्पित भोजपुरी कवि/शायर, विचारक मनोज भावुक के संपादन में प्रकाशित होने वाली एक स्तरीय पत्रिका है- भोजपुरी जंक्शन। यह पत्रिका न केवल भारत वरन नेपाल, मॉरीशस सहित तमाम गिरमिटिया देशों में ख्याति प्राप्त कर रही है। पत्रिका का खेती-बारी पर केंद्रित यह तीसरा अंक है। इस अंक में प्रकाशित संपादकीय सहित सभी सामग्री स्तरीय और पठनीय है। दुनियाभर में फैले हुए भोजपुरी की संतानों को इस पत्रिका से जुड़ना चाहिए ताकि अपनी भाषा और संस्कृति को और गहराई से जान सकें। इस अंक में सुविख्यात जनकवि रमता जी पर केंद्रित एक आलेख मेरा भी है।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र, संप्रति आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय, अगरतला

राष्ट्र गौरव देबे वाला ई अंक बा

भोजपुरी जंक्शन के खेती बारी विशेषांक में का नइखे। सब बा। किसानी अउर किसानन के राष्ट्र गौरव देबे वाला ई अंक बा। आरे ई त थाती बा। कबीर से लगायत देशभक्ति, लोककोक्ति, घाघ, गजल, छठ, गोबर से गणेश तक के चर्चा बा।

कुल मिला के मनोज भावुक माटी के थाती घइला में रख देले बाड़न। खांची भर बधाई भाई।

निर्मल सिंह
अध्यक्ष,
वीर कुँवर सिंह फाउंडेशन

नेपालीय भोजपुरी में खेती-किसानी

हमार मित्र गोपाल अश्क के नेपालीय भोजपुरी में खेती-किसानी से जुड़ल काव्य-समीक्षा भोजपुरी जंक्शन में प्रकाशित भइल बा। बहुते मेहनत के साथ एगो संग्रहनीय आ पठनीय आलेख तइआर कइला बदे मीतराम के आ पत्रिका के संपादक मनोज भावुक जी दूनू जने के विशेष बधाई आ साधुवाद !

गोपाल ठाकुर
जनगायक आ भाषाविज्ञ, नेपाल

कृषि पर्व के रूप में छठ व्रत के पड़ताल

छठ व्रत वैदिक **सूर्योपासना** के बदलल रूप ह। ई एकल देव पूजा के बजाय शक्ति के षष्ठी सरूप (कात्यायनी) के आराधनो से जुरल बा। कृषि पर्व के रूप में एकर पड़ताल करत एगो हमरो आलेख 'भोजपुरी जंक्शन' के नया अंक (छठी मइया के अर्पित खेती-बारी विशेषांक) में शामिल कइल गइल बा। संपादक मनोज भावुक जी के प्रति आभार व्यक्त करत बानी।

दिनेश पांडेय,
वरिष्ठ साहित्यकार, पटना

शब्द रंक है भाषा

छठी मइया के समर्पित भोजपुरी जंक्शन के "खेती-बारी विशेषांक भाग-3" के देख के मन गद गद हो गइल। भारत कृषि प्रधान देश ह आ जेतना भी परब त्यौहार इहां होला ओहिमें छठ एगो अइसन परब ह जवना में बिना कवनों पंडित के, बिना कवनों रीति रिवाज के हर भोजपुरिया तन मन धन से भगवान भास्कर के पूजा, अर्चना करेला आ उहो कवनों मंदिर में ना बल्कि नदी पोखरा, तालाब के लगे। एह परब में प्रकृति के, खेती के बहुत नजदीक से देखे, जाने के आ समझे के मौका मिलेला। ई अंक बहुत ही सुन्दर आ सार्थक लागल। हमनी के ग्रामीण संस्कृति में लोकोक्ति आ मुहावरा के बहुत महत्वपूर्ण स्थान बा जवना के उदाहरण भावुक जी अपना संपादकीय में बहुत सुन्दर ढंग से परोसले बानी। हंसुआ के बिआह में खुरपी के गीत, हरवाही में बानर के नाच, धान के खेत पुआरे से चिन्हा जाला, गाछे कटहर ओठे तेल --अइसन लाखों लोकोक्ति बा जवना के सीधा सम्बन्ध खेती आ किसानी से बा।

हम "खेती बारी" के तीनू अंक पढले बानी। पीडीएफ का वजह से पढ़े में तनी गंजन होला बाकिर हमनी खानी किसान परिवार आ गांव में आपन बचपन बितावे वाला लोग एह पत्रिका के पढ़ें के लोभ संवरण ना कर सकेला। पत्रिका पढ़ला पर बहुत कुछ आंखि के सामने लउके लागता ---हेंगी, बरही, ढेंकुल, हाथा, मूठ लिआईल, बनगड़ी -, बहुत कुछ -जवना शब्द से आज के पीढ़ी के कवनों जान पहचान तक नइखे। हमरा समझ से अपना बोली, अपना भाषा में जवन अनुभूति आ अभिव्यक्ति के क्षमता होला ऊ दोसर कवनों भाषा में ना होला। एह बात के समझे के जरूरत बा।

मनोज जी के एह प्रयास के जेतना सराहना कइल जाव, कमे कहाई। मॉरीशस, नेपाल, हिन्दी-उर्दू-कवनों साहित्य खेती बारी से अलग नइखे काहें कि अन्नपूर्णा से ही जीवन बा, सम्पन्नता बा, विकास बा। कुल्ही लेखक आ कवि सभे के हमरा ओर से बहुत बहुत साधुवाद बा आ मनोज भावुक जी के सराहना में त "शब्द रंक है भाषा" वाला पंक्ति चरितार्थ होई। बहुत बहुत शुभकामना।

डॉ नीलम श्रीवास्तव,
असिस्टेंट प्रोफेसर, हथुआ

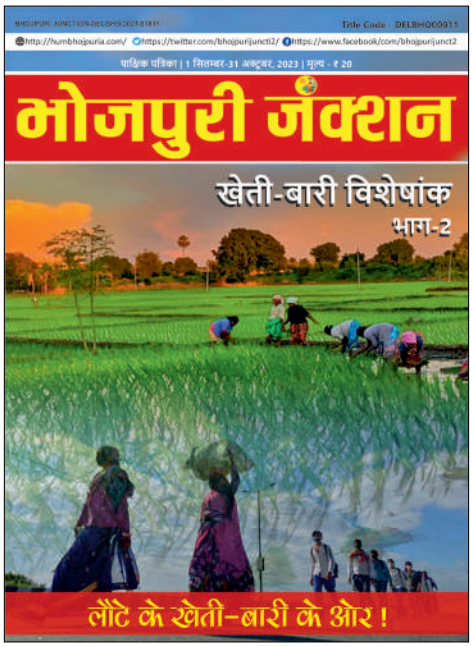

देश-विदेश के खेती-बारी के चरचा एह अंक के खास बनावत बा

भोजपुरी जंक्शन के खेती-बारी विशेषांक भाग-3 छठी मइया के अर्पित अंक बा। एह अंक में देश-विदेश के खेती-बारी के चरचा कइल गइल बा जवन सराहे लायक बा। साथ ही छठ पूजा आउर खेती पर भी आलेख शामिल बा जवन एह अंक के खास बनावत बा। अपना देश के मुख्य पेशा खेती बा। खेती पर एतना गंभीर चरचा से इ अंक अपने आप में स्पेशल बन गइल बा।

डॉ. सत्येंद्र प्रसाद सिंह, प्रभारी प्राचार्य,
हरिराम महाविद्यालय, मैरवा,
सिवान, बिहार

मन प्रफुल्लित हो गइल

खेती-बारी विशेषांक पाके त हमनी सभे के मन प्रफुल्लित हो गइल। चाहे ऊ भात के बात हो या एलोवीरा के आउर धान के। खेती-किसानी से जुड़ल सभ बतिया निमन लागल। उम्मीद बा कि आगे के अंक में भी अइसने जानकारी हमनी के मिलत रही। हमरा तरफ से तमाम टीम के आगामी अंक वास्ते बधाई आउर धन्यवाद।

रचना झा, दिल्ली

"भोजपुरी जंक्शन" के अब तक निरंतर यादगार अंक आये हैं

मनोज भावुक साहब के संपादन में निकलने वाली भोजपुरी पत्रिका "भोजपुरी जंक्शन" के अब तक निरंतर यादगार अंक आये हैं। इस बार के अंक में उर्दू हिंदी गजल में खेती किसानी पर एक मेरा भी लेख शामिल है। मैं स्वीकार करता हूं कि लेख लिखना मेरे बूते की बात नहीं है। ये लेख तो मनोज भावुक साहब ने मुझसे लिखवा लिया है, इसलिए यदि आपको कुछ पसंद आये तो आप बधाई भावुक साहब को दे सकते हैं।

इरशाद खान सिकंदर, शायर, दिल्ली

हमार दु शब्द

संपादक जी,

राउर खेती-बारी के तीनों अंक हमरा मिलल। हम पढ़ के गद-गद हो गइनी ह। ई पढ़ के जेतना भी प्रशंसा करी, हमार शब्द कम पड़ जाई। जे प्रकार माली सुंदर-सुंदर फूल चुन के एक ही धागा में गूथ के सुंदर माला तइयार करेला, ओइसही रउआ एक कुशल माली जइसन देश-विदेश (मॉरिशस, नेपाल, आपना देश भारत) के बड़े-बड़े (कलमकार) कवि, कवयित्री, लेखक बंधू लोगन के लेखनी के सृजन के अनमोल मोती एके धागा में गूँथ के एक खूबसूरत माला बना देले बानी। एह में कवितावली, दोहा, गजल, कहाउत, खेती में बोअनी, रोपनी के मोहक गीत, ई सब बड़ा ही रोचक रचना बा।

खेती-बारी विशेषांक पढ़ के हमार आपन गाँव के माटी आ आपन बचपन के ईयाद ताजा हो गइल ह। हमरो गाँव में खेती-बारी होत रहे। हमार बाबूजी भी खेती गृहस्थी करत करवावत रहनी। बाबूजी के देख के हमरो बहुत मन लागत रहे। हमनी सब भाई-बहिन बड़का आँगन में कियारी बना बना के धनिया, मेथी, सरसों, लहसुन, पियाज सब बोअत रहनी जा। बाबूजी पहिलही कह देत रही जेकरा कियारी में बराबर धनिया, मेंथी जामी ओकरा ईनाम मिली, ऊ ईनाम हमरा मिलत रहे। हम अपना गाँव घर के ईयाद कर के आत्म विभोर हो गइनी, भावुक जी रउआ सभे के वजह से, भोजपुरी जंक्शन के वजह से।
आभार।

मीरा श्रीवास्तव, वरिष्ठ साहित्यकार
पटना

उत्तर-सत्य युग में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पुनरावलोकन

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार-कवि-सम्मेलन-परिचर्चा-गायन

जीवनोदय शिक्षा समिति, गाजीपुर, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज, पासीघाट, अरूणाचल प्रदेश, आर्य महिला पी. जी. कॉलेज, वाराणसी, पी. जी. कॉलेज, गाजीपुर आ राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर के संयुक्त तत्वाधान में 2-3 दिसम्बर 2023 के कम्युनिटी हॉल, रामलीला मैदान, लंका, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश के सभागार में अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, कवि-सम्मेलन, परिचर्चा आ लोकगीत के कार्यक्रम भइल जवना में विश्व के अनेक देश के डेलीगेट्स, स्कॉलर, कवि आ कलाकार शिरकत कइलें। एह आयोजन के नाम दिहल गइल- "उत्तर-सत्य युग में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पुनरावलोकन" (REVISITING THE BHOJPURI LANGUAGE & LITERATURE IN POST-TRUTH ERA)

प्रो. (डॉ.) राम नारायण तिवारी एह कार्यक्रम के पिछला 28 साल से करा रहल बानी। एह बार आयोजन में उहाँ के साथे एगो युवा गायक पवन बाबू भी जुड़ गइल बाड़े।

कार्यक्रम के उद्घाटन कइनी हिन्दी विभाग, बीएचयू के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सदानंद शाही आ अध्यक्षता कइनी आकाशवाणी गोरखपुर के पूर्व निदेशक डॉ. नीरजा माधव। उद्घाटन सत्र में एस टी जस्सेल (टर्की), माइकल टी बोलेनॉक (अमेरिका), गोपाल ठाकुर (नेपाल), प्रगति त्रिपाठी (मॉरीशस), अनिल के प्रसाद (लीबिया) आ प्रोफेसर पी

राज सिंह (छपरा) भाग लेलें। स्वागत प्रोफेसर लेकी शिटाँग (अरुणाचल प्रदेश), संचालन डॉ जयशंकर सिंह आ धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर राघवेंद्र कुमार पांडेय कइलें।

एकरा बाद परिचर्चा सत्र भइल जवना के अध्यक्षता प्रोफेसर शांति स्वरूप सिन्हा (बीएचयू) आ संचालन डॉ. उदय पाल (बीएचयू) कइलें। एह सत्र में चित्रकला आ गीतकला पर संजीव सिन्हा (आरा), श्रीकांत दुबे आ श्रीमती वंदना दुबे (दिल्ली) अउर प्रवासी साहित्य पर डॉ. जीतेंद्र वर्मा (सिवान) व्याख्यान देलें। एही सत्र में मनोज भावुक (दिल्ली) भोजपुरी सिनेमा के सफर (1931-2023) पर विहंगम दृष्टिपात कइलें।

साँझ के आयोजित कवि गोष्ठी में विनय राय बबुरंग जी के अध्यक्षता आ सौदागर सिंह के संचालन में दू दर्जन से बेसी कवि काव्य-पाठ कइलें जवना में सर्वश्री सुभाष पांडेय, शिवधार तिवारी, कृष्ण मुरारी राय, प्रदीप मिश्र, सत्यनारायण पथिक, राज नारायण गुप्ता, शिब्बू गाजीपुरी आ मनोज भावुक प्रमुख रहलें।

रात भर चलल लोक गायन में रिंकी पांडेय, राकेश श्रीवास्तव, गजेन्द्र पांडेय, अंजनी उपाध्याय आ कॉलेज के दू दर्जन से बेसी छात्र-छात्रा गायन कइले। एही अवसर पर सलटू राम के धोबिया नाचो भइल। धन्यवाद प्रभारी पवन बाबू देलें।

दोसरा दिन के पहिला सत्र रहे- भोजपुरी भाषाः विचार अउर दर्शन जवना में प्रतिभागी रहलें- गोपाल ठाकुर (नेपाल), गोपाल अश्क (नेपाल), राजेन्द्र कुमार राय मिसिर (मॉरीशस), सिद्धार्थ शंकर तिवारी (छपरा), डॉ संतोष सिंह आदि भाग लिहलें।

समापन सत्र बीचयू के हिन्दी विभागाध्यक्ष वशिष्ठ अनूप के भाषण से भइल। अध्यक्षता प्रोफेसर पृथ्वी राज सिंह आ संचालन डॉ उमा निवास मिश्र के रहे। दिल्ली से आइल डॉ सुनील राय भी आपन वक्तव्य देलें।

रात के गायन में गोपाल ठाकुर (नेपाल), रंजीत पांडेय (नेपाल), माइकल टी बोलेनॉक (अमेरिका), सरोज तिवारी, मृत्युंजय पांडेय, ममता ओझा, अनुपमा उपाध्याय आ नैतिक सिंह समेत दर्जनों कलाकार भाग लेलें। प्रभारी पवन बाबू के गायन से दू दिवसीय कार्यक्रम के समापन भइल।

एह आयोजन के अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आ परिचर्चा से ई साफ भइल कि भोजपुरी के पास ऊ सब कुछ बा जवन एकरा के 8वीं अनुसूची में शामिल करावे खातिर चाहीं। साथ ही उत्तर-सत्य युग में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पुनरावलोकन से ई पता चलल कि सजिशन भोजपुरी पर लगातार अश्लीलता के अछरंग लगवाल जाता।

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

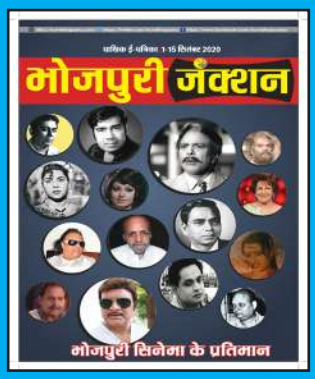
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

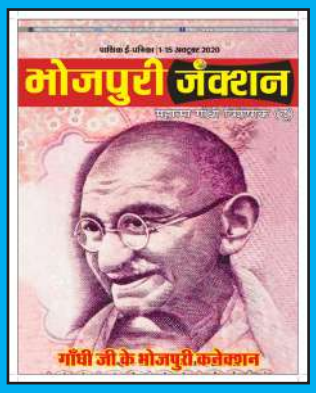
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

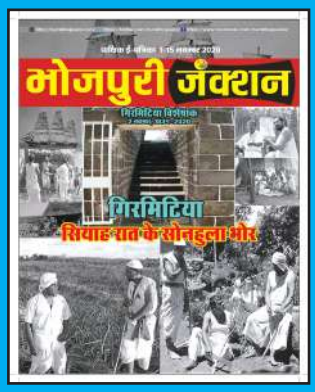
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

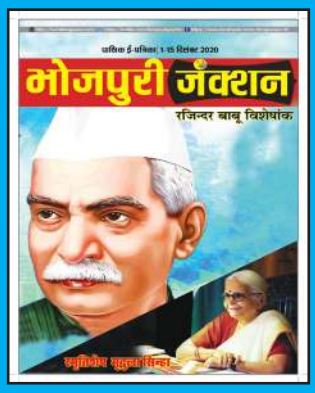
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
भोजपुरी जंक्शन
मईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

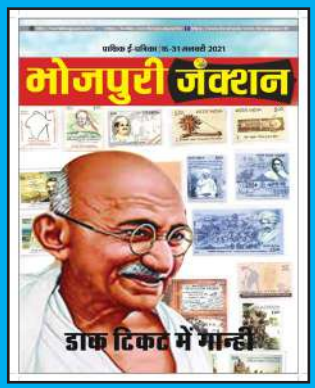
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

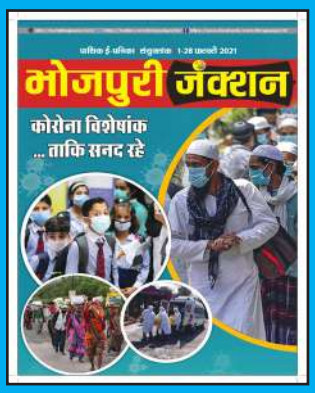
पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक 1-28 फरवरी 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 मार्च 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना कवितावली
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जँक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी?

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 मई 2021
भोजपुरी जँक्शन
कोविंग से बेसी
'सोविंग' के जरूरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-30 जून 2021
भोजपुरी जँक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जँक्शन
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक-पत्रिका | संयुक्तांक | 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जँक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code – DELBHO00811
पाक्षिक पत्रिका | 1-30 सितंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जँक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

पाक्षिक पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

पाक्षिक पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
मन के रिचार्ज करीं

पाक्षिक पत्रिका | 16-30 नवंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

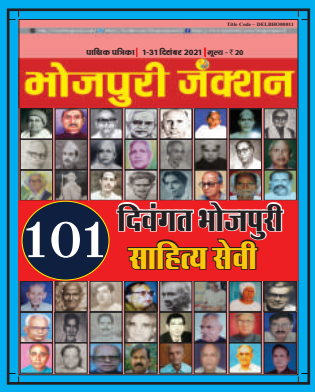
पाक्षिक पत्रिका | 1-31 दिसंबर 2021 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
101
स्वर्गीय भोजपुरी
साहित्य सेवी

पाक्षिक पत्रिका | 1-15 जनवरी 2022 | मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

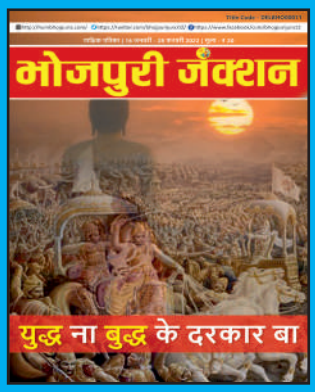
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
'कोई किसी का नहीं ये झूठे नाते हैं... 'NATO' का क्या'
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

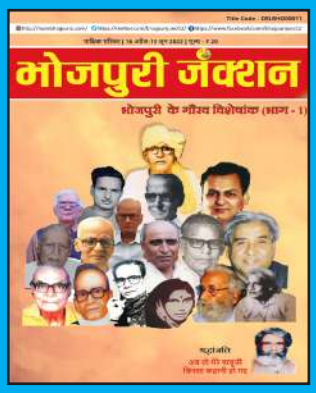
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग - 1)
कवनो
ठगवा
नगरिया
लूटल हो
- कबीर

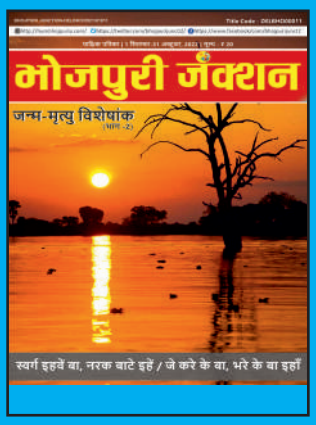
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

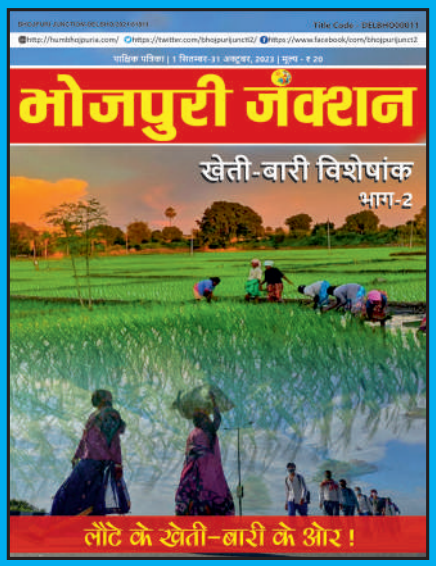
भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-2
लौटे के खेती-बारी के ओर !

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-3
छठी मइया के अर्पित खेती-बारी अंक

रुट केअर फाउंडेशन के सफल आयोजन

26 नवंबर 2023, रुट केअर फाउंडेशन स्कॉलरशिप टेस्ट के सफल आयोजन आ पारितोषिक वितरण मुख्य अतिथि बिहार विधानसभा अध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, विशिष्ट अतिथि अनुमंडल पदाधिकारी श्रीमती रोचना माद्री, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी श्री राकेश कुमार रंजन आ गोरख सिंह महाविद्यालय के प्राचार्य श्री अभय कुमार सिंह के उपस्थिति में गोरख सिंह महाविद्यालय, सिवान के प्रांगण में सम्पन्न भइल। कार्यक्रम में अनुमंडल के 50 गो सरकारी स्कूल के लगभग 3000 विद्यार्थी भाग लेलें जवना में टॉप 50 बच्चन के पुरस्कार आ सर्टिफिकेट दिहल गइल। एह अवसर पर श्री उदय नारायण सिंह, श्री रामेश्वर गोप, श्री मनन गिरी आ श्री शंभू सोनी के गायन भी भइल। स्वागत डॉक्टर सोनिया चौहान, धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर मँजेश पांडेय आ संचालन श्री मनोज भावुक कइलें।

प्रवासी एकता मंच, गुरूग्राम के आयोजन 'डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती'

3 दिसंबर, 2023, भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जयंती पर प्रवासी एकता मंच, गुरूग्राम द्वारा आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री जे पी दलाल, कृषि मंत्री, हरियाणा सरकार कइलें। एह अवसर पर ऊ प्रवासी एकता मंच के काम के बड़ाई करत पाँच लाख रूपिया के अनुदानो देवे के घोषणा कइलें।

एह बीच देशरत्न के श्रद्धांजलि देवे आ इयाद करे खातिर नेता-मंत्री, उद्योगपति, कलाकार, साहित्यकार आ ब्यूरोक्रेसी के लोग के आवाजाही जारी रहल। रात के बिजली गुल भइल, झिमिर-झिमिर बरखा भइल, तबो दर्शक देवीलाल स्टेडियम, गुड़गांव में खचाखच भरल रहलें, टस से मस ना भइलें त ऊ सिर्फ अपना चहेती गायिका-नायिका अक्षरा सिंह के देखे-सुने खातिर। मंच पर नाचे-गावे में अक्षरा के साथ देली गायिका प्रीति प्रकाश आ किरण कश्यप। स्वागत आ धन्यवाद ज्ञापन संस्था के अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह आ संचालन मनोज भावुक कइलें।

STAY HOME STAY SAFE

GOVERNMENT OF KARNATAKA

I protect you
You protect me!

A person suffering from COVID-19 may not show symptoms but can still spread the virus. Wear face masks at all times when you step outside.

#MaskForAll

#KarnatakaFightsCorona

#breakthechain

विद्यया ऽमृतमश्नुते
KNOWLEDGE IS THE ESSENCE OF THE LIFE

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
विद्यया ऽमृतमश्नुते
PERSEVERANCE EXCELLENCE INTEGRITY

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL

Affiliated to the CBSE Board | Co-Educational & fully Residential School

ADMISSIONS OPEN

2024-25

+91 9568012778 | +91 9568012776

www.indianpublicschool.com

Mrityunjaydham, Rajawala, Via Premnagar, Uttarakhand - 248007

आईं भोजपुरी जंक्शन के सोशल अड्डा पs

https://humbhojpuria.com

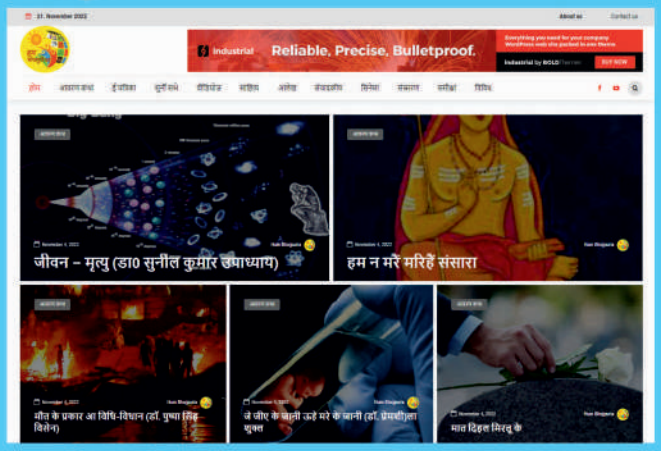

YouTube

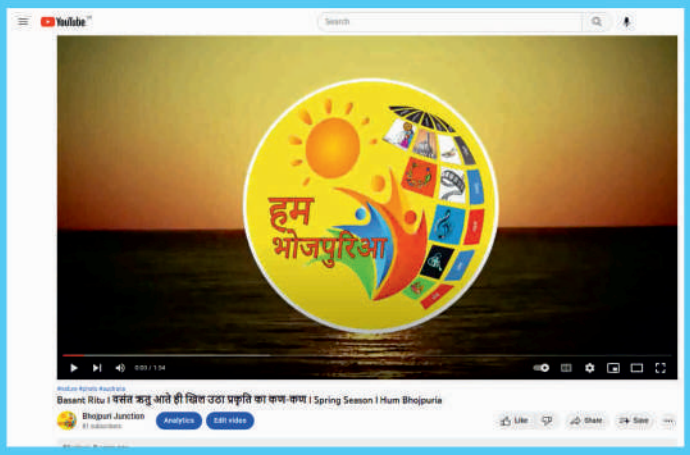

https://facebook.com/humbhojpuriaa/

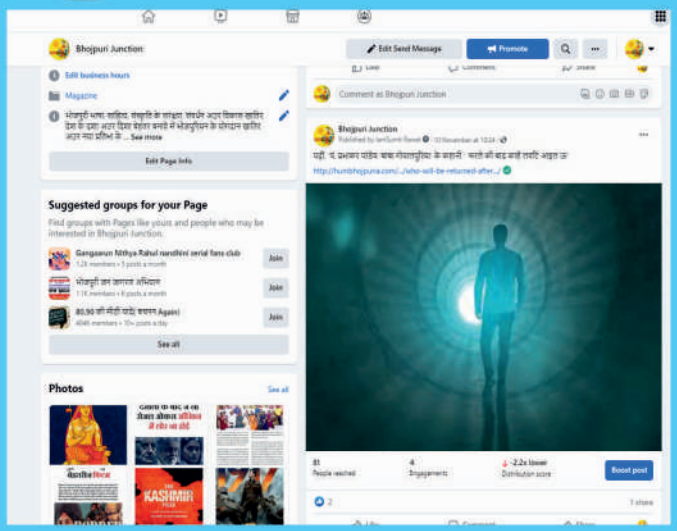

https://twitter.com/humBhojpuria

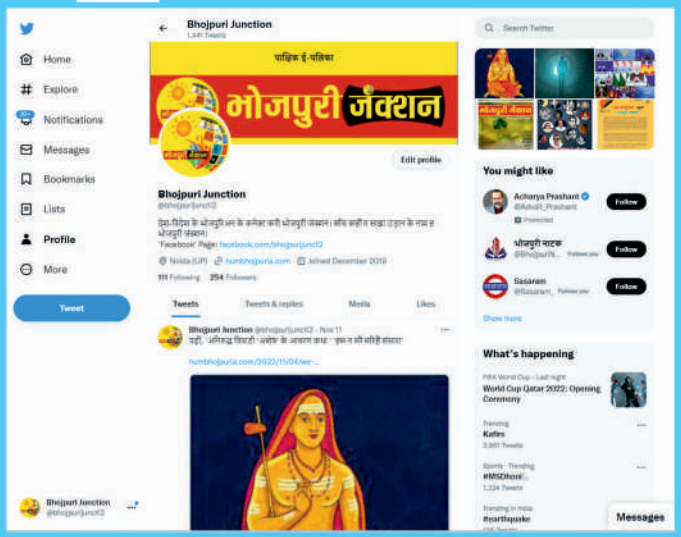

बीएचयू छात्रावास में भइल एकल काव्य-पाठ

1 दिसंबर 2023, देश-विदेश के तत्कालीन स्थिति के ध्यान में रखत शांति के संदेश विश्व भर में पहुँचे, एकरा खातिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बिड़ला (ब) छात्रावास में भोजपुरी कवि आ संपादक मनोज भावुक जी द्वारा एकल काव्य-पाठ कइल गइल। उहाँ के "अंतरराष्ट्रीय शांति" नामक कविता के खूब पसंद कइल गइल। भावुक जी मोटिवेशनल गीत-गजल के साथ अपना साहित्यिक सफर आ देश-विदेश के अपना अनुभव के भी साझा कइनी। कार्यक्रम के शुरूआत सहायक आचार्य डॉ. उमेश सिंह द्वारा मनोज भावुक जी के पुष्पगुच्छ आ अंगवस्त्र देके भइल। संचालन शोधार्थी मनोकामना शुक्ल आ धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक शोध छात्र अभिषेक सिंह द्वारा कइल गइल। एह अवसर पर प्रमुख रूप से मृत्युंजय तिवारी, वैभव तिवारी, सत्यवीर सिंह बागी, आशीष सिंह रोशन, मनी, इष्टदेव, हर्ष, शिवांश अभय आदि छात्रवास के सभ विद्यार्थी उपस्थित रहलें।

ACFL माइक्रो फाइनेंस

विकास आपका - साथ हमारा

भारतीय रिज़र्व बैंक से मान्यता प्राप्त

बिहार की पहली माइक्रोफाइनेंस

3 राज्य || 46 जिला || 87 शाखाएं || 2.5 लाख+ ग्राहक सेवित || 850 करोड़+ ऋण संवितरित

हमारी ऋण सेवाएँ

- आय वृद्धि
- स्वच्छ घर
- शिक्षा
- परिवार कल्याण
- गृह सम्मुनती

महिला सशक्तिकरण की तरफ एक प्रयास

सहेली ऐप

सभी ग्राहकों के लिए ऋण से संबंधित संपूर्ण जानकारी

ई-क्लिनिक

सभी शाखाओं पर मुफ्त परामर्श और जरुरी दवाएं उपलब्ध